धरतीकी करवट

(कविताएँ)

•

रघुपति सहाय 'फ़िराक़'

•

प्रकाशक

इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस, इलाहाबाद

प्रथम आवृत्ति] १९५३ [मूल्य २॥)

मुद्रक और प्रकाशक
जे० के० शर्मा, इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस, इलाहाबाद

ये कविताएँ

मेरी ये कविताएँ सबकी सब प्रगतिशील साहित्यके आदर्शोंसे प्रभावित और सहमत होकर रची गई हैं। प्रगतिवाद वर्तमान भारतीय साहित्यका प्राण बन चुका है। प्रगतिवाद क्या है इस समस्यापर अब भी कुछ क्षेत्रोंमें ले दे मची रहती है। यों तो प्रगतिवादकी धारणा और आत्मा बराबर विकसित होती हुई और उगती हुई वस्तु है और कई अर्थोंमें देश-कालकी माँगोंके अनुसार प्रगतिवाद बदलता रहता है फिर भी विज्ञान और समाज-शास्त्र और जीवनके अधिकसे अधिक कल्याणकारी सिद्धान्तोंके अनुसार साहित्य और कलाकी ऐसी रचना करना जिससे संस्कृति और जीवन-दोनोंकी माँगें पूरी होती हों—यही प्रगतिवाद है। आज संसार भरके लिए साम्राज्यवादी शक्तियाँ प्रगतिवादकी सबसे बड़ी दुश्मन हैं। आये दिनके शासनमें इन शक्तियोंका अत्याचार मानव-जातिकी उन्नति असम्भव बना रहा है। संसार भरकी जनता आर्थिक, मानसिक, सामाजिक और राजनैतिक गुलामीसे मुक्त होनेके लिए तैयार हो रही है इसलिए साम्राज्यवाद इस सृष्टिके इतिहासमें सबसे भयंकर और विनाशकारी तीसरे युद्धकी तैयारी कर रहा है। साम्राज्यवादका दमन और अत्याचार उन अनेक भोले-भाले कलाप्रेमियोंके अपने ढंगसे सौन्दर्य उपासनाको भी असम्भव बना रहा है जिन्हें प्रगतिवादकी हवा भी नहीं लगी। बच्चोंके जीवनसे लेकर बूढ़ोंके जीवन तकको साम्राज्यवाद नरक बना देना चाहता है। साम्राज्य-वादके आये दिनके दुःशासन और उसके कलुषित हाथोंसे जो तीसरी जंगकी तैयारी हो रही है उसके खिलाफ़ मानवी चेतनाको जगाना और इस युगमें एक ऐसे रचे हुए और फलते-फूलते उन्नतिशील और कल्याणकारी जीवनके महत्वपूर्ण पहलुओंका ज्ञान देना प्रगितवादका मुख्य दायित्व

हैं। इसी आदर्शको भारतके प्राचीन आचार्य और हमारे ऋषि-मुनि लोक-संग्रह बताते हैं। लोक-संग्रह कला, साहित्य और संस्कृतिका सबसे उच्च और सबसे अधिक कल्याणकारी ध्येय और उद्देश्य है।

इस प्रसंगमें एक भ्रमको दूर करना आवश्यक है। अत्याचारपूर्ण या दूषित सामाजिक और राजनैतिक प्रथा और इस तरहकी अनेक समस्याओं-में पड़ना कुछ लोगोंके नजदीक कलाकारको शोभा नहीं देता। ये लोग कहते हैं कि कलाकारको इन झगड़ोंके स्तरसे ऊपर उठकर सौन्दर्योपासना करनी चाहिए। सौन्दर्योपासनाका कितना प्रबल और निर्णयकारी प्रभाव सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक और हमारे समस्त सांसारिक जीवन पर पड़ता है इसे ये लोग सोचते ही नहीं। जो सांसारिक जीवनकी समस्याओंमें पड़ा वह इनके अनुसार कलाकार हो ही नहीं सकता और जो कलाकार है वह इन समस्याओंमें पड़ ही नहीं सकता। सांसारिक जीवनका कलासे बड़ा गहरा और सजीव सम्बन्ध है। स्वस्थ कला सृष्टिको, सांसारिक जीवनको, व्यक्तिगत और सामूहिक जीवनकी समस्याओं और सिद्धान्तोंको इस तरह समझनेमें सहायक होती है कि हमें संसार और जीवनका ज्ञान और उनसे प्रेम करना आ जाय और मानवजातिके जीवनकी वे सम्भावनाएँ हमपर प्रकट हो जायँ जिन्हें हम अपने पुरुषार्थसे पूरा करके दिखा सकते हैं। कर्मकी शक्तियोंको ऐसे ज्ञानसे प्रज्वलित करना, जिसमें रोशनी और गर्मी दोनों हों, कलाका सबसे महत्वपूर्ण आदर्श है। किसी कल्पित सौन्दर्यकी उपासना कला नहीं करती। इसी जीवन, इसी संसारके नित्य उजागर होते हुए सौन्दर्यकी उपासना कलाकार करता है ताकि जीवनके सौन्दर्यको उजागर होनेमें साहित्य और कला जीवनकी सहायता करें। जब लोकमान्य तिलकने और महात्मा गांधीने गीता ऐसे महान ग्रन्थको राजनैतिक उत्थानका साधन बताया तो साहित्यकार यह कैसे कह सकता है कि सांसारिक जीवनकी समस्याओंमें पड़ना हमें शोभा नहीं देता। संसारमें जितना महान साहित्य रचा गया है वह

सांसारिक जीवनकी ही समस्याओं और प्रेरणाओंमें कल्पना और कला द्वारा दिव्यप्रतिभा उत्पन्न करनेके लिए ही रचा गया है। अपने-अपने समयकी भौतिक और सांसारिक समस्याओंमें डूब गये थे—वाल्मीकि कालिदास, भवभूति, भर्तृहरि, कबीर, तुलसी, टैगोर, बंकिम, शरद, प्रेमचन्द और उन्हींमें डूब जाना चाहते हैं इस युगके भी प्रगतिशील लेखक और कलाकार।

रही बात कलात्मक साहित्यकी। तो क्या रामायण, वैदिकधर्म, प्रकृति सौन्दर्य, रूप और प्रेमसे सम्बन्ध रखनेवाले विषयोंपर अकलात्मक या भोंडी नौटंकियाँ और छन्द नहीं लिखे गये? क्या कामायनी या श्री मैथिलीशरण गुप्तकी अनेक रचनाएँ आजकलकी सांसारिक समस्याओंके विषयोंको हाथ न लगानेसे और केवल उन विषयोंको हाथ लगानेसे जिन्हें प्रगतिवादके विरोधी कला और साहित्यके विषय मानते हैं अनेक स्थलोंपर असफल और सपाट होकर नहीं रह गई? और क्या प्रेमचन्द अपनी अनेक रचनाओंमें इसी मटियाले जीवन, इसी गर्दमें अटी हुई ज़िन्दगी, आर्थिक और राजनैतिक समस्याओंका विषय लेकर सफल नहीं हो सके? क्या राधा और कृष्णकी प्रेम कहानी महान साहित्यकी रचना करा सकती है और महात्मा गांधीका जीवन, रूस और चीनकी क्रान्तियाँ, किसानों और मज़दूरोंका जीवन महान साहित्यकी रचना नहीं करा सकता? साहित्य-रचनामें असफल होना और सफल होना इसपर नहीं निर्भर है कि लेखकका विषय अध्यात्मवाद है, प्रकृति सौन्दर्य है, रूप-प्रेमकी रास-लीला है या स्टालिनका जीवन है, रूस और चीनकी क्रान्ति है, या फटे-हाल किसानों और मजदूरोंकी रामकहानी है।

प्रगतिवादने साहित्यकारोंके लिए न क्षेत्र सीमित किये, न रास्ते बन्द किये और न विचारोंको वर्दियाँ पहनाई। आजके प्रगतिवादी कलाकारके क़लमकी नोकपर विषयों और सौन्दर्यकी झलकियोंकी वर्षा होती है—

कहता है मेरा ख़ामा[१] कि किस-किसको मैं बाँधूँ
बादलसे चले आते हैं मज़मूँ[२] मेरे आगे

आजके प्रगतिशील लेखकके चारों ओर शीर्षकों और विषयोंके अपार संसारके अनगिनत द्वार खुल गये हैं। प्राचीन साहित्य और कला, नवीन साहित्य और कला और उसकी निजी या व्यक्तिगत मौलिकता या कल्पनाकी उपजके ख़ज़ानोंसे उसका दामन मालामाल है। सुन्दर और सफल शैलियोंकी रंगारंगीकी जैसी मिसालें सफल प्रगतिशील साहित्यमें आज मिलती हैं उन्हें देखकर आँखें खुल जाती हैं।

एक दूसरे भ्रमको भी दूर कर देना ज़रूरी है। लोग कह बैठते हैं कि जिन समस्याओंपर प्रगतिशील लेखक साहित्य रचनामें एड़ी-चोटीका ज़ोर लगा देते हैं जब वे समस्याएँ हल हो जायँगी, जब संसारकी परिस्थिति बदल जायगी तो उस समय ऐसे साहित्यमें कौनसी दिलकशी या आकर्षण रह जायगा। उस समय ऐसा साहित्य बासी और पुराने समाचार पत्रोंकीसी एक चीज़ बनकर रह जायगा। लेकिन क्या आजकी सब महत्वपूर्ण समस्याएँ वही हैं जो जलप्लावनके बाद मनुके सामने थीं या जो राम, अर्जुन, भीष्म, विक्रमादित्य, सूर, तुलसी, मीराके सामने थीं? अगर नहीं तो फिर प्राचीन साहित्य क्यों नहीं मर गया? क्या वह साहित्य बासी अख़बार बनकर रह गया है? क्या किसानोंकी समस्या हल हो जानेपर प्रेमचन्द-का 'होरी' एक मृतक पात्र बन जायगा? क्या नवाबी सभ्यताके मिट जानेपर रतननाथ सरशारका 'खोजी', मिर्ज़ा रुसवाकी 'उमराव जान अदा' और इम्तयाज़अली 'ताज'की 'अनारकली' मृतक पात्र और पात्रियाँ बन गये? आज बन्दर और भालू न ईश्वरके भक्त हैं और न दस मुँहवाला कोई रावण है तो क्या हनुमान, जामवन्त और रावणके चरित्र-चित्रण अपना सब आकर्षण खो बैठे? कलाका जादू हुई इसीमें कि सामयिक

---

[१]ख़ामा=क़लम [२]विषय

समस्याओंको या सामयिक जीवनको शाश्वत बनाकर दिखा दे। उर्दूका एक नौजवान प्रगतिशील कवि 'मजरूह' कहता है :—

दहरमें[1] 'मजरूह' कोई जाविदां[2] मजमूँ कहाँ
मैं जिसे छूता गया वह जाविदाँ होता गया

सामयिकको कल्पनाकी तपस्या कलात्मक बनाकर अमर जीवन दे देती है। इसीसे प्राचीन साहित्य बासी समाचारपत्र नहीं बन गया।

मेरी इन कविताओंमें भाषा और शैली ऐसी मिलेगी कि इन्हें समझनेमें किसीको शायद ही कहीं-कहीं थोड़ीसी कठिनाई पड़े। खड़ी बोली दिल्लीके जनसाधारणकी भाषा है और यह भाषा जटिल और भारी-भारी शब्दोंसे बोझल नहीं होती। मैंने इन कविताओंकी भाषा और शैलीको इसी बोल चालके साँचेमें ढालनेका प्रयत्न किया है। प्रगतिवादने उर्दू कविताकी शब्दावली, भाषा और शैलीमें बुनियादी तौरपर बहुत बड़े सुधारका काम किया है। यों तो आदि काल हीसे अधिकांश उर्दू लेखकोंका प्रयत्न यही रहा है कि वे उर्दू काव्य साहित्यको जनसाधारणकी सजीव बोलीका सबसे सुन्दर नमूना बनाकर दिखा दें। लेकिन प्रगतिवादने इस प्रेरणाको और प्रबल कर दिया। संसार भरकी उच्चसे उच्च कविताकी भाषा और शब्दावली प्रायः अनपढ़ जनसाधारणकी भाषासे ही बनी है। कुछ हिन्दी प्रेमी इस भ्रमके शिकार हैं कि पांडित्यपूर्ण शब्दोंके बिना कवितामें सजावट नहीं आ सकती; उसकी शैलीमें चमत्कार या बलन्दी नहीं पैदा हो सकती। इस भ्रमका मूल कारण यह है कि हिन्दी-प्रेमी अधिकतर दिल्लीसे दूर हमारे प्रान्तके पूर्वी हिस्सोंके रहनेवाले हैं जहाँकी बोली खड़ी बोली नहीं है। सहज खड़ी बोलीपर इन हिन्दी-प्रेमियोंका आधिपत्य अनिश्चित और डाँवाँडोल है। इसीसे ये लोग रटे हुए प्रायः ऐसे संस्कृत शब्दोंका सहारा लेते हैं जो हमारी बोलीमें और

---

[1]संसार [2]शाश्वत

इसलिए हमारे साहित्यमें भी स्वाभाविक रूपसे खपते नहीं। इनकी हिन्दीका वह हिस्सा जो तत्सम है प्रायः अनुपयुक्त होता है और जो तत्भव है वह उलझा हुआ और भोंडा होता है। उर्दू कवि खड़ी बोलीका लाखों अवसरोंपर गद्य और पद्यमें ऐसा ही बेलाग और स्वाभाविक प्रयोग कर जाते हैं जैसे व्रजका प्रयोग सूर और रहीम कर जाते हैं। यों तो मेरी इन कविताओंमें अरबी, फ़ारसी शब्द बहुत कम आये हैं और ठेठ हिन्दी शब्द, मुहावरे और टुकड़े बहुत अधिक आये हैं लेकिन ऐसा लिखना सीखा मैंने उर्दू ही साहित्यका अध्ययन करके। अब इससे आप भाषा और शैलीके सम्बन्धमें जो नतीजे निकालना चाहें निकाल सकते हैं।

प्रयाग
१. ५. ५३

रघुपति सहाय 'फ़िराक'

ये कवितायें कैसे पढ़ी जाँय ?

जब इनमेंसे कोई कविता पढ़ना शुरू करें तो उसके छन्दके ताल-सम एव झनकार और छन्दकी लयको पकड़िये। इसका ध्यान रखिये कि छन्दकी मात्राओं और छन्दके खटकोंके अनुसार निम्नलिखित मात्रायें कभी बढ़ाकर (दीर्घ स्वरसे) कभी घटाकर (लघु या ह्रस्व स्वरसे) पढ़ना ज़रूरी है :—

आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ,

जहाँ इन्हें छोटा करके पढ़ना छन्दके अनुसार आवश्यक है वहाँ इनकी अलगसे मात्रा गिनी नहीं जाती जैसे—'दोहरा' में 'ओ' की मात्रा गिनी नहीं जाती यानी यह शब्द पाँच मात्राओंका नहीं बल्कि चार मात्राओंका माना जाता है। 'द' के उच्चारणमें ही 'ओ' का उच्चारण मिला दिया जाता है। ऐसा ही 'तेहरा' के उच्चारणमें भी करना पड़ता है। मिसालके तौरपर उर्दूकी निम्नलिखित पंक्तियोंको देखिये :—

न कुछ हम हँसके सीखे हैं न कुछ हम रोके सीखे हैं
जो कुछ थोड़ा-सा सीखे हैं किसीके होके सीखे हैं

पहली पंक्तिमें दो वार 'के' शब्द आया है और दोनों स्थानोंपर यह शब्द एक मात्राका है यानी 'ए' की मात्राको ह्रस्व करके पढ़ना चाहिये। दूसरी पंक्तिमें 'सा' में 'आ' की मात्रा ह्रस्व है और 'थोड़ा-सा' बराबर है 'थोड़ा-स'के। लेकिन पहली और दूसरी दोनों पंक्तियोंमें 'सीखे' में 'ए' की मात्रा दीर्घ है और दूसरी पंक्तिमें 'होके' में 'के' की मात्रा ह्रस्व है।

तुम्हारी तहज़ीब अपने हाथोंसे आप ही ख़ुदकुशी करेगी
जो शाख़े-नाज़ुक पै आशियाना बनेगा नापायदार होगा

पहली पंक्तिमें 'तुम्हारी' की 'ई' ह्रस्व, 'अपने' में 'ए' ह्रस्व, 'से' में

'ए' ह्रस्व, 'ख़ुदकुशी' और 'करेगी' में 'ई' और 'ए' दीर्घ। दूसरी पंक्तिमें 'जो' में 'ओ' ह्रस्व, 'शाखे' में 'ए' ह्रस्व, 'पै' में 'ऐ' ह्रस्व, 'बनेगा' में 'आ' ह्रस्व, 'ए' दीर्घ, बाक़ी शब्दोंमें हर स्वर दीर्घ।

'औ' की मात्रा कहाँ दीर्घ और कहाँ ह्रस्व करके पढ़नी चाहिये? ग़ालिबके इस मिसरेके :—

क्या खूब क़यामतका है गोया कोई दिन और

'और' शब्दमें 'औ' की मात्रा दीर्घ है लेकिन ग़ालिबके इस शेरके :—

तू और आराइशे-ख़मे-काकुल
मैं और अन्देशहाय दूर-ओ-दराज़

दोनों मिसरोंके 'और' शब्दमें 'औ' को ह्रस्व करके पढ़ना पड़ेगा। यहाँ और दो मात्राका शब्द हो जाता है और 'आ' या 'का' के बराबर हो जाता है। 'ऊ' की मात्रा दीर्घ है लेकिन ग़ालिबके इस मिसरेके :—

मैं हूं और अफ़सुर्दगीकी आरज़ू ग़ालिब कि दिल

'और' में 'औ' की मात्रा ह्रस्व है और 'हूँ' में 'ऊ' की मात्रा ह्रस्व है जिसे 'हुँ' पढ़ना चाहिये। 'ऐ' की मात्रा :—

कन्या अब कामिनी है होने वाली
आँखोंको नयन बनाने वाले दिन हैं

पहली पंक्तिमें 'है' में 'ऐ' की मात्रा ह्रस्व है दूसरी पंक्तिमें 'हैं' में दीर्घ है। 'बनाने' में 'ए' की मात्रा ह्रस्व है 'वाले' में दीर्घ। 'दिन हैं' में 'ऐ' की मात्रा दीर्घ है।

'यह' और 'वह' के शब्द जब उर्दू कवितामें आते हैं तो प्रायः 'ह' का उच्चारण नहीं किया जाता और ये शब्द बोले जाते हैं—'ये' और 'वो'। 'ये' में 'ए' की मात्रा कभी ह्रस्व होती है कभी दीर्घ, और 'वो' में भी 'ओ' की मात्रा कभी ह्रस्व कभी दीर्घ।

जैसे तुलसीदासके निम्नलिखित चौपाइयोंमें :—

तुम पितु सरिस भले मोहिं मारा

या

कारन कौन नाथ मोहिं मारा

या

खलके बचन सन्त सहें जैसे

या मीराके यहाँ :—

अब तो बात फैल गई जानत सब कोई

या फिर तुलसीदासके यहाँ :—

होइहैं सत्य गये दिन चारी

'ओ'की मात्रा और 'ए'की मात्रा ह्रस्व करके पढ़ना पड़ता है अर्थात् 'मोहिं'में, 'तो'में, 'होइहैं'में 'ओ'की मात्रा ह्रस्व है और 'सहें'में 'ए'की मात्रा ह्रस्व है। जब मेरी ये कविताएँ आप पढ़ें तो छन्दके अनुसार दीर्घ मात्राओंको अगर ह्रस्व करके पढ़ना पड़े तो उन्हें ह्रस्व करके ही पढ़ें। जैसे—चीनकी क्रान्तिपर मेरी ये पंक्तियाँ :—

मँडलाई कई करोड़ हाथोंकी घटा
गुलज़ार कई करोड़ चेहरोंका खिला
जल उट्ठे कई करोड़ सीनोंमें चराग़
परदा सा कई करोड़ आँखोंसे उठा

पहली पक्तिमें "मँडलाई"की 'ई', दूसरी पंक्तिमें 'चेहरों'का 'ए', 'का'का 'आ', तीसरी पंक्तिमें 'उट्ठे' का 'ए' और 'में'का 'ए' और अन्तिम पंक्तिमें 'सा'का 'आ' और 'से'का 'ए' इन सबको ह्रस्व पढ़ना चाहिए। 'वह' और

'यह' दो शब्द ऐसे हैं कि उर्दूमें इन शब्दोंमें 'ह'का उच्चारण खुलकर प्रायः नहीं किया जाता। इन्हें 'वो' और 'ये' करके पढ़ा जाता है। 'ये'में 'ए'-की मात्रा और 'वो'में 'ओ'की मात्रा कभी ह्रस्व करके और कभी दीर्घ करके पढ़ी जाती हैं जैसे उपर्युक्त चीनकी कविता हीमें :—

वह चीन, वह अम्ने एशियाका ज़ामिन

पहले अवसरपर आप चाहें तो वहमें 'ह' खुलकर उच्चारण करें या इसे वो पढ़कर 'ओ'की मात्राका पूरा उच्चारण करें। लेकिन दूसरे स्थलपर वहमें 'ओ'की मात्रा ह्रस्व करके पढ़नी पड़ेगी। ऐसा किसी ज़बरदस्ती या कृत्रिमताके कारण नहीं है बल्कि बोल चालमें 'वह' और 'यह'को प्रायः इस तरह बोला जाता है कि 'ह'का अक्षर या 'ह'की आवाज़ 'वो' या 'ये' करके पढ़े जायँ जिसमें 'ओ' और 'ए'की मात्रा कभी दीर्घ और कभी ह्रस्व होती है। हिन्दीमें अनेक शब्द ऐसे हैं जैसे 'तोड़'में 'ओ' दीर्घ है लेकिन 'दोहरा'में ओ ह्रस्व है, 'पेड़'में 'ए' दीर्घ है और 'तेहरा' या 'केवाड़' या 'खेलवाड़'में 'ए'की मात्राएँ ह्रस्व हैं। 'तेरी' और 'मेरी'के शब्दोंमें भी 'ए'की मात्रा कभी ह्रस्व और कभी दीर्घ करके पढ़ी जाती है।

हिन्दीके जितने छन्द हैं उन सबमें उर्दू शायरी हो सकती है और एकाध छन्द छोड़कर सबमें सुन्दरसे सुन्दर उर्दू शायरी हो चुकी है। इन छन्दोंके अतिरिक्त उर्दूमें अनेक ऐसे छन्दोंका भी प्रयोग किया गया है जिनमें खड़ी बोली बहुत सुगम और स्वाभाविक रूपसे ढल गई है। हिन्दी कवि यदि इन छन्दोंकी ओर ध्यान दें तो हिन्दी और उर्दू एक दूसरेके बहुत निकट आ जायँगी।

आजकल प्रयोगवादकी एक फुलझड़ी हिन्दी कवितामें कुछ लोगोंने छोड़ रखी है। इन लोगोंने प्रयोगवादकी जैसी मिसालें पेश की हैं उसे मैं "झखमारवाद" कहता हूँ।

अत्फ़ और इज़ाफ़त

हमारी बोलीमें अधिकसे अधिक शब्द तद्भव और देशज हैं। इन शब्दोंके बाद जो शब्द सबसे अधिक हमारी बोलीमें घुल-मिल गये हैं वे फ़ारसीके शब्द हैं। फ़ारसी भी आर्यभाषा है और फ़ारसीके शब्द भी तत्सम् संस्कृत शब्दोंके तद्भव रूप हैं। फ़ारसीके बाद हमारी बोलीमें लगभग एक हज़ार सरल और सुगम अरबी शब्द घुल-मिल गये हैं। तत्सम् संस्कृत शब्द हमारी बोलीमें सबसे कम हैं। उर्दूमें फ़ारसी-अरबी शब्द अधिकतर फुटकर रूपमें आते हैं। कुछ शब्दोंके जोड़े होते हैं। संस्कृत और हिन्दीमें ये जोड़े शब्द बिना किसी संयोजकके, समासके रूपमें आते हैं जैसे:—धन-धान्य, मान-मर्यादा। यहाँ तक कि जब एक शब्द संस्कृत या हिन्दीका हो और दूसरा फ़ारसी या अरबीका हो तब भी ये शब्द बिना किसी संयोजकके साथ-साथ आते हैं जैसे:—धन-दौलत, इज्ज़त-पानी, रंग-रूप, खेल-तमाशा, बाल-बच्चे, शादी-ब्याह। लेकिन जब जोड़े शब्दोंमें या समासके रूपमें साथ लाये जानेवाले दोनों शब्द फ़ारसी या अरबीके हों तो 'ओ' का संयोजक बीचमें लाया जाता है 'ओ' का अर्थ है 'और'। हम गंगा-जमुना कहते हैं, लेकिन फ़ारसीमें इसे 'गंग-ओ-जमन' कहते हैं, हम 'आग-पानी' कहते हैं, फ़ारसीमें इसे 'आतिश-ओ-आब' कहते हैं, इस 'ओ' के संयोजकको 'अत्फ़' कहते हैं यानी संज्ञाओंको मिलानेवाला। इन कविताओंमें अनेक स्थानोंपर 'अत्फ़' का प्रयोग किया गया है। 'अत्फ़'-का 'ओ' कभी ह्रस्व और कभी दीर्घ करके पढ़ा जाता है यह बात छन्दपर निर्भर है।

यों तो समास आठ तरहके होते हैं और इन सबमें जो विभक्तियाँ छिपी हुई हैं वह आठ तरहकी होती हैं। समासके स्थानपर उर्दू कवि अक्सर 'इज़ाफ़त' का प्रयोग करते हैं जिसका सूचक 'ए' का अक्षर है जो कभी ह्रस्व और कभी दीर्घ करके पढ़ा जाता है। इज़ाफ़तमें शब्दक्रम

बदल जाता है जैसे हृदय-पीड़ाको दर्दे-दिल कहेंगे, प्रेमीके हृदय-पीड़ाको दर्दे-दिले-आशिक़ कहेंगे। हिन्दीमें इज़ाफ़तोंके अर्थ करनेका सीधा ढंग यह है कि पहले अन्तिम शब्दका अर्थ किया जाय और उसके बाद 'का' या 'के' लगाकर पहले आनेवाले शब्दका अर्थ किया जाय। इस तरह दर्दे-दिले-आशिक़का अर्थ हुआ आशिक़के दिलका दर्द । ग़ालिबके इस शेरकी पहली पंक्तिमें इज़ाफ़त और अत्फ़ दोनोंकी मिसालें साथ ही मिल जायँगी :—

क़ैदे-हयात-ओ-बन्दे-ग़म, अस्लमें दोनों एक हैं
मौतसे पहले आदमी ग़मसे निजात पाये क्यों

"अर्थात् जीवनका बन्धन और ग़मका बन्धन वास्तवमें दोनों एक हैं इसलिए मौतसे पहले आदमीको ग़मसे मुक्ति या छुटकारा कैसे मिले।" पहली पंक्तिमें "क़ैदे और बन्दे" में 'ए' की मात्राएँ इज़ाफ़त हैं और दोनोंको ह्रस्व पढ़ना चाहिये। 'ओ' का शब्द 'अत्फ़' है जिसका अर्थ है और। अत्फ़को व करके न कभी लिखना चाहिये न कभी पढ़ना चाहिये। उपरोक्त पंक्तिमें 'ओ' को भी ह्रस्व पढ़ना चाहिये। लेकिन छन्दके अनुसार इज़ाफ़त में 'ए' की मात्रा और अत्फ़में 'ओ' की मात्रा दीर्घ करके भी पढ़ी जा सकती है।

विषय-सूची

धरतीकी करवट

कविता बड़े साधारण स्वरमें आरम्भ होती है। जहाँ तक जनसाधारण और भोले-भाले उन किसानोंकी भावनाओंको प्रकट किया गया है वहाँ तक कविता प्रायः अतुकान्त है। भाषा, शैली, कल्पना और वाक्यके स्तर भी अनपढ़ जनताकी साधारण चेतनाके निकट हैं। कविताका आरम्भिक हिस्सा गद्यात्मक अधिक है और पद्यात्मक कम। जहाँसे मज़दूरों या कामगारोंकी बात आरम्भ होती है कविता वहाँसे तुकान्त हो गई है और कल्पनाका स्तर भी ऊपर उठ जाता है। मानव-सभ्यताके निर्माणमें मज़दूरों या कारीगरोंका कितना महत्वपूर्ण स्थान है, क़लमके सूरमा इस ओर बहुत कम ध्यान देते रहे हैं। कविताके इस हिस्सेमें इस भ्रमको दूर किया गया है। आगे चलकर जब मशीन युग संसारमें स्थापित होता है वहाँ मशीनके महत्व और सभ्यताके निर्माणमें मशीनकी प्रधानताका वर्णन आया है। और आगे चलकर पूँजीवादी शक्तियों और साम्यवादी शक्तियोंके संघर्षका चित्रण किया गया है। अन्तमें उस विश्वव्यापी नूतन जागृतिकी झलक दिखाई गई है जो इस युगका सबसे महत्वपूर्ण लक्षण है। इतने जटिल और कठिन विषयपर सरलतम भाषाको कलात्मक बनानेका, उर्दू और आधुनिक हिन्दीमें काव्य रचने और सरल भाषाको उच्च साहित्यिक स्तरपर ले जानेका यह पहला प्रयास है। पाठकोंको गम्भीरताके साथ इस कविताको पढ़ते हुए इस समस्यापर विचार करना चाहिए कि मज़दूरोंके उस जीवनको जिसे साहित्य, कला और कवितासे वंचित समझते हैं और जिसे खुरदरा, नीरस और शुष्क समझते हैं, उच्चसे उच्च काव्यका विषय बनानेमें कवि कहाँ तक सफल हुआ है। कवि इस कवितामें पत्थरको पारस कर सका है या नहीं। जहाँ तक भाषाका सम्बन्ध है मातृभाषा या राष्ट्रभाषाको सफल बनानेमें कवि कहाँ तक सफल हुआ है इसका फ़ैसला कवि नहीं इस कविताके पाठक करें।

धरतीकी करवट

सूरज चाँद अँगड़ाई लेंगे
तारे अपनी गति बदलेंगे
परबत, सागर लहरायेंगे
जब यह धरती करवट लेगी

हल, कुदाल, फावड़े, बसूले
उठे हथौड़े बोल उठेंगे
नया जनम है आजादीका
देशके राजा, देश निवासी

परजा ही है देशका राजा
घरकी चटाई राज सिंघासन
सबकी टोपी राज मुकुट है
फूसका घर भी राजमहल है

जनम जनमका पाप कटेगा
अब तक किसका राज रहा है ?
राजे, बाबू, सेठ, महाजन
जमींदार, दीवान, दरोग़ा

पंडित, ठाकुर, शेख़ और सैयद
साहब, मिस्टर, हाकिम, अफ़सर
सोना वाले, चाँदीवाले
आढ़तवाले, मंडीवाले

कोट, महल और कोठीवाले
गद्दीवाले, कुर्सीवाले
मसनदवाले, फ़र्शीवाले
परमिटवाले, लाइसेंसवाले

घस्सेवाले ठस्सेवाले
पट्टेवाले, सट्टेवाले
इनके चट्टे बट्टेवाले
अब तक इनका राज रहा है

देशपर अत्याचार रहा है
अब यह धरती करवट लेगी
अब यह दुनिया पलटा लेगी
भारतकी काया पलटेगी

सबकी क़िस्मत चमक जायेगी
कारीगर, मजदूर, किसान
भारतके बेचैन जवान
दबे दबे बेनाम-ओ-निशान

उभरेंगे बेशान-ओ-गुमान
मान न मान तेरा मेहमान
हमको जान हमें पहिचान
यही सँभालेंगे सब काम

राज पाटके मालिक होंगे
राजके करता धरता होंगे
सतजुगसे भी बढ़कर होगा
राम राजसे बढ़कर होगा

हर एक जुगसे बढ़कर होगा
ब्राह्मण राजसे बढ़कर होगा
क्षत्री राजसे बढ़कर होगा
वैश्य राजसे बढ़कर होगा

हिन्दू राजसे बढ़कर होगा
बौद्ध राजसे बढ़कर होगा
मुसलिम राजसे बढ़कर होगा
मेहनत करनेवालोंका राज

खेती करनेवालोंका राज
माल बनानेवालोंका राज
धन उपजानेवालोंका राज
हुन बरसानेवालोंका राज

इस ऊसर बंजर धरतीको
इस जलती तपती परतीको
स्वर्ग बनानेवालोंका राज

[किसानोंकी पुकार]

नये नियमसे नये रूपसे
नये रंगसे नये ढंगसे
खेती होगी

खेत और खलिहानका रोना
बीज, खाद, पानीका रोना
गायकी हाय, बैलका रोना
घास, खली भूसेका रोना

ज़मींदारकी मारका रोना
गाली और फटकारका रोना
धर-पकड़ और बेगारका रोना
क़र्ज़ें और ब्याजका रोना

बनिये और बज़ाज़का रोना
इज्ज़त और लाजका रोना
पटवारीकी चालका रोना
दंड, राजपड़तालका रोना

साथी, लाल, बालका रोना
आये दिनके कालका रोना
हर चीज़ और हर बातका रोना
जुग जुगसे दिन रातका रोना

नहीं रहेगा नहीं रहेगा
दिन बदलेगा पाप कटेगा
साथी सब सन्ताप कटेगा
अन खलिहानसे घरमें आये

इसकी नौबत कब आती थी
अब तक छाती फाड़ परिश्रम
करके जो कुछ फ़सल उगाई
वह गाढ़ी भरपूर कमाई

दो दिन अपने काम न आई
ऊपर ऊपर उड़ जाती थी
रह जाते भूखेके भूखे
रह जाते नंगेके नंगे

रह जाते क़र्ज़ेमें डूबे
जीवन कटता ब्याज चुकाते
लेकिन अब कुछ होनेको है
खेती, बाड़ी, बाग़ और जंगल

दूध, दही, घी, नाज और फल
गाँवमें जो दौलत उपजेगी
वह सबकी सब अपनी होगी
अब यह दुर्व्यवहार मिटेगा

अब यह अत्याचार मिटेगा
चालाकीमें धौंस धाँसमें
दल्लालोंकी फोड़ फाँसमें
फुसलानेमें बहकानेमें

डरवानेमें धमकानेमें
लुट्टस पिट्टसकी हलचलमें
धन्ना सेठके छल, बल, कलमें
चतुर किसान नहीं आयेगा

वह अपना हिस्सा, अपना हक़
लेके रहेगा लेके रहेगा
जीके रहेगा मरके रहेगा
लेकिन अब कुछ करके रहेगा

हर बीघामें, हर एकड़में
पैदावार अठगुनी होगी
भूख मिटेगी और घर घरमें
अन्नपूरणा बास करेगी

[शिक्षामें गोलमाल]

जात पातका भेद मिटेगा
ऊँच नीचका भेद मिटेगा
हिन्दू मुसलिम भेद मिटेगा
ब्राह्मण शुद्र बराबर होंगे

औरत मर्द बराबर होंगे
छोटे बड़े बराबर होंगे
बल, विद्या, धन, मान और पद
ओहदा, कुर्सी, इज्जत, शोहरत

ज्ञान माल, धन और हकूमत
बड़ी बड़ी जागीर, रियासत
पढ़ना, लिखना, सनद, लियाक़त
बैठकबाजोंकी थी दौलत

पाकर क़िस्मतके पत्तोंके
चौवे, पंजे, सत्ते, अट्ठे
क्या ख़ुश थे उल्लूके पट्ठे
लगे हैं जब धक्केपर धक्के

छुटे तिड़ीबाजोंके छक्के
सब जगहें यों ले बैठे थे
सब कुछ यों हथिया बैठे थे
यों दुनियापर छाये हुए थे

जैसे उनकी हो यह बपौती
अब देता है समय चुनौती
कारीगर, मजदूर किसान
इनकी बदनसीब सन्तान

पढ़ने लिखनेका हक़ इनसे
छल बल कलसे छीन लिया था
एक धोखा फैला रक्खा था
"नीचो" जात पाँतवालोंके

बच्चोंको मनुष्य कब जाना
पढ़ने लिखनेकी उमंगको
निज अधिकार चेष्टा माना
इनके इतनी अक़्ल नहीं है

इनके पास दिमाग़ नहीं है
सूझ नहीं है बूझ नहीं है
माँकी कोखसे यह जनमे हैं
जनम लँडूरे जनम गँवार

इन्हें अँधेरेही में रक्खो
रैन बसेरेही में रक्खो
कभी न उभरे इनकी जात
कभी न चमके इनकी बात

कभी न दिन हो इनकी रात
चगढ़ चतुर दुनियामें इनको
अंधा बहरा गूँगा रक्खो
घामड़ अनपढ़ डग्गा रक्खो

मैला और कुचैला रक्खो
हेटा रक्खो नीचा रक्खो
इनको चोंगा पोंगा रक्खो
क़लम न इनके हाथमें आये

फिर तलवार भी छिन जायेगी
राजकी लंगरदार नावकी
फिर पतवार भी छिन जायेगी
अपना भरम बनाए रक्खो

जनताको भरमाये रक्खो
अब तक यह साज़िश थी लेकिन
अब यह जादू टूट चुका है
अब यह भाँडा फूट चुका है

पूरा ढोंग रचा रक्खा था
क्या अंधेर मचा रक्खा था
विद्याको दफ़ना रक्खा था
उसका रूप छिपा रक्खा था

दिनको रात बना रक्खा था
शब्दोंका आडम्बर रचकर
मन गढ़ंतसे एक बातका
सौ बिस्तार बना रक्खा था

एक ब्योपार जमा रक्खा था
कारोबार चला रक्खा था
ब्रह्मानंद सहोदर कविता
को बेकार बना रक्खा था

सीधी सादी बातोंमें भी
झूठी ऐंठन दे रक्खी थी
सहजको कठिन बना रक्खा था
सीधमें टेढ़ लगा रक्खी थी

अड़बड़ शब्द गढ़े कुछ ऐसे
जिनको जनता सीख न पाये
जिनको जनता बोल न पाये
जिनको जनता समझ न पाये

जिनको जनता सुन डर जाये
कोष घोंट लेनेवालोंका
सतरें पढ़ लेनेवालोंका
क़लम पकड़ लेनेवालोंका

काग़ज़ रँग देनेवालोंका
गिटपिट कर लेनेवालोंका
एक दरबार सजा रक्खा था
ज्ञान सभ्यताका अपनेको

ठेकेदार बना रक्खा था
यारोंने हड़बोंग मचाकर
ढोंग रचाकर, स्वाँग रचाकर
तंतर, जंतर, छू मन्तरसे

हौआ बना दिया विद्याको
सरस्वतीके मंदिरको भी
बना दिया मछली बाज़ार
विद्याके पवित्र मंडपमें

जब हम हाथ जोड़कर जाते
पंडित हमको धता बताते
हम मुँह देखते रह जाते थे
यही सोचते रह जाते थे

हम निर्धन कंगालोंसे
सिर्फ़ लक्ष्मी नहीं ख़फ़ा है
सरस्वती भी रूठ गई है
हमसे सब करते हैं छूत

अब तक यही रिवाज रहा है
"ऊँची जात" ऊँचे घरवाले
पैसेवाले, ऊपरवाले
विद्या हासिल कर सकते थे

लिख सकते थे पढ़ सकते थे
उनके बच्चे हो सकते थे
चचा भतीजे हो सकते थे
भाई भांजे हो सकते थे

जज्ज, कलक्टर और कमिश्नर
राज सभाके चौकस मेम्बर
डाक्टर और वकील, बैरिस्टर
इंजीनियर, टीचर, प्रोफ़ेसर

वाइस चांसलर और चांसलर
फ़ौजके नायक फ़ौजके अफ़सर
बैंक डिरेक्टर, बैंक मनेजर
कम्पनियोंके शेयर होल्डर

एम.ए., बी.ए., बी. टी., सी. टी.
बागी, रागी, रतन पारखी
कलाकार, ज्ञानी विज्ञानी
पत्रकार, लेखक लासानी

चित्रकार, शायर सैलानी
वीर, सूरमा, धर्मी, दानी
आठों गाँठ कुमैत जवानी
जिसकी छबि नहिं जाय बखानी

"गिरा अनैन नैन बिन बानी"
लेकिन कब तक यह मनमानी
यारो दुनिया आनी जानी
किस बिरतेपर तत्ता पानी

अब न चलेगी आना कानी
"का बरखा जब कृषी सुखानी
समय चूकि पुनि का पछतानी"
अब यह सब दुनिया बदलेगी

अब यह सब काया पलटेगी
अब यह धरती करवट लेगी
अब किसान मजदूरके बच्चे
जिनको तुमने सड़ा रखा था

जिनको गधा बना रक्खा था
सब कुछ पढ़ लिखकर निकलेंगे
यही सजायेंगे हर कुरसी
यही सँभालेंगे सब ओहदे

तलवार और क़लम दोनोंको
अपने हाथोंमें ले लेंगे
कलावन्त भी कलाकार भी
अब होगी इनकी सन्तान

अब किसान मजदूर और अफ़सर
सेनापति, जर्नेल, मिनिस्टर
बड़े वज़ीर गवर्नर जनरल
यह सब एक वर्गके होंगे

भेद भाव सब मिट जायेंगे
एक अछेद, अभेद, अखंड
एक सजीव सुयोग समाज
भारतमें आँखें खोलेगा

[मज़दूरों, कारीगरों, शिल्पकारोंकी ललकार]

नई सभ्यता क़ायम होगी
तोड़ा धरतीका सन्नाटा
किसने ? हम मजदूरोंने
डंका बजा दिया आदमका

किसने ? हम मजदूरोंने
दुनियाकी अंधी नगरीमें
जगमग दीप जलाया किसने
जगमें रंगारंग चमाचम

यह बाज़ार सजाया किसने
ओटमें छिपी हुई तहज़ीबों
का घूँघट सरकाया किसने
शरमीली तक़दीरकी देवी

का आँचल ढलकाया किसने ?
काम चोर सपनोंकी काया
में शोला भड़काया किसने
बदन चोर इस प्रकृति कामिनी

का सीना धड़काया किसने
परत परतको इस धरतीके
साथी, खोल दिया है किसने
छिपे दफ़ीनोंपर क़ुदरतके

धावा बोल दिया है किसने
जीवनके समुद्र मंथनमें
हमने भँवर क्या डाले हैं
भव सागरसे इन हाथोंने

क्या क्या रतन निकाले हैं
वन उपवन थे, हर काँटेसे
हँसता फूल खिलाया किसने
पत्थरके पथरीले दिलको

तप तपकर पिघलाया किसने
इस ऊसर बंजर धरतीपर
धनका ढेर लगाया किसने
इस भूखी प्यासी दुनियामें

हुनपर हुन बरसाया किसने
हर आफ़तसे हर मुश्किलसे
मजदूरोंकी जोड़ रही है
उलटी पलटी आड़ी टेढ़ी

तक़दीरोंसे होड़ रही है
क्या यह वही दुनिया है साथी
कल जो फटे हाल में फिरती थी
क्या यह वही बेचारी है जो

बार बार उठकर गिरती थी
साथी बोल लहू खौलाकर
जीवन रूप रचाया किसने
इस नंगी उजड़ी दुनियाको

सजकर दुल्हन बनाया किसने
नभचुम्बी शिखरोंपर साथी
हम बेखटके चढ़ जाते थे
जहाँ मौत जाते हुए झिझके

ताल ठोंककर बढ़ आते थे
आकाशोंके पातालोंके
दिलका चोर निकाला किसने
ख़ाली था, भरकर छलकाया

इस जीवनका प्याला किसने
अपनी कमरके बूतेसे हम
पेंग चढ़ाते हैं जीवनकी
दो झटकोंमें हिलाकर रख दें

साथी चूलें इन्द्रासनकी
सरकश पंचभूतका गट्टा
हमने झटकके तोड़ दिया है
जिस क़िस्मतकी मार ग़ज़ब थी

उसका पंजा मोड़ दिया है
दह्रकी हर तख़रीबी क़ूवत[1]
को साँचेमें ढाल लिया है
क़ुदरतके चैलेंजका हमने

कल्ला तोड़ जवाब दिया है
ख़ून पसीनेके हिलोरमें
तदबीरें मुँह देख रही हैं
इस लहराते आईनेमें

तक़दीरें मुँह देख रही हैं
अपने कस बलसे सीनोंमें
तूफ़ानोंको बन्द किया है
सधे हुए सौ सौ हाथोंसे

भूचालोंको थाम लिया है
लाख जतनसे जीवन खेती
मुरझानेसे रोका किसने
सूरजकी इस अगिन गेंदको

---

[1]दुनियाकी हर एक विनाशकारी शक्ति

किसने उछाला?—लोका किसने
कई बार रहती दुनियाकी
आईको हम टाल चुके हैं
कई बार तक़दीरे-जहाँकी

आँखोंमें आँखें डाल चुके हैं
जब फ़ाक़ोंपर फ़ाक़े थे
जब कोई उम्मीद नहीं थी
हमने जहाँ उँगलियाँ रख दीं

नबज़ें चलने लगीं दुनियाकी
इस अधमरी दलित दुनियाको
अपने लहूसे अमर किया
सुन लेना रन बोल उठेगा

मौतको हमने जीत लिया
जिस दम हल्ला बोल दिया है
दरिया, सहरा काँप उठे हैं
हमसे टक्कर लेकर साथी

परबत, सागर, हाँप उठे हैं
चाँद और सूरजकी किरनोंसे
चादर बुनकर रख देते हैं
इसी हथौड़ेकी जरबोंसे[1]

[1]चोटों

लोहा धुनकर रख देते हैं
करके बराबर रख देते हैं
ऊबड़ खाबड़ पेच-ओ-ख़म
कड़े कोस नरमा देते हैं

अपने धरती-तोड़ क़दम
ज़रा ठेस लगते ही साथी
नींदकी दुनिया जाग उठती है
ठुकरा दें जिस पड़ी शिलाको

बनके अहिल्या जाग उठती है
यूँ गुदगुदा दिया है हमने
संगका[1] पहलू फड़क रहा
यूँ उकसाया है जड़ताको

पत्थरका दिल धड़क रहा है
जान डाल दी तस्वीरों में
यूँ हर ख़त[2] चमकाया हमने
लौ दे उठते हैं वह नुक़ते

चूम लिया है जिनको क़लमने
नाम उभरनेका न कभी ले
पेच-ओ-ख़ममें निगाह जो डूबे
नक़्क़ाशीके अमर मोजज़े[3]

---

[1]पत्थर [2]रेखा [3]चमत्कार

मीनाकारीके वो अजूबे
इन हाथोंकी गुलकारीमें
सुब्हे-बहार साँस लेती है
हमने दबा दी हैं वह आँचें

मिट्टी लौपर लौ देती है
चौड़ी बुर्जोंको जो देखे
शक़्क़ुलक़मर[1] याद आ जाये
बुतख़ानोंके रूप नगरमें

सेह्रे-सामरी[2] ग़श खा जाये
यूँ जगमगा दिया धातोंको
हो ठहराव पे चालका धोखा
साफ़ आँखोंको हो जाता है

जामिदपर[3] सय्यालका[4] धोखा
इन्हीं खुरदरे हाथोंका जस है
या सन्नाई[5] बोल उठी है
देख जरा बच्चोंके खिलौने

साथी, मिट्टी बोल उठी है
कड़ी चटानोंके, तेशोंसे
हमने सीने फाड़ दिये हैं
चार खूँट रहती दुनियामें

---

[1]शक़्क़ुलक़मर=मुहम्मद साहबने एक बार इशारेसे चाँदके दो टुकड़े कर दिये थे [2]जादूगरका जादू [3]जड़ [4]तरल [5]शिल्पि कला

हमने झंडे गाड़ दिये हैं
इस धरतीको छूकर हमने
चाँद सितारोंको छेड़ा है
करके बसर काँटोंपर साथी

हमने बहारोंको छेड़ा है
अकसर इस धरतीकी छूटें
देवलोकपर पड़ जाती हैं
आज इसी दुनियाकी आँखें

इन्द्रपुरीसे लड़ जाती हैं
अपने इरादोंकी उठानमें
रूहे-तमद्दुनकी बरनाई[१]
इन्हीं हथौड़ोंके सरगममें

तारीख़ोंने[२] ली अँगड़ाई
मुहिनजदाड़ो और हड़प्पा
लाल क़िला और ताज महल
देख एलोरा और अजन्ता

कपिलवस्तुका राज महल
बेल और बूटोंके पर्देमें
हमने क्या क्या काम किये हैं
मुँहबँधी कलियोंकी गिरहोंमें

---

[१]सभ्यताकी आत्माका जवान होना [२]इतिहासों

हमने शोले बाँध दिये हैं
महरमे-आबेरवाँ[1]—छनती है
सात तहोंसे बदनकी ज्योत
पर्दे पर्देमें रह रहकर

जैसे जागे मनकी ज्योत
बारह अब रंग सोलह सिंगार
गोकुलकी राधा सजती है
इस दुनियाके बृन्दाबनमें

किसकी बंसी बजती है
कोख उजड़ जाये धरतीकी
फूट जाय मानवका भाग
याद रहे हम उठ जायें तो

लुट जाये दुनियाका सुहाग
हाथ हमारा ही घर घरमें
लेके चराग़े-शाम आया है
बुनियादोंसे रद्दा रद्दा

ख़ून हमारा काम आया है
रूम, यूनानकी वह फ़नकारी[2]
मिस्र देशके वह अहराम
क़ुस्तुनतुनियाके कंगूरे

---

[1]शाहज़ादी ज़ैबुन्निसा औरंगज़ेबके दरबारमें ढाकाका आबेरवाँ सात तह करके पहनकर आई थी तब भी औरंगज़ेबने कहा था—"बेटी तुम नंगी हो" [2]कलाकारी

क़स्रे-कै, क़स्रे-बहराम[1]
काशी, दिल्ली, इलियम, पीसा[2]
के वह धौरहरे मीनार
उज्जैन और शीराज़ और ग़ज़नी

अलहमराके दरो दीवार
नीले सपनोंकी झिलमिलमें[3];
एटलांटिसका वह जल-सेज
जुग जुगान्तरके निरसेको

पीढ़ी पीढ़ी दिया सहेज
मारीशस, कीनिया, टंगानिका
लंका, बंका[4], सिंगापूर
यह किसने लहलहा दिया है

जल थलको नजदीक और दूर
झलक रहा है नगर मास्को
नव युगका वह जरोसलेम
वह जादू निर्मान कलाके

---

[1]चक्रवर्ती राजा केकाउस और शाह बहरामके राजमहल [2]इलियम—ट्राय नगरका एक नाम इलियम भी है। पीसा नगर इटलीमें है जहाँका तिरछा मीनार मशहूर है [3]कहा जाता है कि अबसे कई हजार बरस पहले इटलीमें रूम सागरके तटपर इटलांटिस नामी एक बहुत बड़ा नगर बसा हुआ था, जो अचानक रूम सागरमें डूब गया [4]बंका=बैंकाक

लेनिनग्राड और नीपरडैम[1]
भूमंडलपर जुगका जुगसे
रिश्ता नाता जोड़ आये हैं
क़दम क़दमपर इस दुनियामें

अपनी निशानी छोड़ आये हैं
सहराको जो चमन बना दें
ऐसे दीवाने कम होंगे
आँख उठाकर हद्दे-नज़र तक

देखोगे तो हमीं हम होंगे
"पत्ता पत्ता, बूटा बूटा
हाल हमारा जाने है
जाने न जाने गुल ही न जाने

(महाकवि 'मीर')

"बाग़ तो सारा जाने है"
घन घन घन अनगिनत मशीनों
के पहियोंका चक्कर खाना
यह घड़ घड़ घड़, यह ज़ीरो बम[2]

सय्यारोंका[3] मिलकर गाना
दहड़ दहड़ जलते फ़रनेससे
सूरज-मंडल झपक गया है
अन्धकारके सीनेमें भी

---

[1]रूसमें नेपर नदीके बाँधपर पानीका सबसे बड़ा खजाना [2]ताल सम
[3]नक्षत्रों

अक्सर कौंदा लपक गया है
लाख करवटें लेता शोला
बज्रको भी पिघला देता
ब्वायलर हौंक रहा है गोया

ज्वालामुखी साँसें लेता है
बरसाती हैं फूल अंजनके
लाल अंगारोंकी बौछारें
सुनो खनकते कल पुर्ज़ोंमें

सौते-सरमदीकी[1] झनकारें
यह मशीनकी गड़गड़ाहटें
धरतीकी छाती हिल जाय
धुआँ चिमनियोंसे उठता है

गतपर जैसे नाग लहराय
जीवनकी काली रातोंका
धरती जहाँ पता देती है
गाती हुई मशीनोंकी लय

वहाँ चराग़ जला देती है
रेलोंकी घन गरज, जहाजों
का वह सागर फाड़ बढ़ाव
साफ़ मंडलाकार फ़ज़ामें[2]

---

[1]स्वर्गीय संगीत [2]वायुमंडल

तैय्यारोंका[1] निडर चढ़ाव
नदियोंका मुँह मोड़ दिया है
वीराना लहराता है
रेगिस्तानोंमें अब पानी

गगन खेलता जाता है
मज़दूरोंके करामात हैं
मज़दूरोंके पस्त-ओ-बलन्द
किस करवटसे चन्द्रलोकपर

फेंकी है बेलाग कमन्द
कर्मयोगकी महाशक्तिको
हमने अपने साथ लिया है
इस जीवनके शेषनागको

इन हाथोंने नाथ लिया है
हम दुनियाके चलानेवाले
और हमीं पामाल, यह क्या है
हम दुनियाको बचानेवाले

और इतने बदहाल, यह क्या है
हमको भूखा रखकर हमसे
धन कुबेरका काम लिया है
अपनी दशा सोचकर अकसर

[1]हवाई जहाज़ों

हमने कलेजा थाम लिया है
साथी मरता क्या नहीं करता
किस किसपर इल्ज़ाम धरे
जम जम जिये यह प्यारी दुनिया

लेकिन हम बे मौत मरे
अपने पसीनेका जम जाना[1]
धन, पूँजी, सरमायादारी
सब अपने ही लहूसे पले हैं

सेठ, महाजन, राज अधिकारी
सब अपनी ही घमा घमी है
आये दिन जो माल उड़ते हैं
सब अपनी ही लहर बहर है

अपने लहूसे गुलाल उड़ते हैं
हमको निर्धन रखके इन्होंने
पाट लिये हैं अपने ख़ज़ाने
हमें उजाड़के इन सेठोंने

सजा लिये अपने काशाने[2]
बाग़में बस इनको ज़हरीले
काँटे बोना आता है
इनके अनर्थको देख देखकर

---

[1]"Capital is congealed labour"—**Marx.** [2]बड़े बड़े घर या महल

साथी रोना आता है
कैसा अपना देस अपना घर
साथी अपना बस है उतना
फटे नाख़ुनोंमें जितना है

टुकड़ा भारतकी मिट्टीका
पानी में यह आग लगा दें
सेठ, महाजन, एक काइयाँ
जंगकी घातें सुलहकी बातें

धमा चौकड़ी उड़न घाइयाँ
जब जब जंग छिड़ी देशोंमें
जो भी पड़ी हमपर ही पड़ी
भुसमें चिंगी देकर साथी

देख जमालो दूर खड़ी
अरबोंके हैं वारे न्यारे
दाँव भी हैं दोहरे दोहरे
चालें इनकी बाज़ी इनकी

हम हैं बस शतरंजके मोहरे
यह हमसे इनसाफ़ करेंगे
क्या बकते हो?——राम कहो
इनके बही खातेसे हमें क्या

लेना एक न देना दो
ये और उगलें अपना मुनाफ़ा
कह सुनकर सब हार गये
नोटोंके, सोने चाँदीके

यह तो पहाड़ डकार गये
नर्म भी पड़के, गर्म भी पड़के
दुनियाको देते हैं भर्रे
यह जीवनका रथ खींचेंगे

राहके अड़ियल, थानके टर्रे
काले रुपयोंसे[१] बेखटके
भरते गये यह अपनी तिजोरी
सब भौचक्के रह जाते थे

करता कौन इनसे बरजोरी
यह सब मर्दुमख़ोर हैं साथी
इनके साथ मुरौवत कैसी
यह दुनिया है इनकी मिल्कियत

इस दुनियाकी ऐसी तैसी
निपटो अब बिफरी जनतासे
करनी धरनी लेकर चाटो
मुट्ठी भर भरके दुनियामें

बोई हवा बवंडर काटो
संगीनोंसे बन्दूक़ोंसे
तुमने किये हज़ारों वार
बारी है अब मज़दूरोंकी

---

[१]Black money.

"इक कचलोहिया आड़ो हमार" (आल्हा)
दबसठसे कब काम चला है
लोहा ही लोहेको काटे
साथी सुना नहीं क्या तूने

सीधेका मुँह कुत्ता चाटे
खेत्यौनीमें खड़ग-खम्बमें
सबमें ब्यापे हम हुशियार
इन्हीं डचोढ़ियोंके खम्बोंसे

लेंगे हम नरसिंह औतार
बेकारी, भुखमरी, लड़ाई
रिशवत और चोर बाजारी
बेबस जनताकी यह दुरगत

सबकी जड़ सरमायादारी
ठोकरपर ठोकर खाके भी
अपनी मंज़िलसे बेगाने
आँखके अंधे नाम नयनसुख

हमको चले हैं राह बताने
आज बही खातेवालोंसे
सदियोंका लेखा हम लेंगे
आटे दालका भाव खुलेगा

जिस दम जमा खर्च समझेंगे
लाल, जवाहर, सोना, चाँदी
कोमिंटाँगपर किया निछावर
क्यों न हो? डालर-साम्राजका

नाच रहा था भूत जो सरपर
उस दौलतसे अमरीकाका
जोवन और सँवारा होता
आज अमरीका एक ज़मानेकी

आँखोंका तारा होता
बैंकों, मिलों, कारख़ानोंको
हम जो हाथोंमें ले लेते
हुन बरसा देते साथी हम

देशको सोनेसे मढ़ देते
यू. एन. ओ. में यूनेस्कोमें[1]
रूसपै दोष लगाते जाओ
करके बेहया तक़रीरें तुम

अपनी झेंप मिटाते जाओ
जापान और पच्छिमी जर्मनी
यूनान, इटली, यूगोसलाविया
कश्मीर और नेपाल और तिब्बत

साउथ कोरिया और मलाया
तोड़ फोड़में हर्ज नहीं हैं
कुछ तो करें जब जी ललचाये
चोर अगर चोरी न करे तो

---

[1]UNESCO.

हेराफेरीसे भी जाये
चीनको मत तसलीम करो
यारोंने ढब क्या क्या सोचे
ठीक तो है, खिसियानी बिल्ली

कुछ न बने तो खम्बा नोचे
अब फ़ारमूसापर नज़रें हैं
गो यह जगह है निहायत छोटी
लेकिन अब इसको क्या कीजे

भागे भूतकी बहुत लँगोटी
चीनसे जब निकले तो तुमने
हिन्दी चीनमें[1] टांग अड़ाई
डट गये नये अखाड़ेमें तुम

और जो यहाँ भी मुँहकी खाई
मार्शल एड, एटलांटिक-पेक्ट
खाने तड़ पड़ भरते जाओ
इसी तरह दुनिया भरमें तुम

गड़बड़, सड़बड़ करते जाओ
वाल स्ट्रीटके सट्टे बाज़ो
काँप जाओ इस लश्करसे
हिटलर, च्यांगके उड़ा दिये सर

---

[1]Indo-China.

जिसने अपनी ठोकरसे
जंगसे तुमको ,लाभ हुआ जो
उसको जोड़ो और शरमाओ
कण्ठमें अटके जीतके दावे

गिनो अगर तुम रूसके घाव
तुमने हिटलरको शिकस्त दी
कहते शर्म नहीं आती
इतने दाँत तुम्हारे मुँहमें

झूटकी आँखें हैं झुक जाती
ज़बरदस्त जर्मन फ़ौजों से
लड़े अकेले तुम या रूस ?
जीते हुए दुशमनको भगाते

र्बालिन पहुँचे तुम या रूस
निगल लिये जानेपर किसने
पेट अजगरका फाड़ दिया है
सबसे पहिले राइचस टागपर

किसने झंडा गाड़ दिया है
आज रूस फुंक जानेपर भी
पनप उठा है चमक उठा है
तुमपर आँच न आई लेकिन

बाग़ तुम्हारा सूख चला है
दुनिया भर बाज़ार है जिसका
एक मंडी हेरा फेरीकी
उस अमरीकाकी यह हालत

यह बेकारी, धत तेरीकी[१]
ठंडी लड़ाई आख़िर कब तक
एक दुनियासे रहेगी जारी
अम्नके सच्चे दिलदारोंसे

बात न की, तुमने झक मारी
दुममें रस्सा बाँध चुके हैं
ठोकर देंगे, धक्का देंगे
उसी घड़ी हम दम लेंगे जब

चोरको घर तक पहुँचा देंगे
अब क्यों देर लगायें साथी
अब तो कमर दुश्मनकी ख़म है
आधी दुनिया जीत चुके हैं

अब तो मंज़िल चार क़दम है
दुनिया नई बसायेंगे हम
सुन्दर साज सजा देंगे
धन्ना सेठोंके महलोंकी

ईंटसे ईंट बजा देंगे
दुनिया हाथ नहीं आती है
दुनिया ले ली जाती है
क़िस्मत नहीं बदलती साथी

---

[१]इस समय अमरीकामें एक करोड़ मज़दूर बेकार हैं

क़िस्मत बदली जाती है
मज़दूरोंकी दुनिया जागी
कटते कटते रात कटी
वह आकाश कलस हिलते हैं

धरतीने करवट बदली
दुनिया जिसे "आज" कहती है
संगम कई जुगोंका है
बीता हुआ "कल" औरोंका था

आनेवाला "कल" अपना है
सर्वोदयके सुख सपनेमें
कौन पुकार रहा है साथी
जीवन सागर नई दिशामें

ठाठें मार रहा है साथी
कोई दिनकी बात है साथी
मज़दूर अब मज़दूर नहीं है
जब हो ज़मींपर अपनी ख़ुदाई

[नई दुनिया]

साथी वह दिन दूर नहीं है
रूस, चीनकी कम्पित किरनें
नव प्रभातकी आभा लाईं
नव युगका संदेशा लाईं

उत्तर, दक्खिन, पूरब, पच्छिम
आगे, पीछे, ऊपर, नीचे
देश देशमें दुनिया भरमें
तोड़ रही है दम तारीकी[1]

सुर्ख़ सबेरा होनेको है
भारतके आकाश पै साथी
उदयाचलकी ओटसे साथी
वह रक्तिम पौ फूट रही है

अँगड़ाई तोड़ता एशिया
बन्द आँखें मलता अफ़रीक़ा
दमन दलित हबशी अमरीका
गहरी नींदसे चौंक उठे हैं

देश देशमें महा क्रान्तिकी
रनचंडी हुंकार रही है
सौ बल खाती हुई कुचलकर
या नागिन फुफकार रही है

कारीगर, मज़दूर, किसान
कड़ीयल और बिगड़ैल जवान
काँधेसे काँधा जोड़ेंगे
दुनियापर धावा बोलेंगे

[1]अन्धकार

धरतीका तख़्ता उलटेंगे
दुनियामें सर्वोदय होगा
नया समाज आँखें खोलेगा
नई सभ्यता क़ायम होगी

ज़र्रा ज़र्रा जाग उठेगा
क़तरा क़तरा जाग उठेगा
पत्ता पत्ता जाग उठेगा
बूटा बूटा जाग उठेगा

कोना कोना जाग उठेगा
चप्पा चप्पा जाग उठेगा
तप्पा तप्पा जाग उठेगा
क़स्बा क़स्बा जाग उठेगा

सूबा सूबा जाग उठेगा
दरिया दरिया जाग उठेगा
सहरा सहरा जाग उठेगा
जीवन सपना जाग उठेगा

अमरीकी बंजारानामा

महाकवि नज़ीर अकबराबादीकी वह देश-प्रसिद्ध कविता जिसका शीर्षक है 'बंजारानामा' हिन्दीके हज़ारों पाठकोंने पढ़ी या सुनी होगी। नज़ीरने अबसे डेढ़ सौ वर्ष पहले व्यापारियोंको धनलोलुपतासे बचानेके लिए अपनी इस कविताकी रचना की थी जिसमें टेकका बन्द है "सब ठाठ पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बंजारा" अर्थात् ऐ बंजारे जब मौतका बंजारा तेरी लाशको अपने कंधोंपर लाद चलेगा तब सब ठाठ पड़ा रह जायगा। आज अमरीकाका पूँजीवाद संसारका सबसे बड़ा बंजारा है जो सारी दुनयाको अपनी मंडी बनानेके लिए प्रयत्न कर रहा है। इस कवितामें अमरीकाके बंजारेका बंजारानामा लिखा गया है। देखिये इस बंजारेके व्यापारका चित्रण कैसा हुआ है।

(१)

ओ अमरीकाके बंजारे ! क्यों देस बिदेस फिरे मारा
क़ज़्ज़ाक़[१] अजलका[२] लूटे है दिन रात बजाकर नक़्क़ारा
क्या लशकर बेड़े सबमेरीन क्या तय्यारा[३] क्या गुब्बारा
क्या तोप टैंक ज़हरीले गैस ग्रिनेड[४] धुआँ और अंगारा
बजता है मौतका नक़्क़ारा[५] होता है तेरा वारा न्यारा
सब ठाट पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बंजारा

---

[१]डाकू [२]मौत [३]हवाई जहाज़ [४]छोटा बम
[५]नगाड़ा

(२)

क्यों ख़ूनसे सारे आलमके[१] तू अपना दिया जलाता है
क्यों मौतके इन हथियारोंको अपना ब्योपार बनाता है
यह मंडी मंडी दूकाँ दूकाँ क्यों तू आग बिछाता है
ख़ुद घरके चिराग़से बंजारे, सुनते हैं कि घर फुंक जाता है
यह एटम बम हाइड्रोजन बम कर देंगे तेरा निबटारा
सब ठाट पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बंजारा

(३)

यह दुनिया भरमें कैसा ताना बाना फैला रक्खा है
किस नाते दुनिया भरमें अपना हिस्सा बख़रा[२] रक्खा है
क्यों देश देशके कारबारमें अपना साझा रक्खा है
इन चालोंसे क्या मिल जाएगा इन बातोंमें क्या रक्खा है
बस दो दिनका ये लेन देन यह लेखा जोखा है सारा
सब ठाट पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बंजारा

(४)

हिटलर मुसोलिनी टोजोका जो हश्र[३] हुआ वो देख लिया
इंगलैंडमें हो या फ्रांसमें हो मग़रिब[४] हो कि मशरिक़[५] का ख़ित्ता[६]
अब ऊँचे सुरोंमें सरमायेका राग सुनाई नहीं देता
इस साज़पर ऐसी चोट पड़ी जैसे फट जाये हर परदा
पूँजीका पियानो टूट चुका अब हाथमें ले ले इकतारा
सब ठाट पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बंजारा

---

[१]दुनिया [२]हिस्सा [३]नतीजा [४]पच्छिम [५]पूरब [६]इलाक़ा

(५)

यह मोटर जीप रेमिंगटन पारकर ब्लेड जहाज़ सर-ओ-सामाँ[1]
यह लोहा लंगर टीन रबर पेट्रोल केरोसिन गैस धुआँ
बिजलीके खिलौने लट्टू बाजे गेंद ताश गुड्डे गुड़ियाँ
जब मौत बढ़ायगी तेरी दुकाँ कुछ भी पल्ले न पड़ेगा मियाँ
सब माल धरा रह जायेगा जब पैके-अजलने[2] ललकारा
सब ठाट पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बंजारा

(६)

यह लिप्सटिक पाउडर सास[3] पिकिल[4] यह पशमीने यह क़ीमती फ़र
नंगी तस्वीरोंके एलबम जहरीला जिन्सी लिटरेचर[5]
और हालीवुडकी फ़िल्मोंका वह गंदा सड़ा गला कलचर
अमरीकी तर्ज़ जिन्दगीका यह टीम टाम यह करोंफ़र[6]
हर गुनहगारका मौतके हाथों हो जाता है निस्तारा
सब ठाट पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बंजारा

(७)

क्या कोकाकोला, मारगेरीन क्या एग पाउडर क्या चाट चसक
क्या नाइट कलब क्या नारकोटिक[7] अफ़यूँका धुआँ कोकीन मदक
क्या टर्टिल सूप[8] और क्या सासेज[9] क्या बेकन पोर्क,[10] शराब गज़क[11]
क्या तहज़ीब ऐसी चटोरी भी क्या तड़क भड़क क्या चटक मटक
इस अगड़म बगड़म खाने पीने ने है बे मौत तुझे मारा
सब ठाट पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बंजारा

---

[1]सामान [2]मौतका फ़रिश्ता [3]एक तरहकी चटनी [4]विलायती अचार [5]कामवासन-साहित्य [6]शान-शौकत [7]एक नशा [8]कछुवेका शोरबा [9]एक विलायती खाना [10]सुअरका गोश्त [11]शराबके साथका खाना

(८)

सोज़ाक आतशक घेंगा चेचक हैज़ा प्लेग महामारी
कोढ़ कंठमाला सरतान जलंधर दिक़ सूखाहारी
हर क़ौम तेरी इन सौग़ातोंसे[१] है अब जीनेसे आरी[२]
ले तेरे भी दिन आ पहुँचे हुशियार ! ओ मौतके ब्योपारी
अब बिफरी[३] हुई दुनियाका बराबर चढ़ता जाता है पारा
सब ठाट पड़ा रह जाएगा जब लाद चलेगा बंजारा

(९)

दुनियामें हश्र[४] उठा रक्खा है ज़ालिम तेरी सियासतने
दुनियाको सिरेसे लूट रखा है ज़ालिम तेरी तिजारतने
दुनियाको भूखा मार रखा है ज़ालिम तेरी कफ़ालतने[५]
दुनियाको ज़लील बना रक्खा है ज़ालिम तेरी ज़लालतने
एक दिन दुनियाको लूटनेका मिट जायगा तेरा ब्योपारा
सब ठाट पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बंजारा

(१०)

यह नीग्रो बेटिंग और लिन्चिग[६] तेरे किरदारमें[७] शामिल हैं
माओं बहनों बच्चोंके लहू इस कारोबारमें शामिल हैं
यह क़त्ल-ओ-ग़ारत डाकाज़नी तेरे ब्योहारमें शामिल हैं
शैतान भी जिन पापोंसे डरे तेरे अतवारमें[८] शामिल हैं
अब मौतकी देवी लेनेवाली है तेरे लहूका चटख़ारा
सब ठाट पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बंजारा

---

[१]तोहफ़ा [२]बेज़ार [३]नाराज़ और बेचैन [४]क़यामत [५]मदद (मार्शल एड) [६]नीग्रो बेटिंग और लिन्चिंग=किसी काले नीग्रोको किसी भी झूटे सच्चे इलज़ाम पर पकड़कर मार डालने या जला देनेका रिवाज [७]चरित्र [८]ढंग

(११)

क्या रूस है ऐसा बंजारा? सामान तो उसके पास भी है
क्या चीन है ऐसा बंजारा ? उससे दुनियाको आस भी है
सनअत[1] हिरफ़त[2] दौलत इज्जत नवजनतंत्रोंका[3] रास[4] भी है
कसबल[5] इन सबमें है लेकिन क्या इनसे किसीको ह्रास[6] भी है
एक रोज़ अजलके हाथों कहीं खुल जाय न भेद भरम सारा
सब ठाट पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बंजारा

(१२)

सुन ओ अमरीकी बंजारे! संसार तेरी दूकान नहीं
रूसी चीनी भी ताजिर[7] हैं, इनसान हैं वो शैतान नहीं
है जिनसे उनका कारबार जानें उनकी हलकान[8] नहीं
यह तेरी समझमें आ जाये क्या इसका कोई इमकान नहीं
डाकेसे कोई दुनियामें फला ? चोरीसे किसीको हुआ वारा[9]
सब ठाट पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बंजारा

(१३)

तू हिन्दुस्तान और पाकिस्तानको नरक बनाकर छोड़ेगा
चल जायँ अगर तेरी चालें दोनोंको मिटाकर छोड़ेगा
दोनोंको उजाड़के छोड़ेगा वीरान बनाकर छोड़ेगा
दोनोंको चबाकर छोड़ेगा दोनोंको खाकर छोड़ेगा
लेकिन ये निवाले[10] बन जाएँगे तेरे लिये संगे-ख़ारा[11]
सब ठाट पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बंजारा

---

[1],[2]उद्योग धंदे [3]योरपकी नई लोकशाहियाँ [4]रास=मुआफ़िक़ [5]ताक़त [6]डर [7]ब्योपारी [8]परेशान [9]फ़ायदा [10]कौर [11]सख़्त पत्थर

(१४)

जिन क़ौमोंका तू मददगार बनता है क्या तू उनके यहाँ
भारी भारी फ़ैक्टरियोंके बननेका दिलसे है ख़्वाहाँ[1]
जिन मुल्कोंका तू ठेकेदार बनता है ऐ दल्लाले-जहाँ
उनमें भी दौलत बरस पड़े इस बातकी तुझको फ़िक्र कहाँ
ऐ अपने दोस्तोंके दुशमन ले मौतने वह फन्दा मारा
सब ठाट पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बंजारा

(१५)

क़त्ताले-कोरिया[2] याद रहे जब फ़ैसलेका वक़्त आयेगा
तारीख़का सबसे बड़ा मुजरिम इनसाफ़ तुझे ठहरायेगा
इनसान बयक-आवाज़[3] तेरा हर ज़ुल्म-ओ-सितम गिनवायेगा
अपने करतूत याद करके तू पीटके सर पछतायेगा
जो मौतके मुँहपर चढ़ जाये इसका भी किसीमें है यारा
सब ठाट पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बंजारा

(१६)

जापान कोरिया चीन मलाया इन्डोनीशिया और बरमा
यूनान मिस्र कशमीर और तिब्बत यूगोस्लेविया आस्ट्रेलिया
फ़िलस्तीन ईरान सीरिया योरप एशिया अफ़रीक़ा
किस किसपर आँखें हैं तेरी कुछ लालचकी हद है बाबा
दो गज़ ही कफ़न हाथ आयेगा गो दुनिया दुनिया सर मारा
सब ठाट पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बंजारा

---

[1]इच्छुक [2]कोरियाका हत्यारा [3]एक आवाज़से

(१७)

दिन रात वही डालर डालर कब तक इस धुनमें मरो बाबा
कब तक इस ग़ममें घुलो बाबा कब तक यह ध्यान धरो बाबा
कुछ सोचो समझो ग़ौर करो कुछ अपने जीमें डरो बाबा
"अब मौत नक़ारा बाज चुका चलनेकी फ़िक्र करो बाबा"
उठ जाना है तुमको दुनियासे डालरका फेंकके पुश्तारा[१]
सब ठाट पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बंजारा

(१८)

बंजारे ! मशरिक़ मग़रिबको अपना ही दुख क्या थोड़ा है
रिजवे, डल्लेस, आइज़न हावर बटमारोंको[२] किसपर छोड़ा है
क्या दुनिया भरको लूटके अब भी कारबारका तोड़ा है
कुछ रोज़ उसे कर ज़हरमार[३] दुनियाका लहू जो निचोड़ा है
जमहूरे-जहाँ[४] इन तेरे पिट्ठुओंको कर देंगे नाकारा[५]
सब ठाट पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बंजारा

(१९)

ये यू. एन. ओ. में ऐय्यारी यह फोड़ फाँस यह दग़ल-फ़सल[६]
ये हिफ़्ज़े-अमनके[७] पाकीज़ा राज़ीनामेमें रद्दोबदल
यह बैनुलअक़वामी[८] साज़िश यह तानाशाही छल बल कल
यह आग धुआँ यह चिनगारी यह तीसरी जंगके दल बादल
पैग़ामे-अजल है तेरे लिये बजता हुआ अम्नका नक़्क़ारा
सब ठाट पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बंजारा

---

[१]पीठका बोझ [२]रास्तेका डाकू [३]हज़म करना [४]दुनियाकी जनता [५]निकम्मा [६]किसीको लड़ा देना, किसीको फँसा देना [७]शान्ति रक्षा [८]अंतरराष्ट्रीय

(२०)

यह मारशल एड, यह पैसफ़िक एड, यह लेन देन रिश्ता नाता
और बैनुलक़ौमी बैंकका वो शैतानकी आँत बही खाता
यह डालर साम्राजका एहसाँ अब तो उठाया नहीं जाता
दुनियाको उसके हालपै छोड़, अब ओ दुनियाके अन्नदाता
तुझको भी एक दिन ले डूबेगी क़र्ज़की यह बढ़ती धारा
सब ठाट पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बंजारा

(२१)

उलटेंगी तेरी सब तदबीरें पलटेंगी जहाँकी तक़दीरें
क्या थाम सकेंगी ताज़ीरें[1] क्या रोक सकेंगी ज़ंजीरें
टूटेगा ये मौतका सन्नाटा जब बोल उठेंगी तसवीरें
एक दिन छिन जायेंगी तुझसे तेरी संगीनें शमशीरें
भूखी और नंगी जनताको वह देख अजलने सनकारा
सब ठाट पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बंजारा

(२२)

दी तरह[2] बहुत दुनिया भरके मज़दूरों और किसानोंने
की तेरी बिदअतोंपर[3] हैरत दीवानोंने फ़रज़ानोंने[4]
घायल सीनोंमें ज़ोर भरा फिर ख़ून हुए अरमानोंने
ओ पैंतरेबाज़ अब देखेगा कि सताए हुए इनसानोंने
दुनियाके अखाड़ेमें तुझको एक रोज़ उठाके दे मारा
सब ठाट पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बंजारा

---

[1]सज़ाएँ [2]मौक़ा देना [3]नई नाजायज़ बातों [4]अक़्लमंदों

(२३)

जो बात बनाई थी तूने वह बात बिगड़नेवाली है
जो बज़्म[1] जमाई थी तूने वह बज़्म उखड़नेवाली है
अब लुटे हुए हाथोंको बग़ावत ज़ोर पकड़नेवाली है
बंजारे सरकी ख़ैर मना बे भावकी पड़नेवाली है
तारे नज़र आयेंगे दिनको जब सरपै बजेगा नक़्क़ारा
सब ठाट पड़ा रह जाएगा जब लाद चलेगा बंजारा

(२४)

दुनियाको बनामे-आज़ादी तूने दिये ग़च्चेपर ग़च्चे
दुनिया भरसे आज़ादीके वादे हैं तेरे झूटे सच्चे
जो आ जायें भरोंमे[2] तेरे अब लोग नहीं ऐसे कच्चे
क्या मर्गे-कोरिया[3] आज़ादी है ओ आज़ादीके बच्चे
अब क़ैदे-ज़िन्दगीसे तुझको यह दुनिया देगी छुटकारा
सब ठाट पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बंजारा

(२५)

एटम बम चीनपै फेंकोगे ? बढ़ बढ़के बोलना क्यों बाबा
इस विश्व-शान्तिके सागरमें यूँ ज़हर घोलना क्यों बाबा
जीवन बाज़ारमें मौतकी यह दूकान खोलना क्यों बाबा
तहज़ीबकी फूलसी क़दरों[4]को काँटोंमें तोलना क्यों बाबा
डालरकी मकर चाँदनी दो दिन फिर अँधियारा पखवारा
सब ठाट पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बंजारा

---

[1]महफ़िल [2]बहकानेमें [3]कोरियाकी मौत [4]मूल्यों, मानों

(२६)

बाज़ारे-जहाँमें देखें कबतक मची रहे यह लेव देव
दुनियाके गलेका फन्दा कबतक तेरे क़र्ज़ोंकी जनेव[1]
दुनियाको मिटानेकी धमकी, यह दया भाव यह महासेव[2]
तेरा ही एटम बम कर दे सरपर तेरे बम महादेव
वह दिन लद गए कि फिरे ऐंठता, कोई ज़ालिम हत्यारा
सब ठाट पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बंजारा

(२७)

चिगारियाँ उड़ती हैं तेरी शरारतपर जनताकी आँखोंसे
बारूदकी बू आती है बराबर अब जनताकी साँसोंसे
हुशियार ! टपकता है अब और ही कुछ जनताकी बातोंसे
ख़ुद मौतकी आँख झपक जाती है अब जनताकी निगाहोंसे
वह झलका सब्रका पैमाना, तारीख़ने वो छापा मारा
सब ठाट पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बंजारा

(२८)

वह देख कि अब दुनिया भरमें मज़लूमोंके दल सजते हैं
वह सुन कि सताए हुए तेरे शेरोंकी तरह गरजते हैं
गुस्सेसे वह चेहरे दमकते हैं शोलोंसे वह सीने मँजते हैं
वह बाग़ियोंके लश्करमें कहीं अब कूचके डंके बजते हैं
वह उड़े शरर[3] वह इनक़लाबके काले नागने फुनकारा
सब ठाट पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बंजारा

---

[1]हिन्दुओंके जनेऊमें तीन धागे तीन क़र्ज़ोंकी अलामत होते हैं—माता पिताका क़र्ज़, गुरुका क़र्ज़ और ईश्वरका क़र्ज़ [2]सेवा [3]चिनगारियाँ

(२९)

मैं वाल-स्ट्रीटके सट्टेबाज़ोंका असली रूप दिखाता हूँ
इस हुक्मरान तबक़ेके रुख़से आज नक़ाब[1] उठाता हूँ
दुनिया भरमें इस फैले हुए ख़तरेसे तुम्हें चौंकाता हूँ
अमरीकी बंजारानामा गा गाके 'फ़िराक़' सुनाता हूँ
सब मिलके लगाओ देश देशमें जनताकी जयका नारा
सब ठाट पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बंजारा

---

[1]पर्दा

डालर देस

अमरीकी बंजारानामाके ही विषयको कुछ वर्णन शैली बदलकर इस कवितामें भी व्यक्त किया गया है। इस कवितामें अमरीकी बंजारेके घर या देशमें हम पाठकोंको ले चलते हैं और हर पदमें अमरीकाकी सैर कराते हैं। यहाँ भी कल्पना और वर्णनको अत्यन्त साधारण स्तरपर रखा गया है। यह कविता भी उसी तरह बहुत उतरकर कही गई है जैसे अमरीकी बंजारानामा लेकिन इस कविताका विषय 'बंजारा' नहीं है 'बंजारे'का देश है इसलिए कई नई बातें नये दृश्य और नई संस्थाओंकी तस्वीरें इस कवितामें खींची गई हैं।

(१)

है रंग बिरंग वहाँ जीवन हम डालर देसको देख आये
वह हरा भरा दौलतका चमन हम डालर देसको देख आये
खानेके मज़े कपड़ोंकी फबन हम डालर देसको देख आये
कोऊ काहूमें मगन, कोऊ काहूमें मगन हम डालर देसको देख आये
हम डालर देसको देख आये हम डालर देसको देख आये

(२)

वह रातोंको भी दिनका समाँ वह दूकानें जगमग जगमग
वह रेल पेल मोटरकारोंकी हर ड्राइवर हुशियार सजग
वह रुकती बढ़ती हुई ट्रैफ़िक[१] वह दब जानेका डर पग पग
बाजारोंका हंगामा जुदा घटों भोंपूका शोर अलग
हम डालर देसको देख आये हम डालर देसको देख आये

---

[१]सवारियाँ और सड़ककी भीड़

(३)

वह लक़ दक़ साठ मंज़िल बातें आसमानसे करते हुए
हर मंज़िल एक दुनिया जिसपर सौ वह्म-ओ-गुमान[1] गुज़रते हुए
वह घनघनाहटें लिफ़्टोंकी[2] रह रहकर चढ़ते उतरते हुए
अरबों खरबोंके कारबार दिन रात बिगड़ते सँवरते हुए
हम डालर देसको देख आये हम डालर देसको देख आये

(४)

भक्तोंको सुनाई दे जाती है गिरधरकी मुरलीकी भनक
ज़िन्दानोंमें[3] रह रहकर क़ैदी सुनते हैं ज़ंजीरोंकी छनक
कान आहट पर रखकर प्रेमी सुन लेते हैं नूपुरकी झनक
दिलकी धड़कनसे आती है हर कानमें याँ डालरकी खनक
हम डालर देसको देख आये हम डालर देसको देख आये

(५)

बाजे गाजेका राग भी है और बाल डान्सका[4] रंग भी है
ईजादोंकी भरमार भी है, विज्ञान, कला, गुन ढंग भी है
कुछ दान पुन्नका स्वाँग भी है, उपदेश पाठ सत्संग भी है
और इनके अलावा भी कुछ बातें हैं जिनसे दुनिया दंग भी है
हम डालर देसको देख आये हम डालर देसको देख आये

---

[1]खयाल विचार [2]बिजलीसे चढ़ने-उतरनेवाली मशीन [3]जेलों
[4]अंगरेज़ी नाच जिसमें औरत मर्द मिलकर नाचते हैं

(६)

दुनिया भरसे सट्टा बट्टा, दुनिया भरसे ब्योपार भी है
दुनिया भरपर है दया भाव, दुनिया भरपर उपकार भी है
सबके हक़का दल्लाल भी है, आज़ादीका ठीकेदार भी है
इस सेवा भावके सदक़ेमें दुनियाका बंटाधार भी है
हम डालर देसको देख आये हम डालर देसको देख आये

(७)

स्कूलों कालिजों यूनिवर्सिटियोंकी न वहाँ क़िल्लत[1] न कमी
वह तहरीरोंकी नोक झोंक तक़रीरोंकी गरमा गरमी
वह लेक्चर हालोंकी भीड़ भाड़ वह पार्टियोंमें घमाघमी
दुनिया भरकी ऐसी तैसी वह राजनीतमें हठ धरमी
हम डालर देसको देख आये हम डालर देसको देख आये

(८)

वह हालीवुडका परिस्तान वह फ़िल्मोंकी झलका झलकी
वह नर्म गुलाबी मुस्कराहटें आँखोंमें हलकी हलकी
वह नोक पलक वह हर मूरत जोबन रससे छलकी छलकी
वह ऐक्टरोंकी लपक झपक वह ऐक्ट्रेसें छलबल कलकी
हम डालर देसको देख आये हम डालर देसको देख आये

(९)

वह बहरी बेड़े[2] जल थल जोतके रख देनेके चक्करमें
वह वायुयान मँडलाते हुए आकाशोंके भवसागरमें
वह उड़न क़िले जो अंगारे बरसा जायें दुनिया भरमें

---

[1]कमी [2]समुन्दरी बेडे

वह बम्बारोंके[1] दल बादल जो आग लगा दें घर घरमें
हम डालर देसको देख आये हम डालर देसको देख आये

(१०)

वह भारी टैंक जो हफ़्तख़्वान[2] तय कर डालें बेख़ौफ़-ओ-ख़तर
वह आर्टिलरी[3] फ़ौलाद आगका बढ़ता हुआ गहन गिरिवर
वह तोपें जिनकी बाढ़ोंसे बन जायँ चटानोंमें सरोवर
वह दुनिया भरकी मौतका सामाँ आफ़त ग़ारत फ़ितना-ओ-शर[4]
हम डालर देसको देख आये हम डालर देसको देख आये

(११)

दुनिया भरको बरबाद करे दुनिया भरका निर्माता भी
दुनिया भरका विद्रोही भी दुनिया भरका निज भ्राता भी
दुनिया भरको भूखा मारे दुनिया भरका अन्नदाता भी
दुनिया भरमें ख़ैरात करे दुनिया भरपर ललचाता भी
हम डालर देसको देख आये हम डालर देसको देख आये

(१२)

इस देसमें डालरके सेठोंके दिलकी कली कब फूटती है
जब उनकी तिजारत दुनिया भरको एक भावसे लूटती है
रुपयेमें तीन अठन्नी भुनानेकी आदत कब छूटती है
सोनेपर सोना गिरता है मायापर माया टूटती है
हम डालर देसको देख आये हम डालर देसको देख आये

---

[1]बम बरसानेवाले [2]रुस्तमको उसकी बहादुरीका इम्तहान लेनेके लिये, सात कठिनसे कठिन काम सौंपे गये थे [3]तोपखाना [4]ख़राबी, बरबादी

(१३)

रिशवत धमकी और क़त्लसे भी याँ अपना काम चलाते हैं
लिन्चिग क्या है गोरे मिलकर हबशियोंको ज़िन्दा जलाते हैं
इन जुर्मोंमें याँ बड़े बड़े सज्जनगन हाथ बटाते हैं
और इस कोढ़ी तहज़ीब पै ये इस दरजा नाज़ फ़रमाते हैं
हम डालर देसको देख आये हम डालर देसको देख आये

(१४)

इस गैंग्स्टर[१] तर्ज़े-ज़िन्दगीसे अब दुनिया भरको ख़तरा है
इस गैंग्स्टर राजनीतसे अब दुनियामें क़ियामत बरपा है
इस गैंग्स्टर चील झपट्टेने सारे संसारको लूटा है
इस गैंग्स्टर सट्टे बट्टेने दुनियाको नरक बनाया है
हम डालर देसको देख आये हम डालर देसको देख आये

(१५)

ए के मानी हैं ऐटम बम, एच का मतलब हाइड्रोजन बम
बच्चोंके ककहरोंको देखो खुल जायगा सारा भेद भरम
स्कूलों घरों दफ़्तरों बाज़ारोंमें मचा है एक उधम
ले देके यहाँ वालोंके लिए बस मारकाट है धरम करम
हम डालर देसको देख आये हम डालर देसको देख आये

(१६)

आज़ादी दया धरम इन्साफ़की इस तकज़ीबको[२] क्या कहिये
यू. एन. ओ.में "आज़ाद" ग़ुलामोंकी तरतीबको क्या कहिये
इन्सानी कारबारमें शैतानी तरकीबको क्या कहिये

[१]लुटेरों, डाकुओंके गरोहसे सम्बन्ध रखनेवाले [२]तक़ज़ीब=झुटलाना

जो इस ले रहती दुनियाको ऐसी तहज़ीबको क्या कहिये
हम डालर देसको देख आये हम डालर देसको देख आये

(१७)

याँ लोग हैं अपने अपने लिये याँ कोई किसीका हुई नहीं
यह बात कानमें पड़ी नहीं यह ख़बर उन्होंने सुनी नहीं
तारीख़ उस मोड़ पै है कि जहाँ गुंजायश इसकी रही नहीं
जो काम करें वह भूखों मरें बेकारोंकी कोई कमी नहीं
हम डालर देसको देख आये हम डालर देसको देख आये

(१८)

कुल इन्सानोंको चन्द इनसान मोल ले लें बेदाम दरम
इनसान इन्सानका साथी है इनसान इनसानका है हमदम[१]
इसको ये बताते हैं धोखा यह कहते हैं इसको महाभरम
ख़ुदग़रज़ी इस तहज़ीबकी जड़ बेदर्दी बुनियादे-महकम[२]
हम डालर देसको देख आये हम डालर देसको देख आये

(१९)

दुनिया भरका ब्योपार मिटाकर ख़ुद ब्योपारी बन बैठा
सच्ची झूटी मूरत गढ़कर दुनियाका पुजारी बन बैठा
इनसाँको[३] सुअरोंका चारा देकर भंडारी बन बैठा
बन्दरको मिली हलदीकी गिरह फ़ौरन पंसारी बन बैठा
हम डालर देसको देख आये हम डालर देसको देख आये

---

[१]साथी [२]मज़बूत नीव [३]माइलो=एक बहुत घटिया अनाज जो अमरीकामें सुअरोंको खिलाया जाता है। हिन्दुस्तानमें अनाजकी कमी पूरी करनेके लिये करोड़ों रुपयेका माइलो अमरीकाने भेजा है

(२०)

सरसे क़दम तक मोहलिक हरबे[1] एक सिपाही सौ हथियार
यह दुनियाका पालनहार यह तहज़ीबका ठेकेदार
टैंक तोप बारूद बनाना उसका सबसे बड़ा ब्योपार
नक़दी लेकर मौत बेचना सबसे चोखा कारोबार
हम डालर देसको देख आये हम डालर देसको देख आये

(२१)

गर बातें इनकी बन जायें गर घातें इनकी चल जायें
दुनियाको साफ़ निगल जायें, धरती पै हकूमत फ़रमायें
इस देसके करता धरता अपना काम जो पूरा कर पायें
दुनिया भरपर एक रोज़ सितारे और धारियाँ लहरायें
हम डालर देसको देख आये हम डालर देसको देख आये

(२२)

वह वाल-स्ट्रीटका सट्टा खाना व्हाइट हाउसका साज़िश घर
वह दल्लालीके दाँव-पेच वह डिप्लोमेसीके छू मंतर
वह लूटालूट तिजारतमें वह प्रजातंत्रका आडम्बर
वह लेन देनकी धूमधाम वह राजनीतिकी अगर मगर
हम डालर देसको देख आये हम डालर देसको देख आये

(२३)

इस वाल-स्ट्रीटमें दुनियाका दीवाला बोला जाता है
जो लुटवा दे जो बिकवा दे वह खाता खोला करता है
इस व्हाइट हाउसमें सबकी दुखती रगोंको टटोला जाता है

---

[1]घातक हथियार

सरकारों मुल्कों क़ौमोंको काँटोंमें तोला जाता है
हम डालर देसको देख आये हम डालर देसको देख आये

(२४)

उस देसमें सबसे बड़ा अपराध है चीन रूससे हमदर्दी
इससे भी बड़ा जुर्म है अम्ने-आलमका[१] होना हामी[२]
और ऐटम बमके ख़िलाफ़ तो जिसने भूलेसे एक बात कही
उसने तो बैठे बिठाए मोल एक आफ़त अपने सर ले ली
हम डालर देसको देख आये हम डालर देसको देख आये

(२५)

सोलह करोड़में एक करोड़को मज़दूरी या काम नहीं
यानी कमसे कम तीन करोड़को[३] चैन नहीं आराम नहीं
यह आलम है तो कैसे कहिये जीना उन पै हराम नहीं
जीवनका सहारा टूट चला है सुबह नहीं या शाम नहीं
हम डालर देसको देख आये हम डालर देसको देख आये

(२६)

यह सब मुजस्समा[४] आज़ादीका देखते होंगे किस दिलसे
यह महास्मारक[५] देखके आँसू पीते होंगे किस दिलसे
आज़ादीका दिन भूखे नंगे मनाते होंगे किस दिलसे
यह मरते होंगे किस दिलसे ये जीते होंगे किस दिलसे
हम डालर देसको देख आये हम डालर देसको देख आये

---

[१]विश्व शान्ति [२]समर्थक [३]एक करोड़ बेरोज़गारोंके बाल बच्चे मिलकर कमसे कम तीन करोड़ होंगे [४]मूरत [५]महा स्मारक

(२७)

विज्ञानकी चंचल उँगलियोंने बिजलीकी रगोंको छेड़ा है
आकाशोंमें इस उड़ती हुई नागिनके फनोंको छेड़ा है
चिरअन्धकारके सागरकी बेकल लहरोंको छेड़ा है
जो फूँकके रख दें जल थलको ऐसी किरनोंको छेड़ा है
हम डालर देसको देख आये हम डालर देसको देख आये

(२८)

लोहे बिजलीको बसमें किया खुदको बसमें ला ही न सकी
इनसानको काममें लाई मगर इनसानके काम आ ही न सकी
हाथोंको गरमाया लेकिन सीनोंको गरमा ही न सकी
यह बटन दबानेवाली सभ्यता दिलका बटन पा ही न सकी
हम डालर देसको देख आये हम डालर देसको देख आये

(२९)

बम ढालनेवालोंको मानवताके साँचेमें ढलना आये
इन बेचैनोंको विश्व-शान्तिकी गोदीमें पलना आये
मँडलाती हुई इस तीसरी जंगकी आईको टलना आये
ऐ काश ज़मींपर इनसानोंको सहज सहज चलना आये
हम डालर देसको देख आये हम डालर देसको देख आये

रोटियाँ

ऐसे लोगोंकी संख्या थोड़ी नहीं है जो मार्क्सवाद और मार्क्सवादके आधारपर रूस और चीनमें जो महाक्रान्तियाँ हुई हैं और जो नई सभ्यता स्थापित हुई है उसके सम्बन्धमें यह शंका करते हैं कि यहाँ खाने-कमानेके अतिरिक्त जीवनका कोई ऊँचा आदर्श नहीं है। ऐसे लोग यह सोचना भूल जाते हैं कि दुनियाकी एक तिहाई आबादी सदियोंकी अत्याचारपूर्ण प्रथा और संसार भरकी स्वार्थी और शोषक शक्तियोंपर बिना नैतिक बल और आत्मबलके विजय-प्राप्त नहीं कर सकती थीं। परस्पर शोषण मिटाकर और किसी दूसरी जातिको ग़ुलाम बनाये बग़ैर दुनियाकी एक तिहाई आबादीका अपनेको सम्पन्न बनाना और दुःख-दारिद्रयको दूर कर देना मामूली नैतिक या आत्मिक कारनामा नहीं है। विज्ञान, दर्शन, साहित्य और समस्त कलाएँ और विद्याएँ प्राप्त किये बिना साधन और तपस्याके बिना ज़िन्दगीके रेगिस्तानको लहलहाता हुआ बाग़ नहीं बनाया जा सकता। आज चीन और रूस एक विराट नैतिक शक्ति न होते तो अब तक साम्राज्यवादियोंने तीसरा महायुद्ध छेड़ दिया होता।

चीन और रूसने क्या किया और हम क्या कर रहे हैं इस अन्तरको इस कवितामें दर्शाया गया है। मुफ़्तख़ोरके लिए रोटियाँ भले ही तुच्छ हों लेकिन करोड़ों श्रमजीवियोंको रोटियाँ मिलना एक ऐसा महान रहस्य है जिसमें सभ्यता और संस्कृतिके समस्त मान झलकते हुए नज़र आयेंगे।

तू कहता है रोटी ही सब कुछ नहीं है
अटल तेरा रूहानियतपर[1] यक़ीं है
वहाँ आत्मसिद्धी धरम है न दीं है
रशा चीनमें नूरे-इरफ़ाँ[2] कहीं है

---

[1]अध्यात्मवाद [2]ज्ञानका प्रकाश

तू कहता है वाँ आदमीयत नहीं है
मुहब्बत नहीं है शराफ़त नहीं है
वहाँ ज़िन्दगीकी लताफ़त नहीं है
बड़ी चीज़ोंकी क़द्रो क़ीमत नहीं है

न आला ख़याली न शाने जमाली[1]
न विजदानियत[2] नै हक़ीक़तशनासी[3]
कमी है वहाँ आज रूहानियतकी
वहाँ कुछ अगर है तो रोटी ही रोटी

मगर तूने रोटीका मतलब भी समझा
कभी इसका रूहानी पहलू भी समझा
कभी तूने रोटीकी क़ूवतको[4] जाँचा
कभी तूने रोटीकी अज़मतको[5] परखा
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

यही चीन और रूस है बात कलकी
थे वो देस शरमाते जिनसे नरक भी
न इज़्ज़त न दौलत न कपड़ा न रोटी
न इल्म और हिकमत[6] दिया था न बत्ती
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

इधर ज़िन्दगी ख़ाक-ओ-ख़ूँमें नहाती
उधर मुँह पै थीं मक्खियाँ भनभनाती

[1]सौंदर्यका अनुराग [2]रसोत्तीर्ण होना [3]सत्यको पहचानना
[4]शक्ति [5]महानता, बड़ाई [6]पांडित्य

यहाँ ज़ीस्त[1] ठोकर पे ठोकर थी खाती
न जीते बन आती न मरते बन आती
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

यहाँ ज़िन्दगी मौतसे भी थी बदतर[2]
बनाया था नाकामियोंने यहाँ घर
यहाँ हर मरज़ने जमाया था बिस्तर
हुआ जाता था हाल अबतरसे अबतर
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

ये थी भिक्षुकों पादरियोंकी दुनिया
ये थी बेबसों भूखे नंगोंकी दुनिया
नशेबाज़ों अफ़्यूनचीयोंकी दुनिया
जहालत फ़लाकत[3] के मारोंकी दुनिया
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

तू इन इनक़लाबोंका मतलब भी समझा
जिन्होंने वहाँकी पलट दी है काया
जिन्होंने वहाँ रुख़ ज़मानेका बदला
पलक मारते पाप जनमोंका काटा
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

ख़बर है वहाँ क्या किया आदमीने
लेनिन,[4] स्तेलिन[5], माओकी[6] रहबरीने

---

[1]जीवन [2]बुरी दशामें [3]दरिद्रता [4]रूसी क्रान्तिके महान अगुआ लेनिन [5]नए रूसके निर्माता स्टालिन [6]नए चीनके नेता माओ-ज़े-तुंग

तुझे यह भी नादाँ बताया किसीने
लिये हैं जो पलटे वहाँ ज़िन्दगीने
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

वहाँ ज़िन्दगी आज रोती नहीं है
वहाँ आज तक़दीर सोती नहीं है
वहाँ मौतकी जीत होती नहीं है
हयात[१] अपना मुँह ख़ूँसे धोती नहीं है
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

चमनज़ार बंजर ज़मींको बनाना
करोरों बिघे खेतियाँ लहलहाना
जहाँ मौत उगे, ज़िन्दगी वाँ उगाना
तू सोचे तो विजदानका[२] है ख़ज़ाना
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

रियाज़त[३] मशक़्क़तसे मिलती है रोटी
बड़े इल्म-ओ-हिकमतसे मिलती है रोटी
सदाक़त[४] शराफ़तसे मिलती है रोटी
बहुत पाक मेहनतसे मिलती है रोटी
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

ज़बरदस्त इख़लाक़ी क़ुवत[५] है रोटी
ज़बरदस्त रूहानी अज़मत[६] है रोटी

---

[१]जीवन [२]रसकी उपलब्धि [३]तपस्या [४]सच्चाई [५]नैतिक शक्ति [६]आध्यात्मिक महानता

इबादत तरीक़त,[1] तहारत[2] है रोटी
शरीअत[3] है रोटी, हक़ीक़त है रोटी
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

मिले चन्द ही को तो लानत है रोटी
जो महँगी मिले तो मुसीबत है रोटी
न सबको मिले तो ज़लालत[4] है रोटी
जो सबको मिले ऐन रहमत[5] है रोटी
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

है इससे कोई धर्म आदर्श बढ़कर
करोरों ही आज़ाद इन्सान मिलकर
जहालत अदावत मुसीबत दलिद्दर
मिटा दें ज़मानेसे इन सबको यकसर
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

जहाँ भाईके मुँहसे रोटी न छीनें
जहाँ मिलके पैदा करें मिलके खायें
जहाँ रोटियाँ प्रेम ही का सबक़ दें
जहाँ रोटियाँ जगमगाती हैं रूहें
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

वहाँ रोटियाँ हैं तरक़्क़ीका परचम
वो हैं चाँद सूरजसे बढ़कर चमाचम

---

[1]धर्माचार [2]निर्मलता [3]धर्मके नियम [4]घृणितवस्तु [5]कृपा

वो दुनियाकी सब नेकियोंका है संगम
वो है खाली खूली कथाओंसे उत्तम
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

ज़रा सोच तो इसकी रूहानियतको
करोरोंको एक सूतसे बाँध दे जो
जो रोटी तमद्दुनकी[१] रूह-ओ-रवाँ[२] हो
तअज्जुब है तू हेच[३] कहता है उसको
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

है मामूली इख़लाक़के बससे बाहर
ज़मीन-ओ-ज़माँके[४] चमक जायें जौहर
बनायेंगे धरतीको जन्नतसे बढ़कर
न गीता, न क़ुरआँ,[५] न वेदोंका मन्तर
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

जो इन्सानको पस्तियोंसे उभारे
जो बिगड़ी हुई क़िस्मतोंको सँवारे
जो हर ख़ूबिए-ज़िन्दगीको निखारे
वह मामूली ख़ूबी है ओ मतके मारे
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

वहाँ तीरथ-ओ-हज है खेतोंमें जाना
तवाफ़े-हरम[६] ट्रैक्टरका चलाना

---

[१]संस्कृति [२]प्राण और आत्मा [३]तुच्छ, हीन [४]धरती और युग
[५]मुसलमानोंकी धार्मिक पुस्तक [६]काबेकी परिक्रमा

है मक्का मदीना हरेक कारख़ाना
पसीनेमें तर होना गंगा नहाना
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

दिलोंमें वहाँ दर्दे-इन्सानियत है
ख़यालातमें शाने-विजदानियत है
हथौड़ेमें हँसियेमें इर्फ़ानियत[1] है
वहाँ हर अमल ऐन रूहानियत है
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

करोरोंके किरदार[2] जब तक न सुधरें
गढ़ेसे जहालतके जब तक न उभरें
मशक़्क़तकी मंज़िलसे जब तक न गुज़रें
तो चेहरे भी खा पीके हरगिज़ न निखरें
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

करोरोंको जाहिलसे क़ाबिल बनाया
गँवारोंको हर इल्म-ओ-हिकमत सिखाया
मशीनोंके कल पुर्ज़ोंका गुर बताया
दिमाग़ अनगिनत उँगलियोंमें बसाया
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

उन्हें कारख़ानोंका मालिक बनाना
जो थे ख़ाली हाथ उनको सब कुछ दिलाना
जो सोई थीं उन शक्तियोंको जगाना
है कुछ ऐसी रूहानियतका ठिकाना
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

---

[1]ज्ञान [2]चरित्र

उदासी मिटाई निराशा मिटाई
ग़रीबी मिटाई कमाई बढ़ाई
महीनोंमें सदियोंकी बिगड़ी बनाई
करोड़ों दिलोंकी तमन्ना बर आई
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

अदबमें ख़ुलूस-ओ-सदाक़तके[1] जज़्बे
फ़नोंमें तहारत लताफ़तके जज़्बे
ख़यालातमें वो शराफ़तके जज़्बे
मुहब्बतके जज़्बे, शुजाअतके[2] जज़्बे
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

ड्रामा सिनेमा बैलेट ऑपराको
निरत और संगीतकी साधनाको
उधर जगमगाता है हर विद्याको
कहाँसे कहाँ ले गये हर कलाको
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

सुनहरी खड़ी खेतियोंसे मुहब्बत
पहाड़ोंसे और वादियोंसे मुहब्बत
जवानोंकी सरगर्मियोंसे मुहब्बत
वो बच्चोंकी मासूमियोंसे मुहब्बत
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

कई काम वो जो समझमें न आते
लगें मुद्दतें सीखते और सिखाते

[1]सहृदयता और सच्चाई [2]बहादुरी

जमाना गुज़र जाय जिनको बनाते
उन्हें कर दिखाया है चुटकी बजाते
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

वो घर फूंकना हो कि चोरी कि डाका
वो हो फ़ौजदारी कि आपसका झगड़ा
कि हो और जुर्मोंका अन्धेर खाता
वहाँ और देशोंसे कम पाइयेगा
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

वहाँ जेलखानोंमें हैं जितने क़ैदी
कहीं औरके क़ैदियोंसे हैं कम ही
जो चोरी छिपे जुर्म होते हैं वो भी
वहाँ कमसे कम अब है तादाद उनकी
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

कभी तूने तादाद भी उनकी सोची
घरों अस्पतालोंमें हैं जितने रोगी
वो हैं रूस और चीनमें कम बहुत ही
है अमरीकामें उनकी तादाद लम्बी
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

जो गिनती है हर मुल्कमें पागलोंकी
बढ़ी जिस क़दर है दिमाग़ी ख़राबी
दिखाती है रूहानियतकी तरक़्क़ी
कि तहज़ीबकी खोल देती है क़लई
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

वहाँ मारा मारा नहीं कोई फिरता
वहाँ वक़्त अनमोल है आदमीका
नहीं उनको बेरोज़गारीका खटका
जनम सिद्ध अधिकार है काम करना
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

करोरोंकी हँसीयतोंको बढ़ाना
करोरोंको तहज़ीबके गुर सिखाना
करोरोंका किरदार ऊँचा बनाना
ये इन्सानको जानवर है बनाना
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

उधर हिटलर आया था ज़ोर आज़माने
इधर च्यांग[1]-ओ-अमरीका क़िसमत लड़ाने
लगा देना इन दुश्मनोंको ठिकाने
ये मामूली रूहानियत है दिवाने
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

अटल शान्तिका आन्दोलन उठाया
हमें मार्ग अम्न-ओ-अमाँका दिखाया
सबक़ लोकसंग्रहका हमको पढ़ाया
तपोबलसे अपने जहाँको बचाया
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

हम इन्साँको दुनियामें रोने न देंगे
बिलखकर उसे जान खोने न देंगे

---

[1]च्यांग काई शेक

तमद्दुनका बेड़ा डुबोने न देंगे
हम अब तीसरी जंग होने न देंगे
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

खिले बाग़में क्यों गरेबाँ न फाड़ें
न क्यों रूस और चीन पर जान वारें
हमें हाथ आयें जो उनकी बहारें
उठाकर कलेजेमें हम उनको रख लें
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

ज़मानेकी कुछ दास्ताँ सुन चुका तू
रख अब दोनों आदर्श पहलू-ब-पहलू
तेरे हाथों इन्साफ़की है तराज़ू
पड़े फ़र्क़ क्यों तोलनेमें सरे-मू[1]
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

अभी तूने दोनोंको मीज़ाँमें[2] तोला
खुला भेद आख़िर सुबुक[3] और गराँका[4]
तू ख़ुद देख ले किसका भारी है पल्ला
बता दे ज़रा कौन पड़ता है हल्का
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

इन्हींने नई क़ूवतोंको उभारा
इन्हींने नई जिन्दगीको सँवारा

---

[1]बाल बराबर [2]तराज़ू [3]हलका [4]भारी

इन्हीं दोनों देशोंका लेकर सहारा
गगन खेलती जाय जीवनकी धारा
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

निगाहें ज़मानेकी आज उठ रही हैं
पर्वे एक नई सुबहकी फूटती हैं
इन्हींसे हरेककी उमीदें बँधी हैं
लवें रूसियों चीनियोंसे लगी हैं
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

लेनिन स्तेलिन माओने जो किया है
वो 'आज़ाद' भारतमें कब हो सका है
उधर रूस और चीनका दबदबा है
इधर हिन्द सदियोंसे झक मारता है
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

यहाँ मौतका घर बलाओंका डेरा
अँधेरा अँधेरा अँधेरा अँधेरा
वहाँ ज़िन्दगी रौशनीका बसेरा
सवेरा सवेरा सवेरा सवेरा
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

कुछ अब उनके जीवनका तू भेद समझा
असर चीन और रूसका तूने देखा
ये तेरी समझमें हो अब शायद आया
है गुर माद्दीयतमें[1] रूहानियतका
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

---

[1]भौतिकवाद

जो गिरतोंको देकर सहारा सँभाले
जो हैं अधमरे उनको फिरसे जिला ले
ये काम ऐसे वैसे नहीं होनेवाले
ये करनेकी विद्या है ओ भोलेभाले
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

तुझे ख़ूब आता है बातें बनाना
गढ़ा तूने रूहानियतका बहाना
कम्यूनिज़्मको बरबरीयत बताना
रहे याद अब टल गया वह ज़माना
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

मुसीबत जो हिन्दोस्ताँपर पड़ी है
मिटा दे इसे आज ऐसा कोई है
न हमको ख़ुशी है न तुमको ख़ुशी है
हमारी तुम्हारी कोई ज़िन्दगी है
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

न कर झूठी रूहानियतकी बड़ाई
उसीने तो हमको ग़ुलामी सिखाई
उसीने तो सबको लँगोटी बँधाई
उसीने तो मिट्टी ठिकाने लगाई
ये माना कि रोटी ही हब कुछ नहीं है

उसीने तो अक़्लों पै परदे गिराए
उसीने तो धोखे पै धोखे खिलाए
उसीने ज़मानेके हर ज़ुल्म ढाए
उसीने तो भारतको ये दिन दिखाए
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

उसीने तो भारतको पोंगा बनाया
हरेकने हमें उँगलियोंपर नचाया
ज़मानेसे नाम-ओ-निशाँ तक मिटाया
ये रूहानियत है कि सब कुछ गँवाया
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

उसीसे तो अब तंग है अपनी हुलिया
उसीने तो हमको कहींका न रक्खा
उसीसे जनमभूमका है ये नक़्शा
कि पहिने है बुढ़िया चटाईका लहँगा
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

उसीने कफ़न ज़िन्दगीके सिये हैं
उसीसे तो मर मरके अब तक जिये हैं
उसीने कुएँ सबको झँकवा दिये हैं
ज़मानेने गिनगिनके बदले लिये हैं
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

उसीने चने नाकों चबवा दिये हैं
उसीसे तो जीनेके लाले पड़े हैं
उसीसे तो हम आज तक झींखते हैं
उसीसे तो हम जीते जी मर गये हैं
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

उसीने तो आठ आठ आँसू रुलाया
मज़ा मौतका ज़िन्दगीमें चखाया
उसीने तो भारतको कँगला बनाया
उसीसे तो दौलतने ठेंगा दिखाया
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

जो मुर्दोंकी नींद आदमीको सुलाये
गढ़ेमें जो इस तरह हमको गिराये
जो इस तरह मिट्टीमें हमको मिलाये
ख़ुदा ऐसी रूहानियतसे बचाये
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

दुहाईसे कब अच्छी क़िस्मत मिली है
कहीं रोने-धोनेसे इज़्ज़त मिली है
कथा बाँचनेसे हुकूमत मिली है
कहीं रामचर्चासे दौलत मिली है
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

ज़मानेको सोचा बिचारा नहीं है
ज़मानेसे बचकर गुज़ारा नहीं है
ज़मानेके हाथोंसे चारा नहीं है
ज़माना हमारा तुम्हारा नहीं है
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

न खेत और बाग़ अपने अब लहलहे हैं
न उद्योग धंधे में कुछ कर सके हैं
ज़मानेमें हम सबसे पिछड़े हुए हैं
टकेको हमें अब नहीं पूछते हैं
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

गया याँसे अँगरेज़ लेकिन गया क्या
यहाँ कर गया ऐसा अँधेरखाता
दलालोंने उसके हमें करके रक्खा
ग़ुलाम आज उसी जानलेवा प्रथाका
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

हुकूमतमें अँगरेज़ ही की दलाली
तिजारतमें अँगरेज़ ही की दलाली
ज़राअतमें[1] अँगरेज़ ही की दलाली
सियासतमें[2] अँगरेज़ ही की दलाली
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

वह रोटीका रोना वह कपड़ोंका रोना
क़यामत है लाखों करोरोंका रोना
था कल तक तो क़िस्मतसे ग़ैरोंका रोना
मगर आज है आह ! अपनोंका रोना
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

वो पन्द्रह अगस्त आई इस गड़बड़ीमें
कि दुबिधासी पैदा हुई सबके जीमें
उठी लहरसी हिन्दकी जिन्दगीमें
उबाल आए जिस तरह बासी कढ़ीमें
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

स्वराज आज है एक ख़ूनी फ़साना
स्वराज आज हर ज़ुल्मका है बहाना
हमारा नहीं कांग्रेसमें ठिकाना
हमें साथियो है बहुत दूर जाना
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

जो काम आज हिन्दोस्ताँमें है होना
न टाटाके बसका न बिरलाके बसका

---

[1]खेती [2]राजनीति

न होगा कभी राजरिशियोंसे पूरा
न गीता प्रेसके गरंथोंसे होगा
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

न वो आश्रमों और डेरोंसे होगा
न वो ठेकेदारों लुटेरोंसे होगा
न हेरोंसे होगा न फेरोंसे होगा
न वो काँग्रेसके सँपेरोंसे होगा
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

न वेदोंके युगको बुलानेसे होगा
न मंत्रोंका जादू जगानेसे होगा
न संध्या हवन और न गानेसे होगा
न शंख और डमरू बजानेसे होगा
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

यहाँ देवपूजाकी चलती नहीं है
नमाज़ोंकी याँ दाल गलती नहीं है
मुसीबत कथाओंसे टलती नहीं है
दुआओंसे दुनिया बदलती नहीं है
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

ये बातें हैं ऐ दोस्त बीते दिनोंकी
ख़ुशामद थी जब देवों और देवियोंकी
कहाँ तक करें याद अगले जुगोंकी
न ले डूबे हमको ये रौ माज़ियोंकी[1]
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

[1] अतीतकी अन्ध पूजा

बुज़ुर्गोंके काम ऐसे वैसे नहीं हैं
हम उन कारनामोंको भूले नहीं हैं
मगर लोग इसको समझते नहीं हैं
है माज़ी हमारा हम उसके नहीं हैं
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

ज़माना ये हरि-कीरतनका नहीं है
कि ये ज़िन्दगी रासलीला नहीं है
मुक़द्दर बदलना तमाशा नहीं है
कथा सतनरायनकी दुनिया नहीं है
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

बड़े बोलकी पड़ गई है जो आदत
बमकते हैं हम पाके सपनेमें दौलत
जो महसूस कर पायें भारतकी दुर्गत
तो खुल जाय रूहानियतकी हक़ीक़त
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

बनाया है याँ कालने दायमी घर
अगर माँगें रोटी तो पाते हैं पत्थर
ये हालत दिगरगूँ[1] ये सूरत फटीचर
टुकाची ये रूहानियत है सरासर
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

दिशाशूल इधर ज्योतिषीने पुकारा
उधर दह्रिये[2] तोड़ लाते हैं तारा

---

[1]दुर्दशा [2]नास्तिक

क़दम बह्र-ओ-बरपर[1] जवानोंने मारा
अभी देखें रूहानियाँ[2] इस्तखारा[3]
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

कहीं झाड़ और फ़ूँकमें सत नहीं है
कोई शाहजीमें करामत नहीं है
जहाँ मंतरोंकी तिजारत नहीं है
दुआए-बरहमनमें बरकत नहीं है
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

इबादतने क़िस्मत बनाई नहीं है
दुआओंने दौलत दिलाई नहीं है
ये चीज़ इस तरह हाथ आई नहीं है
कि वो फ़ातिहेकी[4] मिठाई नहीं है
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

जो पढ़ते थे वेदोंके मंतर लहकके
वो इस दौरमें रह गये हक्के-बक्के
हुआ बस ये रूहानियतसे चिपकके
ग़ुलामी मिली क़ौमको—ले लपकके
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

अरे तुझ पै ये आशकारा नहीं है
कि बे इनक़लाब अब गुज़ारा नहीं है
बरन वर्गका याँ सहारा नहीं है
तरक़्क़ी किसीका इजारा नहीं है
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

---

[1]समुद्र और धरती [2]अध्यात्मवादी [3]सगुन विचारना [4]नज़्र नियाज़

जो कुछ रूस और चीनने कर दिखाया
तरक़्क़ीका जो राज़ उन्होंने बताया
अगर उसका हमपर भी पड़ जाय साया
तो पलमें पलट जाय भारतकी काया
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

सुधर जायगी सरबसर अपनी हालत
सँवर जायगी हिन्दकी आदमीयत
नई ज़िन्दगीकी मिलेगी हरारत[1]
चमक जायगी नौनिहालोंकी क़िसमत
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

ज़रा हिन्दमें रुख़ हवाओंका देखो
जो मुमकिन हो तो वक़्तकी नब्ज़ परखो
वो हो जेल गोली हो फाँसी हो जो हो
यहाँ इनक़लाब आया आया ही समझो
ये माना कि रोटी ही सब कुछ नहीं है

वो लहरें यहाँ ज़िन्दगीकी उठेंगी
वो अमरितमें डूबी हवाएँ चलेंगी
फ़लकसे[2] फ़रिश्तोंकी आँखें पड़ेंगी
क़दम हिन्दके जन्नतें चूम लेंगी
तू कहता है रोटी ही सब कुछ नहीं है

---

[1]गर्मी [2]आकाश

दास्ताने आदम

आदर्शवादी या ईश्वरवादी मतमतान्तरोंके अनुसार आदिकाल हीसे धरतीपर अवतार, पैग़म्बर और ऋषिमुनि विचरते रहे हैं। वैज्ञानिक-विकासवाद यह सिद्ध कर चुका है कि आदिकालमें मनुष्य ज्ञान, शक्ति और सभ्यता सबसे वंचित था। मनुष्यकी दशा पशुओंसे भी बुरी थी सात-आठ लाख वर्षों तक मनुष्यके पास न आग थी, न लोहा, न भाषा, न रोटी, न कपड़ा, न सभ्यताके कोई और साधन। इस अर्ध पाशविक अवस्थाका चित्रण इस कविताके आरम्भमें हुआ है। विज्ञानकी रोशनीमें मनुष्यकी रामकहानी इस कवितामें सुनाई गई है।

क़र्नोंके[1] मिटानेसे मिटे हैं न मिटेंगे
आफ़ाते-ज़मानासे[2] झुके हैं न झुकेंगे
उभरे तो दबानेसे दबे हैं न दबेंगे
हम मौतके मारे भी मरे हैं न मरेंगे
हम जिन्दा थे हम जिन्दा हैं हम जिन्दा रहेंगे

गो बह्र-ओ-बर[3]-ओ-चर्ख़[4]-मिटाने पै तुले हैं
उभरे हुए कोहसारके[5] तेवर भी कड़े हैं
बेदर्द अनासिर[6] भी बहुत बिफरे हुए हैं
बन बनके मिटे जायेंगे मिट मिटके बनेंगे
हम जिन्दा थे हम जिन्दा हैं हम जिन्दा रहेंगे

---

[1]युगों [2]समयकी कठिनाइयों, मुसीबतों [3],[4]सागर, पृथ्वी, आकाश
[5]पर्वत [6]पंचभूत

तारीख़-ओ-तमद्दुनसे बहुत पहलेके अदवार[1]
बेतेग़-ओ-सिपर मौतसे वो जंग वो पैकार[2]
वो ग़ोले-बयाबाँ वो बहायम[3] कई ख़ूँख़्वार
ऐसेमें जिये हैं तो कभी हम न मरेंगे
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

वह शामे-बयाबाँ वो सियह-ख़ानए-दौराँ[4]
हम शशदर[5]-ओ-हैराँ व परीशाँ व हरासाँ
इक दिल था लरज़तासा चिराग़े तहेदामाँ[6]
क्योंकर हम असीराने-सितम[7] सुब्ह करेंगे
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

जो शाख़ लचकती है कड़कतीसी कमाँ है
जो चीज़ चमक जाती है इक नोके सिनाँ[8] है
एक एक किरन तारोंकी नागिनकी ज़बाँ है
हर लेहज़ा यही ख़ौफ़ कि अबके न बचेंगे
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

इन्सान है और चारों तरफ़ वादिये पुरख़ार[9]
पुरहौल मनाज़िरका[10] हो माहौले-शरर बार[11]

---

[1]दौर, युग [2]युद्ध [3]भूत-प्रेत और हिंसक पशु [4]अंधकारमय युग [5]चकित [6]आँचलके नीचे दीप, अर्थात् जिस दीपको हवासे बचानेके लिये आँचलसे छिपाया जाय [7]अत्याचारके बन्दी [8]तीर [9]काँटों भरी [10]भयानक दृश्यों [11]चिनगारी बरसाता वातावरण

वह बोलते सन्नाटे वो जिन्दाने-शबे-तार[१]
कमज़ोर हैं पर जब्रे-मशीयतसे[२] लड़ेंगे
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

इक अजनबी संसारके ये कोह-ओ-बयाबाँ
दरियाये-शबे-तारके उठते हुए तूफ़ाँ
वह उड़ते हुए अजदहे वो शामे-ग़रीबाँ
ज़ुलमत कदए-ग़ैरको मानूस[३] करेंगे
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

फ़ीलोंकी[४] वो चिंघाड़ वो शेरोंकी दहाड़ें
पड़ती थीं घटाटोप अँधेरेमें दराड़ें
रोती थी शबे-तार कहीं मारके धाड़ें
इन्सान तो क्या होश फ़रिश्तोंके उड़ेंगे
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

झक्कड़ वो हवाके वो फ़ज़ाओंकी डकारें
सहराये-शब और काँपते सायोंकी क़तारें
सहमे हुए इन्सांकी वो चीख़ें वो पुकारें
अफ़लाक[५] जिस इन्सानके क़दमों पै झुकेंगे
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

वह घोर अँधेरा जो ज़मानेको निगल जाय
वो रात भयानक दिले-अर्जुन भी दहल जाय

---

[१]कारागारकी अँधेरी रात [२]प्रकृतिके अन्यायों, ईश्वरकी इच्छासे होनेवाली ज़्यादतियों [३]अपरिचित अंधकारको अपनी चेतनासे हिला मिला लेंगे [४]हाथियों [५]आकाशों

वह शोर कि महवरसे[1] ज़मीं चीख़के टल जाय
जल थल चल अचल दश्त ओ जबल[2] काँप उठेंगे
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

कुछ पूछो न फ़ितरतका[3] जो बरताव था हमसे
हर लमहा फटे पड़ते थे सौ कोहे-अलमसे
दिलकी न बुझी शमअ़ कभी दामने-ग़मसे
हस्तीके निशात[4] अपनी मुरादोंसे पलेंगे
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

रोशन था इसी शमअ़से रातोंका अँधेरा
जाग उठते थे जब ग़ारोंमें हँसता था सवेरा
अफ़सुर्दा[5] दिल अफ़सुर्दा कुनद अनजुमने रा[6]
क़ुदरतके इक इक जौर पै हम ख़ूब हँसेंगे
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

ए रूहे-ज़मीं[7] रूहे-ज़माँ[8] रूहे-मकाँ[9] ख़ीज़[10]
ए जाने जहाँ[11] जाने जहाँ जाने जहाँ ख़ीज़
अज़[12] ख़्वाबेगराँ[13] ख़्वाबेगराँ ख़्वाबेगराँ ख़ीज़
हम शाहिदे-तारीख़को[14] बेदार करेंगे
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

---

[1]धुरी [2]जंगल पहाड़ [3]प्रकृति [4]जीवनके सुख [5,6]उदास दिल पूरी सभाको उदास कर देता है [7,8,9]धरती, आकाश और निवास स्थानकी आत्मा [10]उठ [11]दुनियाकी जान, संसारकी प्रेयसी [12,13]अज़=से, ख़्वाबे-गराँ=लम्बी नींदसे [14]इतिहासकी देवी

मनुष्य धीरे-धीरे बर्बर अवस्थासे उभर रहा है। प्रकृतिकी आत्मासे और अनेक प्राकृतिक शक्तियोंसे वह अपने बचाव और कल्याणके लिए अब प्रार्थना करने लगा है। ऋग्वेदके आरम्भिक मंत्र अब उसके होठोंपर काँपने लगे हैं। जंगलोंसे निकलकर मनुष्योंके छोटे-छोटे समूह भोंडे तरीक़ेसे अब खेती और पशु-पालन करने लगे हैं। अब मनुष्य मारा-मारा नहीं फिरेगा बल्कि धरतीपर बसना सीखेगा। जैसे-जैसे खेती तरक़्क़ी करेगी सभ्यता भी उगती जायगी और मानव-जीवन भी विकसित होता जायगा यहाँ तक कि मानव-जाति अब वर्गोंमें विभाजित होगा। मुट्ठीभर आदमियोंके हाथों सभ्यता फले फूले इस हेतु मनुष्योंकी बड़ी संख्या शूद्रत्व या गुलामीका जुआ अपने कंधोंपर रख लेगी। सामन्ती युग अपने पूरे चमत्कारके साथ उदय होगा।

जब दश्तनवरदीके[1] मनाज़िलसे बढ़ आये
गुर ख़ानाबदोशीको ज़राअतके[2] सिखाये
पुर अम्न सकूनतके लिये गाँव बसाये
कल अपने ही क़दमोंके तले शह्र उगेंगे
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

खेतोंको सँवारा तो सँवरते गये ख़ुद भी
फ़स्लोंको उभारा, तो उभरते गये ख़ुद भी
फ़ितरतको निखारा तो निखरते गये ख़ुद भी
नित अपने बनाये हुए साँचोंमें ढलेंगे
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

बेफ़ैज़िये-फ़ितरतका[3] न रोना है न धोना
मिट्टीकी ज़मीं भी तो उगलने लगी सोना

---

[1]जब मनुष्य जंगलोंमें रहता था [2]खेती [3]प्रकृतिके लाभ न पहुँचाने

सोई हुई धरतीको है कुछ और ही होना
मंजिलको जगा देंगे जहाँ पाँव धरेंगे
हम जिन्दा थे हम जिन्दा हैं हम जिन्दा रहेंगे

इन वादियोंको जिनमें नहीं बारिशे-रहमत
इन घाटियोंको जिनमें उड़े गर्दे-कदूरत[१]
इन खाड़ियोंको जिनमें नहीं बूए-लताफ़त[२]
हम अह्ले-ज़मीं[३] रूकशेफ़िर्दौस[४] करेंगे
हम जिन्दा थे हम जिन्दा हैं हम जिन्दा रहेंगे

अब वक़्तके सीनेमें चटकने लगीं कलियाँ
अब रंगपर आये हैं फ़ज़ाओंके गुलिस्ताँ
शबनमकी खनक, गुलकी दमक, सौतेहज़ारॉं[५]
हम ख़ुद ही गुल-ओ-बुलबुल-ओ-सय्याद बनेंगे
हम जिन्दा थे हम जिन्दा हैं हम जिन्दा रहेंगे

अलक़िस्सा ज़मानेको पड़ी इसकी ज़रूरत
बट जाय कई तबक़ोंमें इन्सानकी मिल्लत[६]
तहज़ीब बढ़े इसलिये वो जिनकी है कसरत
गर्दन पै जुवा बारे-ग़ुलामीका[७] धरेंगे
हम जिन्दा थे हम जिन्दा हैं हम जिन्दा रहेंगे

तबक़ोंका वो टकराव मफ़ादोंका तसादुम[८]
वो शाहिदे-तारीख़के सीनेका तलातुम

---

[१]बैरकी धूल [२]सुकुमारिता, कोमलता, पवित्रताकी गंध
[३]धरतीके निवासी [४]स्वर्ग समान, स्वर्गके बराबर [५]बुलबुलकी आवाज़
[६]गरोह, जाति [७]दासता के बोझका जुवा [८]टक्कर

आंखोंमें वो कुछ अश्क[1] वो होंटों पै तबस्सुम[2]
तफ़रीक़-ओ-तफ़ावुतसे[3] बहुत काम बनेंगे
हम जिन्दा थे हम जिन्दा हैं हम जिन्दा रहेंगे

तहजीबको परवान चढ़ाया है हमींने
तारीख़को हर दर्स[4] पढ़ाया है हमींने
सय्यारोंकी गर्दिशको बढ़ाया है हमींने
अब शम्स-ओ-क़मर[5] अपने इशारों पै चलेंगे
हम जिन्दा थे हम जिन्दा हैं हम जिन्दा रहेंगे

वीरानको ज़ीशान[6] बनाया है हमींने
धरतीको परिस्तान बनाया है हमींने
इन्सानको इन्सान बनाया है हमींने
"क्या क्या न किया इश्क़में क्या क्या न करेंगे"
हम जिन्दा थे हम जिन्दा हैं हम जिन्दा रहेंगे

सौ रंगसे दुनियाको हम आबाद करेंगे
हर गाम पै दुनिया नई ईजाद करेंगे
हम उसको सुहागिनकी तरह शाद[7] करेंगे
धरतीकी हमीं उजड़ी हुई मांग भरेंगे
हम जिन्दा थे हम जिन्दा हैं हम जिन्दा रहेंगे

सांचीके वो फ़नकार[8] अजंताके क़लमकार[9]
वो ताजमहल हुस्नका वो जादूए-बेदार

---

[1]आंसू [2]मुस्कान [3]भेद भाव [4]पाठ [5]सूर्य, चन्द्र
[6]शानदार, भव्य [7]प्रसन्न, आनन्दित [8]कलाकार [9]चित्रकार

अह्दे-क़ुतुबुद्दींका फ़लक-बोस[१] वो मीनार
दुनियाको इक आईनए-तहज़ीब करेंगे
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

अजदाद[२] हमारे थे सिधारे जो अदमको
हैं अब भी बनाये हुए माज़ीके भरमको
अफ़रीक़ामें ईरानमें या चीनमें हमको
ढूँढोगे तो उजड़े हुए खंडरोंमें मिलेंगे
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

जब मिस्रकी तहज़ीब पै मँडलायेगी ज़ुल्मत
साथ अपने चली जायेगी अहरामकी हुरमत[३]
हम इब्ने-बराहीम बसद कुल्फ़त व हसरत[४]
जब नीलकी वादीकी ज़मीं छोड़ चलेंगे
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

दुनियामें हैं कंगाल भी और अहले-दवल[५] भी
हैं ताकमें दोनोंहीके सय्यादे-अजल भी
दुनियाका है ये रंग तो क्या राजमहल भी
रातोंको कपिलवस्तुसे मुँह मोड़[६] चलेंगे
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

युनानकी मिटती हुई अज़मतका ज़माना
कुछ रोज़ोंमें हो जायेगी इक ख़्वाबे-शबाना

---

[१]गगनचुम्बी [२]पूर्वज [३]मिस्री पिरामिडोंकी इज़्ज़त [४]इब्ने-बराहीम=इबराहीमकी औलाद, फ़िरऔनके अत्याचारोंके कारण मूसाके अनुयाइयोंको नीलघाटी छोड़नी पड़ी थी। ये सब अपना पूर्वज इब्राहीम पैग़म्बरको मानते हैं [५]धनवान [६]महात्मा बुद्ध

जब मौतका वो ढूँढ रही होगी बहाना
एथेन्सके ज़िन्दानमें हम ज़ह्र[१] पियेंगे
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

जब रूमकी तहज़ीब ज़मानेमें तपेगी
जब सीनए-जमहूरमें इक आग लगेगी
जब देखेंगे इस आगसे दुनिया न बचेगी
कोहोंसे पुकारेंगे सलीबों पै चढ़ेंगे[२]
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

पलटेंगे अरबमें भी तमद्दुनके क़रीने[३]
सुनकर नई आवाज़ धड़कते हुए सीने
ताब इसकी न लायेंगे तो मक्केसे मदीने
इक मसलहते ख़ाससे हिजरत भी करेंगे[४]
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

आँधीकी तरह उट्ठेंगे सासानी-ओ-तातार
तो घोड़ोंकी टापोंसे उड़ा देंगे वो कोहसार
लग जायेंगे हर चार तरफ़ लाशोंके अंबार
सौ रंगसे हम क़ातिल[५] ओ मक़तूल[६] बनेंगे
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

जागीरके ये दौर थे गहवारए-तहज़ीब[७]
सावंती ज़मानेके वो आईन-ओ-असालीब[८]

---

[१]सुक़रात को विष पीना पड़ा था [२]ईसाको सूलीपर चढ़ना पड़ा था [३]संस्कृति [४]हज़रत मुहम्मदको अरबवालोंके अत्याचारोंके कारण मक्केसे मदीनेको प्रस्थान करना पड़ा था [५]मारने वाले [६]मरने वाले [७]सभ्यताके पालक, पोषक [८]नियम और व्यवस्था

हिकमत हुकमाकी उलमाकी भी वो तादीब[1]
ये बाबे-अहम ज़ीनते-तारीख़[2] बनेंगे
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

अदवारे[3] ग़ुलामी थे ये किस शानके ए दोस्त
सौ तरहसे मिटते रहे बनते रहे ए दोस्त
सावंत भी कमज़ोरसे अब पड़ चले ए दोस्त
सर्मायाके दुनियामें अलमदार[4] बढ़ेंगे
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

सामन्ती युग अपनी उन्नतिकी आख़िरी मंज़िलें तय करके अब अस्त हो जाता है। अब वैश्य सभ्यता या महाजनी सभ्यताका युग आ रहा है। यह व्यापारिक सभ्यता एशियामें आरम्भिक मंज़िलोंसे आगे नहीं बढ़ सकी। इस सभ्यताका नेतृत्व योरोपके हाथमें चला गया। अब हम उन्नीसवीं सदीके आरम्भ तक आ पहुचे हैं। योरोपमें व्यावसायिक क्रान्ति हो जाती है और व्यापारी युग पूँजीवाद और साम्राज्यवादके युगमें परिणत हो जाता है। पहले योरोप और लगभग सौ वर्ष बाद अमरीका पूँजीवादी साम्राज्यके नेता बन जाते हैं। दो महायुद्ध धरतीको हिलाकर रख देते हैं। पहले महायुद्धके दौरान हीमें मार्क्सकी भविष्यवाणी सत्य हो जाती है और रूसमें क्रान्ति हो जाती है। दूसरे महायुद्धके फलस्वरूप चीनकी महाक्रान्ति और योरोपके कई देशोंकी महाक्रान्तियां होती हैं। पूँजीवादका चिराग़ बुझनेके पहले ज़ोरोंसे भड़क उठता है। अब हम आजके युगमें आ गये, जब धरतीपर साम्यवादकी बढ़ती हुई शक्ति और साम्राज्यवाद या पूँजीवादकी रोगग्रसित घटती हुई शक्ति एक दूसरेके सामने आँखोंमें आँखें डाले खड़ी हैं।

---

[1]विद्वानोंकी विद्वता और पंडितों का संयम [2]ये महत्त्वपूर्ण अध्याय इतिहासकी शोभा बनेंगे [3]ग़ुलामीके दौर [4]पूँजीवादका झंडा उठाने वाले

निकला जो ये बेड़ा तो ममालिक बरे-आज़म[1]
आते गये सब ज़दमें[2] मचा हर तरफ़ ऊधम
ये साहबे-सरमाया हैं वो फ़ातहे-आलम[3]
आज़ादिये-अक़वामकी[4] सीता जो हरेंगे
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

अब चीन अरब हिन्द हबश ख़ित्तए-ईराँ
तपते हुए अफ़रीक़ाके वो शह्र-ओ-बयाबाँ
जौलाँगहे-सरमाया बनेंगे—ये रजज़ख़्वाँ[5]
सालारिये-अक़वामका[6] दावा भी करेंगे
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

फ़ितने ये जगा देंगे जहाँ पाँव धरेंगे
ये सब्ज़-क़दम[7] बाग़े-जहाँ रौंद चलेंगे
आये तो ये जानेका कभी नाम न लेंगे
ये मान न मान आपके मेहमान बनेंगे
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

फ़न-ओ-अदब-ओ-इल्म नई करवटें लेंगे
अब ज़ेरे-नगीं[8] बह्र-ओ-बर-ओ-चर्ख़[9] करेंगे

---

[1]महाद्वीप [2]लपेटमें, चोट खानेकी राहमें [3]विश्व विजयी [4]राष्ट्रोंकी स्वाधीनता [5]प्राचीन कालमें युद्धके समय दोनों पक्षोंके वीर रणक्षेत्रमें अपने देश और पूर्वजोंकी वीरताके गुणगान करते उतरते थे। इस युगमें पूँजीवादी और साम्राज्यवादी देश अनेक देशोंमें अपने जाल फैलाकर उनसे कहेंगे कि वो संसारकी महान जाति हैं और हमें अन्य राष्ट्रोंके नेतृत्वका अधिकार है। [6]राष्ट्रोंके नेतृत्व [7]मनहूस या अशुभ क़दमवाले [8]अपने अधीन [9]जल-थल-आकाश

फ़ितरतके अब असरारपर[१] असरार खिलेंगे
क़ुदरत पै फ़तूहाते-बशर और बढ़ेंगे
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

सावंती ज़मानेसे भी बढ़कर ये ज़माना
खुलता है निहाँ-ख़ानए-फ़ितरतका ख़ज़ाना
अब गैसूए-दौराँ नहीं मिन्नत-कशे-शाना[२]
माज़ीकी निगाहोंको ये दिन ख़ीरा[३] करेंगे
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

साइंसके ये मोजज़े[४] ईजादोंके ये दौर
दुनियाके सब आईने-तमद्दुनके[५] सभी तौर
बदलेंगे अभी और अभी और अभी और
तारीख़की रफ़्तार बहुत तेज़ करेंगे
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

पहियोंकी धमक लाखों मशीनोंका वो चलना
वो अंजनोंका चीख़के अंगारे उगलना
वो भट्टियोंसे आगके फ़ौव्वारे उछलना
दहलेगी ज़मीं कंगुरए-चर्ख़ हिलेंगे
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

सरमाया परस्तोंके सर अब ऊँचे उठेंगे
अब उनकी सलामीको मह-ओ-मेह्र झुकेंगे

---

[१]रहस्य [२]अब समयकी काकुलें सँवर चुकी हैं अब उसे कंघेकी आवश्यकता नहीं [३]चौंधिया देंगे [४]चमत्कार [५]संस्कृति के विधान

ये नश्शए-दौलतमें सदा चूर रहेंगे
इन साहबोंके पाँव ज़मींपर न पड़ेंगे
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

कर देंगे हम एक दिनके लिये ख़ून पसीना
हम काम किये जायेंगे मारे हुए पित्ता
आसार बताते हैं पलटनेको है पाँसा
घूरेके भी दिन कहते हैं इक रोज़ फिरेंगे
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

कल पुर्ज़ोंकी रफ़्तारमें है बर्क़की सुरअत[1]
अब देखते ही देखते आयेगी ये नौबत
सामानकी इफ़रात ख़रीदारकी क़िल्लत
बाज़ार नये ढूँढनेसे भी न मिलेंगे
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

बाज़ारोंकी ख़ातिर वो बड़ी जंग छिड़ेगी
दुनियाके कई हिस्सोंमें इक आग लगेगी
इस जंगमें मज़दूरोंकी तक़दीर खुलेगी
सरमाया परस्त एक नई आफ़तमें पड़ेंगे
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

जब सुस्त सा पड़ जायेगा तोपोंका धमाका
साहिलके क़रीं[2] आयेगा जब जंगका बेड़ा
लेनीनके हाथोंसे पलट जायेगी काया
अब नाम-ओ-निशाँ ज़ारके मिट्टीमें मिलेंगे
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

---

[1]तेज़ी, तीव्रगति [2]निकट

अब हम उफ़क़े-रूससे होते हैं नुमायाँ
दुनियाके लिये है ये नई सुबहे-बहाराँ
अब इक नई तहज़ीब है जलवा दहे-दौराँ[१]
तारीख़-ओ-तमद्दुनके नये बाब खुलेंगे
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

इन्सानकी वहदत[२] कभी तबक़ोंमें बटी थी
ता देर ये तक़सीम रही शर्ते-तरक़्क़ी
साइन्सने अब इसकी ज़रूरत ही मिटा दी
इस दौरमें सब छोटे बड़े एक बनेंगे
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

जब रूसके मतलअसे[३] हुआ नूरका तड़का
सरमायापरस्तोंका चिराग़ और भी भड़का
हिटलरका गरजना है कि बिजलीका है कड़का
सुनकर बरे-आज़म भी जिसे काँप उठेंगे
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

वो जंग फिर इस दौरमें हो जायेगी बरपा
तारीख़े-बशर[४] याद न आ जाये तो कहना
अय्यामे-जवानीमें तुझे दूध छठीका
ये कहते हुए आगमें हम कूद पड़ेंगे
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

---

[१]समयको दर्शन देनेवाली [२]एकता [३]उदय स्थल [४]मानव इतिहास

हम शेर ये रूबाह जो हम कोह तो ये काह[1]
दुनियासे हैं मिटने हीको अब सेठजी जीजाह
हम जुगके नुमाइन्दे हैं ये रान्दए-दरगाह[2]
फटकार बरसती है ये क्या हमसे लड़ेंगे
हम जिन्दा थे हम जिन्दा हैं हम जिन्दा रहेंगे

अफ़लाककी तदबीर इन्हें मार चुकी है
दीवारकी तहरीर इन्हें मार चुकी है
जमहूरकी तक़दीर इन्हें मार चुकी है
अब अम्न हो या जंग ये जीते न बचेंगे
हम जिन्दा थे हम जिन्दा हैं हम जिन्दा रहेंगे

अब जुल्मके ऐवानकी[3] बुनियाद हिलेगी
इस जलजलेमें ईंटसे यूँ ईंट बजेगी
कानों पड़ी आवाज सुनाई नहीं देगी
थर्राते हुए कंगुरे इस घरके गिरेंगे
हम जिन्दा थे हम जिन्दा हैं हम जिन्दा रहेंगे

हम वारिसे-मुस्तक़बिल-ओ-तक़दीरे-जमाँ[4] हैं
हम मंज़िले-मक़सूदे-जहाने-गुजराँ[5] हैं
हम अपनी कहानी ब हदीसे-दिगराँ[6] हैं
कुछ करके दिखा जायेंगे क्या याद करेंगे
हम जिन्दा थे हम जिन्दा हैं हम जिन्दा रहेंगे

---

[1]तिनका [2]घर [3]महल [4]हम भविष्य और युगके भाग्यके वारिस हैं [5]गुज़रते हुए संसारके गन्तव्य स्थान [6]दूसरोंकी ज़बानी

रन जीतके छोड़ेंगे ये पैमान[1] है अपना
इस अस्लका हमज़ाद[2] निगहबान है अपना
तसख़ीरे-क़ज़ा-ओ-क़दर ईमान है अपना
हम हैं वो मुजाहिद[3] कि मशीयतसे[4] लड़ेंगे
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

लो जंग क़दीम ख़त्म हुई, अब वो ज़माना
आता है जिसे अपने ही हाथों है बनाना
इस जंगके वो तल्ख़ सबक़ भूल न जाना
भूलेंगे अगर इनको तो जोखोंमें पड़ेंगे
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

सरमायेकी दुनिया पै मुसल्लत[5] है शबे-तार
हम अब उफ़क़े-चीनसे होते हैं सहरकार
ये अम्नका सूरज ये नया मतलए-अनवार[6]
सरमायेके अब अन्धे चिराग़ आप बुझेंगे
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

सरमायए-मजरूहमें[7] अब दम नहीं इतना
इक सैर है बिसमिलके तड़पनेका तमाशा
अब जंगे-सोयम[8] छेड़ना आसान न होगा
तख़रीब के इफ़रीत[9] को हम कील चुकेंगे
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

---

[1]प्रतिज्ञा [2]आत्मा [3]सत्यके लिये लड़नेवाले [4]ईश्वरेच्छा [5]छाई है [6]प्रकाशमय उदयस्थल [7]घायल पूँजी [8]तीसरा युद्ध [9]विध्वंस, विनाशका राक्षस

वो हिन्दकी तहज़ीब-ओ-तमद्दुनके ज़माने
अफ़साना दर अफ़साना[1] हैं यारो ये फ़साने
सुलतानिये-जमहूरके[2] गा-गाके तराने
फिर हिन्दके क़ालिबमें नई रूह भरेंगे
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

हम अस्रको[3] हैं तेरे पयाम ए नई दुनिया
रोशन हुए तेरे दर-ओ-बाम ए नई दुनिया
ये सुर्ख़ सवेरा है सलाम ए नई दुनिया
जब देखेंगे तुझको तो हमें याद करेंगे
हम ज़िन्दा थे हम ज़िन्दा हैं हम ज़िन्दा रहेंगे

---

[1]कहानीमें कहानी [2]जनराज [3]युग

क़ैदी

इस कविताका विषय है आज़ादीके बादका बन्दी भारत या क़ैदी हिन्दुस्तान। इसमें कुछ फ़ारसी अरबीके ऐसे शब्द अवश्य आ गये हैं जो केवल हिन्दी जाननेवालोंके लिए कुछ कठिन हैं लेकिन ये शब्द कृत्रिम नहीं हैं न ज़बरदस्ती लाये गये हैं। उर्दूके शिक्षित और मध्यवर्गीय समाजमें ये शब्द किताबी नहीं समझे जाते सभ्य बोल चालके टुकड़े समझे जाते हैं, लेकिन पंक्तियोंमें और वाक्योंमें कहीं हिन्दीवालोंको भी झोल या उलझाव न मिलेगा। अगर वाक्य स्वाभाविक हो और साँचेमें ढला हुआ हो तो एकाध कठिन शब्द भी कविताको समझनेमें, उससे प्रभावित होनेमें, और उसके रसास्वादनमें रोड़े नहीं अटकाते। इस कवितामें दिखाया यह गया है कि स्वतंत्र होकर भी हम क़ैदी हैं। हमारा भूतकाल या हमारा अतीत हड्डियोंकी माला हमारे गलेमें डाल गया है। अपनी जीवन-प्रथा बदल न सकनेके कारण अतीतसे अन्धे प्रेमके कारण और मौजूदा परिस्थितिके कारण हमारा जीवन अब तक अनेक विपत्तियोंसे ग्रसित है। कविताकी ध्वनिपर पाठक विशेष रूपसे ध्यान दें।

अब एक ज़मानेसे बे दस्त-ओ-पा[1] हैं तदबीरें
कहाँ हैं सोई हुई क़ैदियोंकी तक़दीरें
दिमाग़-ओ-दिल पै यहाँ बेड़ियाँ हैं मज़हबकी
गलेसे लिपटी हुई माज़ियोंकी[2] ज़ंजीरें
कलाइयोंमें रसूमे-कोहनकी[3] हथकड़ियाँ
ख़मीदा पुश्त पै सदियोंकी सख़्त ताज़ीरें[4]

---

[1]अपाहिज, विवश, [2]अतीत [3]पुरानी रस्मों, रूढ़ियों
[4]झुकी पीठ पर सदियोंके दंड स्वरूप भार

तमाम बादे-हवाई य शोरे-बेहंगाम[1]
ये धूमधाम ये जयकार और ये तक़रीरें
नहीं जो नानेशबीना[2] तो बहसे-कल्चर है
जमीं पै बेसरोसामाँ ख़लामें तामीरें[3]
कड़क रही है कमाने-क़जाए-नाशुदनी[4]
चमक रही हैं खुली गर्दनों पै शम्शीरें
धुआँ हैं वक़्तकी नब्जें य दौरे बुरहानी[5]
फ़राज़े-अर्शकी[6] हिलती नहीं हैं जंजीरें
हर एकको शामे-ग़रीबांकी याद आने लगी
अब इतनी माँद हैं सुब्हे-वतनकी तनवीरें[7]
यहाँ बजाय अमल सिर्फ़ ज़िक्रे-गीता है
बजाय इल्म किताबोंकी मुर्दा तफ़सीरें[8]
जो चलती फिरती नजर आ रही हैं चार तरफ़
वो जिन्दगीकी हैं या मौतकी हैं तस्वीरें
अज़ल[9] हीसे ये रही कातिबोंकी[10] तख़्तए-मश्क़[11]
जबीने-हिन्दकी गुंजलकसे पुर हैं तहरीरें[12]
मुदब्बिराने-वतनसे[13] ये कोई कह देता
हमें मिटाके न रख दें तुम्हारी तदबीरें

---

[1]सारी हवाई बातें और असमय शोर [2]रातकी रोटी, भोजन [3]धरती पर तो बेघर बार के हैं और शून्यमें हवाई क़िले बना रहे हैं [4]अपशकुनके रूपमें मृत्युकी कमान कड़क रही है [5]बुद्धिवादका युग [6]अर्शकी ऊँचाई, अर्शको ईश्वरका निवास स्थान माना जाता है, जो आकाशपर है [7]ज्योति [8]टीका, व्याख्या [9],[10],[11]अनादिकालसे लिखनेवालोंके अभ्यास पुस्तकके सामान रही [12]भारतके माथे, भाग्यकी लिखावट अस्पष्ट सी है [13]देशके नेताओं

बजा ये क़ौल कि देरआयद ओ दुरुस्त आयद[1]
मज़ा अबदका[2] चखाने लगी हैं ताख़ीरें[3]
हुई हैं आइना मुद्दतके बाद ज़ार-ओ-दरेग़[4]
सफ़ेद ख़ूने-हकूमतमें[5] फटी तक़दीरें
बलासे दादे-सआदतवरी[6] तो देते हैं
भुगत रहे हैं हम अजदादकी जो तक़सीरें[7]
हयाते-मौत[8]नुमा फ़ाक़ा सिसकियाँ आँसू
ग़म-ओ-मुसीबत-ओ-नकबत[9] हमारी जागीरें
जहे[10] तसव्वुरे-माया[11] ख़ुशा[12] येहाले-ज़बूँ[13]
वो ख़्वाबे-अहले-सलफ़[14] था ये उसकी ताबीरें[15]
यहाँ बलायें भी बहुरूप भरके आती हैं
ये ज़हर ख़न्दनुमा[16] रहबरोंकी तक़रीरें
फ़सुर्दा[17] सीने भी लौ दे उठे, दमकने लगे
हरीफ़[18] देख ले मेरी ग़ज़लकी तासीरें
पयाम सदियोंके मन्सूख़ होनेवाले हैं
दहक रही हैं लबे-गर्म पर वो तक़रीरें
[19]पयामे-ख़्वाबे-अजल हैं ये अहले-ज़िन्दाँको[20]
'फ़िराक़' नालए-नाक़ूस[21] हो कि तकबीरें[22]

---

[1]देरका काम ठीक होता है [2]अनन्त काल [3]देर लगाना [4]दुहाई है कि मुद्दतके बाद व्यक्त हुई है [5]जिस शासनका खून सफेद हो गया अर्थात जो शासन सद्भाव और सद् प्रेरणा हीन हो चुका है [6]आज्ञा पालनका कर्तव्य तो पूरा करते हैं [7]अपराध [8]मौत जैसी ज़िन्दगी [9]दुर्भाग्य, दारिद्र [10]धन्य [11]मायावाद [12]अहो [13]दुर्दशा [14]पूर्वजोंके सामने [15]स्वप्न फल [16]विषम मुस्कानके समान [17]बुझे हुए [18]प्रतिद्वन्द्वी [19]मौतकी नीतिका संदेश [20]बन्दियों [21]शंखनाद [22]अल्लाहो अकबरका नारा

चीनकी महाक्रान्ति और विश्वशान्ति

ये रुबाइयाँ अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक सम्मेलनके दिल्लीके इजलासमें ७ मार्च १९५३ को पढ़ी गई। हमारे देशमें इसकी भारी आवश्यकता है कि हमारी जातीय चेतना बीसवीं सदीके सबसे बड़े सन्देशको ग्रहण कर ले। वह सन्देश हैं रूस और चीनकी महाक्रान्तियाँ। इन क्रान्तियोंसे मानवताका इतिहास बदल गया है और बदलता चला जा रहा है। मेरी कविताओंके इस संग्रहमें कई कविताएँ अनेक शीर्षकोंसे मिलेंगी जिनमें मैंने भारतीय चेतनाको उकसाकर यह अनुभव कराना चाहा है कि ये क्रान्तियाँ इस सदीकी सबसे महत्वपूर्ण घटनाएँ हैं। इन क्रान्तियोंका क्षेत्र विश्वव्यापी है और इनके फलस्वरूप दुनिया एक ऐसे नए युगमें प्रवेश कर रही है जहाँ सुख, सम्पत्ति, नैतिक, सांस्कृतिक और मानसिक उन्नतिसे जीवन अलंकृत होगा और जीवनका स्तर स्थायी रूपसे ऊपर उठ जायगा। अब हम आपको चीन ले चलते हैं।

मँडलाई कई करोड़ हाथोंकी घटा
गुलज़ार कई करोड़ चेहरोंका खिला
जल उट्ठे कई करोड़ सीनोंमें चराग़
परदा-सा कई करोड़ आँखोंसे उठा

लहराई कई करोड़ झंडोंसे फ़िज़ा
तूफ़ान कई करोड़ बल खाके उठा
उभरे वह कई करोड़ जनताके क़दम
गूँजो वह कई करोड़ जनताकी सदा

जागी है कई करोड़ जतनों से हयात
रक़्साँ हैं कई करोड़ रंगीं लमहात

होती है कई करोड़ शामोंकी सहर
कटती है कई करोड़ सपनोंकी रात

वह किश्ते-जिहादे-अस्र[१] लहकी लहकी
खेतोंकी सुहानी साँस महकी महकी
साज़े-इमरोज़में[२] वो सोज़े-फ़र्दा[३]
वो आतिशे-इन्क़लाब[४] दहकी-दहकी

यह वलवला, यह उमंग, दरिया-दरिया
यह शोलए-बेदरंग[५] सहरा-सहरा
यह जलव-ए-इन्क़लाब आलम-आलम[६]
यह परतवे-इन्क़लाब दुनिया-दुनिया

पेशानिये-चीन[७] जगमगाई हुई आज
उट्ठी है हयात गीत गाती हुई आज
तक़दीरें वक़्तके दरीचोंसे[८] इधर
वह झाँक रही हैं मुस्कराती हुई आज

शोलासा जरसमें[९] कुछ मचलता हुआ आज
वो जादुए-इन्क़लाब जलता हुआ आज
बढ़ता है उफ़क़से[१०] कारवाने-मशरिक़
हर फ़ित्न-ओ-शरका सर कुचलता हुआ आज

उठती हैं वक़्तकी नक़ाबें फिर आज
ढलती हैं फ़लक-फ़गन[११] शराबें फिर आज

---

[१]युगके धर्मयुद्धकी खेती [२]आज (वर्त्तमान) का साज़ [३]कल (भविष्य) का सोज़ [४]क्रान्तिकी आग [५]निर्भीक लपटें [६]संसार [७]चीनका माथा [८]खिड़कियों [९]बीन, बिगुल [१०]क्षितिज [११]वह शराब जो आकाशको भी ढा दे

जंजीरें-फ़राज़े-अर्श[१] फिर हिलती हैं
खिचती हैं ज़मीनकी तनाबें[२] फिर आज

फटते ज्वालामुखीका होता है गुमाँ
दहकी हुई छातियोंसे उठता है धुवाँ
बरसेंगे आफ़ताब[३] इस बादलसे
जाता है आगमें नहाने इन्सान

हाथोंमें अनाने-वक़्त[४] लेनेवाले
बेड़े तारीख़े-नौके खेनेवाले
सफ़ अन्दर सफ़ उभरते हैं क़लअ शिकन[५]
रूईसे पहाड़ तोड़ देनेवाले

सीनोंमें अजलको आड़ देनेवाले
झंडे महशरमें[६] गाड़ देनेवाले
बढ़ते हैं गोलियोंकी बौछारोंमें
तोपोंका दहाना फाड़ देनेवाले

आपसमें नये क़ौल-ओ-क़सम लेते हैं
फिर जायजःहाय-कैफ़-ओ-कम[७] लेते हैं
संसारकी सबसे बड़ी आबादीमें
बाहम[८] नये सम्बन्ध जनम लेते हैं

झटके हैं क़यामतके ग़ज़बकी है पकड़
ज़ुल्म और सितम जायँगे अब जड़से उखड़

---

[१]अर्शकी ऊँचाईकी ज़ंजीर [२]डोरी जिससे तम्बू ताना जाता है [३]सूर्य [४]समयकी लगाम [५]क़िला तोड़नेवाले [६]क़ियामत, प्रलय [७]नई पुरानी बातोंका निरीक्षण [८]परस्पर

बाहोंकी मछलियाँ फड़क जाती हैं
जंजीरें टूटती हैं कड़ कड़ कड़ कड़

दश्त-ओ-गुलज़ार-ओ-कोह-ओ-दरिया आज़ाद
गोशा-गोशा[1] व ख़ित्ता-ख़ित्ता आज़ाद
साक़ी मैख़ाना जाम मीना आज़ाद
रोज़-ओ-मह[2]-ओ-साल-ओ-लमहा लमहा[3] आज़ाद

मेह्रे-ज़ुल्मात-सोज़ ताबिन्दा[4] बाद
ज़िन्दाबाद ए हयाते-नौ[5] ज़िन्दाबाद
रन बोल रहा है तेरी आहट पाकर
ए चीनके इन्क़लाब पाइन्दाबाद[6]

पूरी हुई गुलिस्ताने-मशरिक़की कमी
शाख़ोंकी रगोंमें शाख़ लेती है नमी
लेते हैं फुरेरी नौनिहालाने-चमन
यह रू-ब-नुमू हयात[7] यह ताज़ा-दमी

वह चीन करिश्मा साज़े-अहदे-ज़र्री[8]
फूँका दिले-एशियामें अफ़्सूने-यक़ीं[9]
औहामे-नीमजाँने[10] दम तोड़ दिया
ज़िन्दा नई फ़िक्रियातने साँसें लीं

आज एक नई दास्तान होती है शुरूअ
सूरज है मलूकियतका मग़रिबको रुजूअ[11]

---

[1]कोना [2,3]मास, महीना क्षण [4]अंधकारको जलाने या दूर करनेवाला सूर्य चमकता रहे [5]नवजीवन [6]चिरस्थायी हो [7]आगे बढ़ता हुआ जीवन [8]स्वर्णयुगका करिश्मा दिखानेवाला [9]विश्वासका जादू [10]अधमरे भ्रमों [11]पच्छिमकी ओर जा रहा है।

यह शोलए-रूसयाह होता है गुरूब[१]
अब चीनमें इन्क़लाब होता है तुलूअ[२]

ज़ंजीरे-शबे-दराज़े-ग़म[३] टूटती है
अब मंज़िले-ख़्वाबे-बेकराँ छूटती है
यह साज़े-नसीमे-सुब्ह[४] यह सोज़े-तलूअ[५]
मशरिक़में नई सहरकी पौ फटती है

मुर्दोंसे जो शर्त बाँधकर सोई थी
वह एक हयात जो न सदियों चौंकी
अफ़सुर्दा फ़िज़ाने साँस ली पिछले पहर
ज़र्रे-ज़र्रेमें ज़िन्दगी दौड़ गई

मशरिक़की बिसातपर[६] वह रफ़्तारे-हयात
हर गाम पै तीरगी वो खाती हुई मात
वो चंचल अँगुलियोंसे छेड़े हुए साज़
वह राग असावरी वो कटती हुई रात

यह किसने दिया मौतके जादूको पलट
अब रातके सीनेका निलकता है कपट
यह टूटना सदियोंकी गराँख़्वाबीका[७]
शहनाज़े-हयातका[८] वो लेना करवट

वह लाल किरन उरूसे-मशरिक़का[९] सुहाग
वह सोज़े-सीना ज़िन्दगीकी वह आग

---

[१]अस्त [२]उदय [३]दुखकी लम्बी रात [४]प्रभात समीर [५]उदय होनेका सोज [६]शतरंज खेलनेकी बिसात, यहाँ पूर्वकी धरती या पूर्वीय देशोंसे मतलब है [७]लम्बी नींद [८]जीवन-सुन्दरी [९]पूर्वकी वधु

गर्मीये-अमलके उठते शोलोंकी लपक
बेदारिये-नौकी भैरवीका वह राग

पेशानिये-एशिया पै सतरंग सहर
दामाने-नजरमें बारिश-लाल-ओ-गुहर[1]
वह लाखों नगोंकी थरथराती हुई छूट
मशरिक़के ललाटका चमकता झूमर

तख़लीक़े-हयाते-नौका वो गहवारा[2]
मशरिक़की जवानियोंका चढ़ता पारा
वो जीता-जागता मुहब्बतका पयाम
वो चीन इस जुगकी आँखका वह तारा

वह एक अरब हाथ लुटाते हुए जस
इस जोशे-हयातपर नहीं मौतका बस
यह नुस्ख़ए-कीमिया[3] असरसे जिसके
कंकन कंचन हुआ और पत्थर पारस

खुलता है अहमतरीन बाबे-तारीख़[4]
यह शोलए-नग़मए-रबाबे-तारीख़[5]
यह सीन-ए-वक़्तमें दहकती हुई आग
अँगड़ाइयाँ लेता है शबाबे-तारीख़[6]

ए चीन तेरी रियाज़ते-आली है
किन किन साँचोंमें जिन्दगी ढाली है

---

[1]दृष्टिके अंचलमें लाल और मोतीकी वर्षा [2]नए जीवनके निर्माणका पालना [3]कीमिया, सोना चाँदी बनानेका नुस्ख़ा [4]इतिहासका महत्वपूर्ण अध्याय [5]इतिहासके रबाब, एक साज़के संगीतकी लपट [6]इतिहासकी जवानी

उस साधनको सराहिये जिसने तेरा
क़ालिब ही नहीं रूह बदल डाली है

मशरिक़को नया तसव्वुरे-ज़ीस्त[१] दिया
हस्ती बदली शऊरे-हस्ती[२] बदला
वह मौतका देरीना फ़ुसूँ[३] टूट गया
आँखें खुलीं ज़िन्दगीका जादू जागा

सेहरा है नये निज़ामका[४] चीनके सर
बदला है सिरेसे मअनिये-ख़ैर-ओ-शर[५]
साँचेमें हयात ढल रही है शब-ओ-रोज़
परवर्द-ए-इन्क़लाब है शाम-ओ-सहर

वो गाँव, वो शहर, वो अदारे-ज़ीशान[६]
इल्म-ओ-फ़न-ओ-फ़लसफ़ा पै चढ़ती हुई सान
वो खेत, वो घर, वो लहलहाते हुए बाग़
वो चाँदसी कन्याएँ वो सूरजसे जवान

वो यूनिवर्सिटियाँ वो लाखों स्कूल
हर सू नई ज़िन्दगीके खिलते हुए फूल
वो गाती हुई नई मस्तियोंकी लय
वो एक नई सभ्यताके आईन-ओ-असूल

वो चीन वो अमने-एशियाका ज़ामिन[७]
वो चीन कि एक जिसका ज़ाहिर बातिन[८]

---

[१]जीवनकी कल्पना [२]जीवनकी चेतना [३]पुराना जादू [४]नई व्यवस्था [५]बुराई भलाईके अर्थ बदल गये हैं [६]शानदार संस्थाएँ [७]ज़मानत लेनेवाला [८]बाहर, भीतर

पैग़म्बरे-सुल्हकुल इमामे-ए-तहज़ीब[1]
वो चीन कि मशरिक़के फिरे जिससे दिन

शाइस्तए-इन्क़लाब[2] इन्साँका वतन
जगके सूरजका जगमगाता दर्पन
वह नग़मए-ज़िन्दगीका बजता हुआ साज़
वो सारे एशियाके दिलकी धड़कन

अमरीका उसी चीनको धमकाता है
मिट्टीमें मिलानेकी क़सम खाता है
ए हिन्दकी ग़ैरत-ओ-शराफ़त[3] तुफ़ तुफ़[4]
क्यों तुमको नहीं जलाल आ जाता है

अमरीकामें फ़ैज़े-जेह्ल[5] फिर जारी है
हर चार तरफ़ जंगकी तैयारी है
तहज़ीबके ये दुश्मने जानी, हैं आज
सालारे-जहाँ[6] समयकी बलिहारी है

फिर चीनको मेटनेकी तैयारी है
शहरोंपर उसके अज़्मे-बम्बारी[7] है
अमरीकासे एशियाकी क़ौमो, हुशियार
यह रात इस अर्ज़े-पाकपर[8] भारी है

अन्धेर ये कैसे होने देते हैं नदीम[9]
अमरीकाकी दरिन्दगी है तसलीम

---

[1]शान्तिका सन्देशवाहक, अवतार और सभ्यताका नेतृत्व करनेवाला [2]जिसको जीवनकी साधना क्रान्तिने सिखाई हो [3]सम्मान, स्वाभिमान और सज्जनता [4]थू थू, छी छी [5]मूर्खताकी बरकत [6]संसारका नेता [7]बमवर्षाका इरादा, हौसला [8]पवित्र भूमि [9]साथी

हम बैठे देखते हैं और होता है
तारीखे-कायनातका जुर्मे-अज़ीम[1]

फुंकता है एशिया वो शोला उट्ठा
ये आग बुझानेको उठे अपनी बला
हो चीनके मिटनेकी न जिनको कोई फ़िक्र
भारत-प्रेम एक ढोंग है ऐसोंका

हर काम तमद्दुनके बिगड़ जायेंगे
दुनियामें अलम मौतके गड़ जायेंगे
सँवला जायेगा आफ़ताबे-तहज़ीब
रुख़सारे-फ़िज़ा पै नील पड़ जायेंगे

इन शोलोंसे जहान जल जायेगा
धरती क्या आस्मान जल जायेगा
क़रनोंका किया धरा बयक-चश्म-ज़दन
बेशुबहा व बेगुमान जल जायेगा

फुंकता है जो एशिया तो फुंक जाने दो
आतिशबाज़ोंको आग बरसाने दो
गर चीनभी मिट जाय तो ग़म क्या हम को
भारतकी सभ्यताके गुन गाने दो

जिस अमरीकाकी ये खुली नीयत है
मासूमोंके लहूसे जो लतपत है
जो दुश्मने-एशिया है खुल्लमखुल्ला
उस अमरीकासे दोस्ती, लानत है !

---

[1]सृष्टिके इतिहासका महान अपराध

जायेगा अगर चीनका बेड़ा ही डूब
हो जायेगा जब चीनका सूरज ही ग़ुरूब
जब चीनकी तहज़ीब मिटा डालेंगे
बच जायगी तहज़ीब हमारी क्या ख़ूब !

है ख़तरेमें हिन्दका भी नंग-ओ-नामूस[१]
है हिन्दकी सरकार भी उनसे मानूस[२]
मालूम नहीं क्या हमें जिस घातमें है
अमरीकाके यहाँ हज़ारों जासूस

हम और सहें यह एशियाकी ज़िल्लत
होने दें हम चीनपर ऐसी बिदअत[३]
हमको क्या हो गया है ऐ मादरे-हिन्द
यह घुन लगी शर्म-ओ-किर्म ख़ुर्दा ग़ैरत[४]

अमरीकाकी दुनियामें ये जुरअत होती
यूँ चीनको धमकानेकी हिम्मत होती
गुद्दीसे ज़बान खींच लेते उसकी
कुछ अह्ले-हिन्दमें जो ग़ैरत होती

जो चीनकी इतनी बड़ी तहज़ीब मिटाय
जो चीनका लहलहाता गुलज़ार जलाय
तुम मर्द हो यारो तो समझ लो इससे
यह मुजरिमे-तारीख़े-बशर[५] बचके न जाय

---

[१]मान-मर्यादा [२]परिचित [३]नई बात, बुराई
[४]घुन लगी शर्म और लाज [५]मानव इतिहासका अपराधी

अमरीकाके ये हामिये-जंग-ओ-पैकार
जिनसे हैं खुद अमरीकाकी जनता बेज़ार
दुनियाको जो चैन दें न खुदको दें चैन
आता है अम्नके तसव्वुरसे बुख़ार

हैं चीनकी जीत हर तमन्नाकी जीत
है चीनकी जीत लोक जनताकी जीत
अमरीकाकी है, शिकस्त[१] हो अम्न कि जंग
है चीनकी जीत सारी दुनियाकी जीत

हैं कितनी मलूकियतकी[२] चालें मोटी
कर देंगे मलूकियतकी राहें खोटी
इस बार उड़ा-उड़ाके रख देगा चीन
अमरीकाके डाकुओंकी बोटी-बोटी

अमरीकाने जामे-खुदकुशी[३] ढाला है
फन्दा अपने गलेमें खुद डाला है
गर जंग हुई तो खातमा है उसका
गर सुलह रही तो साफ़ दीवाला है

कट जायगा ये पाप जब अमरीकाका
एक रोज़ ज़माना तुमसे ये पूछेगा
ऐ हिन्दनिवासियो! ज़रा यह तो बताओ
गो चीन तो बच गया है; क्या तुमने किया

इन यांकियोंसे[४] आदमीयतको बचाओ
डालरकी खनक सुनके न इतना ललचाओ

---

[१]हार [२]साम्राज [३]आत्महत्याका प्याला भरा है
[४]अमरीकनोंके लिये अपमान सूचक शब्द

शैतानके इन मातबर एजेन्टोंको
अब पहली ट्रेनसे जहन्नुम पहुँचाओ

तहज़ीबकी खेतीको न बनने दो अलाव
अमरीका लगाता है जो आग उसको बुझाओ
है अम्ने-जहाँ आज बड़े ख़तरेमें
उसको दो सौ करोड़ हाथोंसे बचाओ

फिर चीनसे अपने भाईचारेको बढ़ाओ
बिछुड़े हुए भाइयोंको सीनेसे लगाओ
बढ़ जाओ उन अम्नकोश[1] हाथोंकी तरफ़
फिर चीनसे मिलकर नई तारीख़ बनाओ

दुनियापर बनके अब्रे-रहमत[2] छा जाओ
उमड़ो, घुमड़ो, लहकके झूमो, मँडलाओ
तपती हुई ज़िन्दगी पै छाजों बरसो
धरतीकी प्यास आज अमृतसे बुझाओ

---

[1]शान्तिके लिये प्रयत्नशील [2]दया और कल्याणके बादल

123600

देखते रहो

फ़ारसी और उर्दू कवितामें तुक (क़ाफ़िया) के अलावा बहुत अवसरोंपर एक शब्द या अनेक शब्द कभी कभी हर पंक्ति और कभी कभी हर शेरमें दोहराये जाते हैं या बार बार आते हैं। इस बार बार आनेवाले टुकड़ेको 'रदीफ़' कहते हैं। क़ाफ़िया और रदीफ़ मिलकर एक दूसरेको निखार देते हैं और चमका देते हैं। यह बात शायद भारतकी किसी और भाषामें नहीं है। ये दो कविताएँ—'देखते रहो' और 'जागते रहो' वर्त्तमान भारतीय और अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितिके अनेक पहलुओंकी तरफ़ इशारे करती हैं। पहली कवितामें क़ाफ़िया 'जहाँ, समाँ, धुआँ' है और रदीफ़ 'देखते रहो'। दूसरी कवितामें क़ाफ़िया है 'नज़र, ख़बर, मगर, इधर, उधर' और रदीफ़ है 'जागते रहो'। पहली कवितामें प्रायः जो परिवर्तन दुनियामें हो रहे हैं अर्थात एक बदलती हुई दुनियाकी झलकियाँ दिखाई गई हैं। दूसरी कवितामें जनताविरोधी साम्राजी और विश्वशान्ति भंग करनेवाली शक्तियोंकी कार्रवाइयोंके बारेमें चेतावनी दी गई है।

क्या रंग ला रहा है जहाँ देखते रहो
इस मयकदेको[1] रक़्सकनाँ[2] देखते रहो
वह शोरे-बेअमाँ[3] कि लपकती हैं बिजलियाँ
ये हाय-हुए-ज़िन्दा-दिलाँ देखते रहो

आते हैं रौंदते हुए हर तख़्त-ओ-ताजको
औरंग-ओ-शाने-कजकुलहाँ[4] देखते रहो

---

[1]मयख़ाना [2]नाचते हुए [3]अत्यधिक शोर [4]बादशाहोंकी शान और हिंसा

जन्नत उतार लायेगा रूए ज़मीनपर
इन्सानियतका अज़्मे-जवाँ देखते रहो

ऐ-नुलयक़ीं जिन्हें है दवामे-मलूकियत[1]
पायेंगे इसको वह्म-ओ-गुमाँ[2] देखते रहो
देते हैं एक जहानको डालरकी जो अमाँ[3]
छिन जायगी अब उनकी अमाँ देखते रहो

जो मौत बेचते हैं ज़मानेके हाथ आज
फुँकनेको है कल उनकी दुकाँ देखते रहो
रूस और चीनकी जो मनाते हैं मौत आज
कल होंगे अपने मर्सियाख़्वाँ[4] देखते रहो

क्या चुटकियोंमें वक़्तकी हैं तीर-बेपनाह
अफ़लाककी[5] लचकती कमाँ देखते रहो
बनलेको है वो मक़तले-हुक्कामे-जोर-ओ-ज़ुल्म[6]
हंगामा ज़ारे-आह-ओ-फ़ुग़ाँ[7] देखते रहो

टूटे वो क़ैद-ओ-मज़हब-ओ-माज़ी बढ़ी हयात
होता है अब मुकाम कहाँ देखते रहो
उजड़े खन्डर वो मौतने जिनको सुला दिया
देगी वहाँ हयात अज़ाँ[8] देखते रहो

अब शोरे-दार-ओ-गीर[9]से गूँजेंगी वादियाँ
थर्रा उठेंगे कोहे-गराँ देखते रहो

---

[1]जिन्हें साम्राजके चिरस्थायी रहनेका विश्वास है [2]भ्रममात्र [3]शरण [4]अपनी मौतपर रोनेवाले [5]आकाश [6]ज़ालिम अन्यायी हाकिमोंके मरनेकी जगह [7]आहों और फ़रियादोंका ज़ोर [8]नमाज़के वक़्तकी पुकार अज़ान [9]धर पकड़

होनेको है बलन्द अलम[1] अब अवामके
मिटते हैं नामियोंके निशाँ देखते रहो

खायफ़ निगाहे-खाक-नशीनाँ[2] बदल चली
उठती है अब ये नोके सनाँ देखते रहो
मुनइमपर[3] एक खौफ़जदासा सकूत है
मुफ़लिसकी धनगरजका समाँ देखते रहो

बेचैन बत्ने-गैबमें है मेह्र-इन्क़लाब[4]
गुल हैं चरागे-कौन-ओ-मकाँ देखते रहो
अफ़लाकको तलाश नये मेह्र-ओ-मह[5]की है
मिटती है मेह्र-ओ-महको अनाँ[6] देखते रहो

होती चली है आइना तक़दीरे-कायनात
रंगे-हयात शोल बजाँ देखते रहो
कल हर शजर हजर पै सलामत रयाजे-इश्क़[7]
गुजरेगा आदमीका गुमाँ देखते रहो

हो जायँगे अक़ायदे-पारीना कलअदम[8]
कुश्ता चरागका[9] ये धुआँ देखते रहो
दुनियाको हम करेंगे हसींसे हसीनतर
तुम जलवाहाय लालारुखाँ[10] देखते रहो

---

[1]झंडा [2]खाक नशीनाँ=खाकमें रहनेवाले अर्थात गरीब जनता-की भयभीत निगाहें बदल चली हैं। [3]धनवान [4]भविष्यके गर्भमें क्रान्तिका सूर्य बेचैन है [5]सूर्य चन्द्र [6]लगाम [7]पेड़ पत्थरपर भी प्रेमकी तपस्याके कारण आदमी होनेका गुमान होगा [8]खतम हो जायँगे, मिट जायँगे [9]बुझे हुए दीप [10]सुन्दरियों

हम गरमिये-अमलसे बदल देंगे कायनात[1]
तुम सोज-ओ-साजे-कल्बे-तपाँ[2] देखते रहो
हैं सोजिशे-हयात[3] हमारे कलाममें
तासीरे-कीमियाए-निहाँ[4] देखते रहो

ग़मके पहाड़ काटे जो कटते नहीं 'फ़िराक़'
उड़ जायँगे वो बनके धुआँ देखते रहो

---

[1]सृष्टि [2]दिलका सोज़ [3]जीवनकी गर्मी [4]गुप्त कीमिया (रसायन)का गुण, प्रभाव

जागते रहो

है रात पुर ज़-ख़ौफ़-ओ-ख़तर[1] जागते रहो
झपके न एक पल भी नज़र जागते रहो
सहरा-ए-बेअमाँमें[2] हुई कारवाँको शाम
लुटनेका डर है अहले-सफ़र जागते रहो

डस ले कहीं न दौरे-कोहनकी अँधेरी रात
होनेको है तलू-ए-सहर[3] जागते रहो
चूके जो चाल उनके निशाँ तक नहीं मिले
ख़ुद राहज़न[4] है राहगुज़र[5] जागते रहो

उन वादियोंसे अब है गुज़रना तुम्हें जहाँ
जिबरीलके[6] भी जलते हैं पर जागते रहो
ऐसेमें मनकी जोत जगा लो मुसाफ़िरो
जिससे ख़जिल हो नूरे-सहर[7] जागते रहो

बीते जुगोंमें गुज़रे हैं पैग़म्बराने-दीं[8]
इन मंज़िलोंसे ख़ाक बसर[9] जागते रहो
इन मंज़िलोंमें ख़िज्र[10] भी पाते नहीं हैं बार
दोनों ही गुम हैं दश्त कि दर जागते रहो

---

[1]ख़ौफ़ ख़तरोंसे भरी [2]ऐसा मैदान जहाँ कोई पेड़ पौधे न हों, जहाँ शरण लेनेका स्थान न हो [3]प्रभातका उदय [4,5]स्वयं मार्ग ही लुटेरा बन गया है [6]एक फ़रिश्ते का नाम [7]जिससे प्रभातका प्रकाश भी लज्जित हो [8]धर्म फैलानेवाले अवतार [9]ख़ाक, मिट्टीमें रहनेवाले, ग़रीबीमें जीवन बितानेवाले [10]पथप्रदर्शक

यारो फ़रेबे-मज़हब-ओ-माज़ीसे होशियार
दोनों हैं एक शोबदा-गर,[1] जागते रहो
माना बहुत मुहीब[2] है तारों भरी ये रात
ये भी है एक रक़्से-शरर[3] जागते रहो

तक़दीरे-कायनात[4] तुम्हारी निगाह हैं
सो जाएँ गो क़ज़ा-ओ-क़दर[5] जागते रहो
जो आ रहा है हिन्दमें उस इन्क़लाबकी
कब है मशीयतोंको ख़बर, जागते रहो

भारी है रात आज ज़माने पै साथियो
हाले-जहाँ है नौए-दिगर[6] जागते रहो
होने न पाय उम्मते-डालरसे होशियार
जंगे-बशर ख़िलाफ़े-बशर जागते रहो

इन दुश्मनाने-अम्ने-जहाँके ज़मीरमें[7]
हैं कुनमुनाते फ़ितन-ओ-शर[8] जागते रहो
अक़वामे-एशिया[9] हों कि योरपके आदमी
इनके लिये हैं लुक़्म-ए-तर जागते रहो

हर बात इनकी मौतकी तरग़ीब[10] होशियार
हर साँस इनकी तेग़-ओ-तबर जागते रहो

---

[1]धोखेबाज, जादूसे अनहोनी बातें दिखानेवाले [2]भयानक [3]चिनगारीका नाच [4]सृष्टिका भाग्य [5]ईश्वरकी वह आज्ञाएँ जो उसने संसारकी सृष्टिके सम्बन्धमें दीं [6]दूसरी तरहका [7]आत्मा [8]शरारतें, बुराइयाँ [9]एशियाकी जातियाँ [10]मरनेकी राहपर ले जानेवाली

कितना है शोख़ ताबिशे-डालरका ज़हरख़न्द[1]
क़ातिल है ये तबस्सुमे-ज़र[2] जागते रहो

नीयत बख़ैर,[3] यूँ जो लचकती है बार बार
फाँसी है वो कमन्दे--नज़र[4] जागते रहो
सहरा-ए-ज़ीस्तमें है अँधेरा तो ग़म नहीं
चमकाके अपना दर्दे-जिगर जागते रहो

इस मरतबा तबाहिये-दुनियाके बाबमें
रक्खेंगे ये न कोर कसर जागते रहो
किस रंगसे वो फूँक रहे हैं फ़ुसूने ख़्वाब
तुम भी इधर बरंगे-दिगर जागते रहो

अग़ियार[5] कर रहे हैं मफ़ादे-वतनकी[6] बात
हो जानका न इसमें ज़रर[7] जागते रहो
उनकी निगाहे-लुत्फ़ जहाने-ख़राबपर
ख़िरमन पै जैसे बर्क़-ओ-शरर[8] जागते रहो

जिस ज़िन्दगीकी हमको ये देते हैं लोरियाँ
वो ज़िन्दगी है मर्ग-असर[9] जागते रहो
जिस नज़्मे-ज़िन्दगीकी ये तारीक रात है
वो नज़्म अब है ज़ेर-ओ-ज़बर जागते रहो

---

[1]डालरकी चमककी ज़हरीली हँसी [2]सोने, धनकी मुस्कान [3]नियत बुरी न हो [4]निगाहकी कमन्द, डोर, रस्सी [5]ग़ैर लोग, अमरीका और उसके साथी देश [6]देशहितकी बात [7]हानि [8]बिजली और चिनगारी [9]मौतकी तासीर रखनेवाली

लेती चली है जायज़-ए-शामे[1] ज़िन्दगी
पेकिंग-ओ मास्कोकी सहर जागते रहो
देखो कि वीतनाम मलाया व कोरिया
हैं उनके आगे सीना सिपर जागते रहो

देखो कि आज मशरिक़े-वस्ताके[2] जाँनिसार
उट्ठे बअज़्मे-फ़तह-ओ-ज़फ़र जागते रहो
ट्युनीसिया हो दक्खिनी अफ़रीक़ा हो कि शाम
उठ बैठे सरसे जोड़के सर जागते रहो

चीन-ओ-ख़ुतन हो, दश्त-ओ-जबल हो कि बह्र-ओ-बर
मिलने न पाय इनको मफ़र[3] जागते रहो
हैं दम बख़ुद सियासते-डालरसे आज सब
वहश-ओ-तयूर-ओ-जिन्न-ओ-बशर[4] जागते रहो

इस अहदमें है लरज़ा-बर-अन्दाम कायनात
तारे बदल रहे हैं डगर जागते रहो
दुश्मन है अपनी घातमें दिन रात होशियार
रन बोलता है आठ पहर जागते रहो

आकाश भी पसीनेमें भीगा हुआसा है
है चाँदकी जबीन भी तर जागते रहो
सय्याद बढ़ रहे हैं सुए सहने-गुलसताँ
सब फूँक देंगे बर्ग-ओ-समर[5] जागते रहो

---

[1]जीवनके अन्तिम भागका निरीक्षण [2]मध्यपूर्व [3]भागनेका अवसर
[4]पशुपक्षी, जिन्न और मनुष्य [5]पत्ते और फल

शब जिन्दादार तुम हो गदायाने-मैकदा[1]
है झोलियोंमें जिनकी सहर जागते रहो
जुम्बिशसी है उफ़क़में[2] धुँधलके हैं मुनतज़िर[3]
बर मनसबे-नक़ीबे-सहर[4] जागते रहो

सदियोंके ख़्वाब टूटते जाते हैं अब 'फ़िराक़'
कहता है ख़ुद ये दौरे-क़मर[5]---जागते रहो

---

[1]तुम रातोंको जागनेवाले मैख़ानेके फ़क़ीर हो [2]क्षितिज [3]प्रतीक्षामें [4]प्रभातके आगमनकी सूचना देनेवाले, घोषणा करनेवाले [5]चाँदका चक्र

माज़ी-परस्त

(अतीत-पूजा)

जब किसी समाजके जीवनमें क्रान्ति होनेवाली होती है तो पुरानी परम्पराके अंधे पुजारी दाँत पीस पीसकर रह जाते हैं और कुछ अनुचित उपायोंसे, अनेक दुराग्रहोंसे जातीयताके नामपर, देशप्रेमके नामपर, पुरानी संस्कृतिके नामपर दुराग्रह करते हैं। यह बात अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि प्राचीन भारतीय सभ्यता और प्रथा अगर आज ज़बरदस्ती स्थापित भी कर दी जाय तो धर्म कर्म समेत हमारा जीवन नरक बन जायगा। रामराज्य या अशोक और हर्षके शासनके अनुसार आज अगर भारतीय शासन चलाया जाय तो कल्याणके बदले हमारी हानि होगी। अतीतकी अंधी पूजा करके यह तो असम्भव है कि हम अतीतको वर्त्तमान बना सकें। हाँ, अपनी उन्नति और जातीय जीवनके विकासकी राहमें रोड़े ज़रूर अटकायेंगे और ठोकरें खायेंगे।

सतयुगकी बात छानने बैठे हैं
ढीले तारोंको तानने बैठे हैं
ज़र-बल और हाथ-बलसे होकर महरूम
पुरखोंके गुन बखानने बैठे हैं

बेदारिये-सुब्हकी हवाएँ भी चलीं
तहज़ीबे-कोहनकी लम्बी रातें भी ढलीं
माज़ी न बिका रात गई बात गई
सदियोंकी ज़िन्दगीकी क़दरें[1] बदलीं

---

[1]मूल्य

दुनियामें अब इस मरज़के बीमार नहीं
इस दौरमें सतयुगके परस्तार[1] नहीं
इस रद्दी मालकी निकासी है मुहाल[2]
बाज़ारमें माज़ीके ख़रीदार नहीं

अन्धी नगरी है और चौपट राजा
लो दोनों टके सेर हैं भाजी-खाजा
माज़ीकी अलाप जेह्लका साज़े-तरब[3]
बेवक़्तकी रागनी है—बेसुर बाजा

ज़हराब[4] फ़ज़ाओंमें ये फैलाती है
इक लाश जो सदियोंसे सड़े जाती है
भगवान यह कब कटेगा माज़ीका कोढ़
उफ़ अब तो ख़याल ही से क़ै आती है

ठोकर खाकर यह उस पै गिरते ए काश
कफ़नाई[5] हुई रखी है माज़ीकी लाश
गुल करके चराग़े-हाल-ओ-मुस्तक़बिलको[6]
करते हैं अँधेरेमें जो माज़ीको तलाश

काँधों पै धरे बीते जुगोंका ताबूत[7]
किस ओरको जा रहे हैं भारतके सपूत
कब ऐसेमें सूझते हैं मुस्तक़बिल-ओ-हाल
जब सर पै नाचता है माज़ीका भूत

---

[1]पुजारी [2]असम्भव [3]मूर्खताकी खुशीका बाजा [4]ज़हर [5]कफ़नमें लिपटी [6]वर्तमान और भविष्य इन रुबाइयोंमें हाल शब्द वर्त्तमानके अर्थमें अनेक जगह आयेगा [7]शवको गाड़नेके लिये जिस बक्समें रखते हैं

माज़ीके पुजारी उसे इतना न बढ़ा
मालूम है सब, सबक़ यह औरोंको पढ़ा
क्या कम थे साम्राज-ओ-दौलतके जुनूँ
सरपर जो तेरे जुनूने-माज़ी[1] भी चढ़ा

क्या कहिये ऐसे सरफिरोंके दिलको
जो छुट गई रोते हैं उसी मंज़िलको
माज़ी लेते हैं मोल, क्या सौदा है
यह बेचके हाल और मुस्तक़बिलको

मुस्तक़बिल-ओ-हालका तो सौदा न चुका
यह ऊँचा माल तो पटाये न पटा
माज़ीको बुलाओ यारो माज़ीको बुलाओ
पीछे भागो, बहाओ उल्टी गंगा

पंडितजी, शेख़जी, महाजन, क़ाज़ी
अब लड़ भिड़कर हुए हैं इसपर राज़ी
जनताको लगी है अब नई दुनियाकी
मिलकर नारा लगाओ माज़ी माज़ी

रगड़ेपर चर्ख़[2] दे रहा है रगड़ा
लेकिन ले मोल कौन इनसे झगड़ा
मुस्तक़बिल-ओ-हालसे जो फेरे हुए मुँह
माज़ीसे माँगते हैं रोटी-कपड़ा

काँटेके दहानेसे[3] दहाना फाड़ो
तुम ग़ाज़ी मर्द हो तो चाबुक आड़ो

---

[1]अतीतकी अंधपूजाका पागलपन [2]आकाश [3]मुँह, नोक

तुम थानके टर्रे हो जनाबे-माज़ी
हैं हाल सवार तुम पै पुश्तक झाड़ो[१]

हर बात पै बेचारे बिगड़ जाते हैं
हर बहसमें बेचारे उखड़ जाते हैं
मुस्तक़बिल-ओ-हालके तक़ाज़े सुनकर
यह हज़रते-माज़ी हैं अकड़ जाते हैं

कितने खुश आये कितने राज़ी आये
बाशौकत-ओ-शान[२]-शेख़-ओ-क़ाज़ी आये
कलचर पै धुआँधार करेंगे तक़रीर
जैकार करो हज़रते-माज़ी आये

कल्चरकी जब अहमियतको[३] समझाते हैं
क्या फूल हिमाक़तके वो बरसाते हैं
दर्शन हुए जाते हैं अभी भक्तोंको
सोटा लिये वो राजरिशी आते हैं

झटकाते हैं काँधे—अड़बड़ा जाते हैं
ऐसे मौक़े पै हड़बड़ा जाते हैं
सुलझानेको कहिये कोई उलझी हुई बात
तो राजरिशीजी गड़बड़ा जाते हैं

कितने बेलाग और कितने अक्खड़
ये रूसके नाम हीसे जाते हैं अकड़
खा जाते हैं अमरीकाकी ये धौंस पै धौंस
यह हज़रते माज़ी भी हैं कितने घामड़

---

[१]पिछाड़ी [२]शान शौकतके साथ [३]महत्व

वल्लाह निकालते हैं यूँ दिलकी भड़ास
सब राजरिशीसे बाँधे बैठे थे आस
भूखों-प्यासोंको आज वक़्ते-तक़रीर
वह डाँट पिलाई न रही भूख न प्यास

कुछ बेहतर हिन्दकी तबीयत न हुई
पैदा कोई उम्मीदकी सूरत न हुई
कलचरकी भी सूइयाँ लगीं बरसों तक
बीमार हयात रू-बसेहत[1] न हुई

सुनते हो ! साजे सरमदी[2] कोई नहीं
बदले न जो ऐसी ज़िन्दगी कोई नहीं
अक़दारे-दायमी[3] पै मिटनेवालो
दुनियामें क़द्रे-दायमी[4] कोई नहीं

कुछ लोग मिटे हुए हैं माज़ीके लिये
है हिन्दका हाल[5] बिक्रीके लिये
मुस्तक़बिलको भी कर रहे हैं यह रेह्न
अमरीकाके हाथ रूखी-सूखीके लिये

यह नुत्क़के नूरबाफ़[6] माने जाने
नेता भी हैं रुपयेमें सत्रह आने
भारतका कफ़न सीते हैं फिर करके दुरुस्त
माज़ीके यह टूटे हुए ताने बाने

---

[1]रोगी जीवनका स्वास्थ्य न सुधरा [2]स्वर्गीय संगीत [3]सदा बने रहनेवाले मूल्य, मान [4]हमेशाके लिये बना रहनेवाला मूल्य, मान [5]वर्त्तमान [6]बातके बुनकर

ऊँचा सौदा पटा रहे हैं बौने
पगला रखा है माज़ियोंके रौने
घातेमें दे दिया है मुस्तक़बिलको
और हालको बेचते हैं औने-पौने

दामन माज़ीसे इनका अटका सौ बार
खाया हठधर्मियोंका झटका सौ बार
माज़ीके दोशपर गये थे चढ़ने
माज़ीने उठा-उठाके पटका सौ बार

चटकती कलियाँ

(रुबाइयाँ)

रुबाइयोंकी चर्चा अब हिन्दीमें बहुत फैल चुकी है। हर रुबाई चार पंक्तियोंकी होती है। लेकिन रुबाईके लिये कुछ विशेष छन्द नियत कर दिये गये हैं। इन छन्दोंमें अल्हड़ चालकी गति होती है जो हमारे छन्द और पिंगलके लिये एक नई चीज़ है। रुबाईमें छन्दके नए झटके या खटके और नई गतियाँ मिलती हैं। चार पंक्तिकी रुबाइयोंमें एक पूरी बात या विचार वर्णन, दृश्य या सिद्धान्त व्यक्त किया जाता है। रुबाईकी चार पंक्तियोंमें प्रायः तीसरी पंक्ति अतुकान्त होती है। पहली, दूसरी और चौथी पंक्तियाँ तुकान्त होती हैं। कभी कभी चारों पंक्तियाँ तुकान्त होती हैं। गम्भीर और संक्षिप्त विचारोंके लिये रुबाईका माध्यम बहुत उपयुक्त होता है। रुबाईके संगीत और उसकी लय और विचार या भावकी तान चौथी पंक्तिपर टूटती है। रुबाईमें सफल होनेके लिये कई बरसकी मश्क़ या अभ्यास ज़रूरी है। ४० बरससे कम उम्रका शायर रुबाइयोंमें सफलता प्राप्त नहीं कर पाया है।

(१)

ऐ मानिये कायनात[1] मुझमें आजा
ऐ राज़े-सफ़ाते-ओ-ज़ात[2] मुझमें आजा
सोता संसार झिलमिलाते तारे
अब भीग चली है रात मुझमें आजा

---

[1]सृष्टिका अर्थ [2]तत्व और गुण के भेद या निर्गुण सगुणके भेद

(२)

दिन रात शजर[1] हजरकी नब्जें हैं तपाँ[2]
हर साँस जमीनकी है सोजाँ सोजाँ[3]
मदफ़ून[4] वहाँ कौनसी चिनगारी है
अब तक उठता है बत्ने गेतीसे[5] धुआँ

(३)

हर ऐबसे माना कि जुदा हो जाये
क्या है अगर इन्सान ख़ुदा हो जाये
शायरका तो बस काम ये है हर दिलमें
कुछ दर्दे-हयात और सिवा हो जाये

(४)

कुछ नजरिये हैं हर एक तमद्दुनकी बिना
तारीख़ तसादुम उन्हीं आदर्शोंका[6]
तहजीबोंको है अपनेसे ख़तरा यानी
है नक्शे-फ़िक्रियात पैग़ामे-क़जा[7],

---

[1]शजर=पेड़, हजर=पत्थर, [2]नब्जें हैं तपाँ=नाड़ी जल रही है
[3]जली जलीसी [4]गड़ी हुई, दफ़्न [5]धरतीके गर्भ
[6]प्रत्येक संस्कृतिके कुछ सिद्धान्त हैं, इतिहास उन्हीं आदर्शोंके टकरावका नाम है, आज सभ्यताओंको अपने हीसे ख़तरा है क्योंकि आजके विचारोंका विषय मृत्युका संदेश है, अर्थात आज रचनात्मक कार्योंसे अधिक विध्वंसकारी शस्त्रोंके आविष्कारोंके विषयमें सोचा जा रहा है जो संसारके लिये मृत्युके संदेशके समान है [7]मृत्यु-संदेश

(५)

तारीकीका रहे ज़मानामें न दाग़
उस नूरे-हयातका लगाते हैं सुराग़
मौजे-नफ़से-सर्द[1] दिये जाती है लौ
धारे पै फ़नाके हम जलाते हैं चराग़

(६)

कल लन्दन-ओ-न्युयार्कमें गूँजी ये सदा
मालूम भी है रोजे-हिसाब आ पहुँचा
कब तक यह मलूकियतके ख़्वाबे-नोशीं[2]
भागो-भागो कि एशिया जाग उठा

(७)

लहराया पसे-उफ़क़ निशाने फ़र्दा[3]
तारीख़ने छेड़ी दास्ताने फ़र्दा
छिपता जाता है कारवाने इमरोज़[4]
बढ़ता आता है कारवाने फ़र्दा

(८)

दिन डूब गया तो बात कुछ और भी है
आँख ओझल वारदात कुछ और भी है
ख़ामोशी व तीरगी व ख़ुनकीके सिवा
ऐ अन्जुम-ओ-माह[5] रात कुछ और भी है

---

[1]ठंडी साँसकी लहर [2]यह साम्राजकी नींद, नशा
[3]कल (भविष्य)का निशान [4]आज (वर्त्तमान) [5]तारे और चाँद

(९)

हर जिस्मको हम करते रहे जाननुमा
फ़ितरतको[1] बनाते गये इन्सानतुमा
ग़द्दार अनासिरको किया हमने मुतीअ[2]
होता गया क़ह्‌मान[3] रहमाननुमा[4]

(१०)

कह दो बामे-फ़लकसे[5] हो और बलन्द
सय्यारोंकी[6] रफ़्तार भी हो जाय दोचन्द
बेलाग मह-ओ-मेह्‌र खिंचे आते हैं
पड़ती है जहाँ निगाहे-शायरकी कमन्द

(११)

इन्सानको मह्‌व खाते पीते गुज़रे
इस मंज़िलसे वो पाँव आगे न धरे
वहशीके अमलकी इन्तहा सैद-ओ-शिकार
गर इश्क़ न हो अमल तरक़्क़ी न करे

(१२)

विजदानेजमाल[7] एक जौहर है लतीफ़[8]
बे इसके नेकियाँ भी रहती हैं कसीफ़[9]
बेफ़ायदा शायरीकी जहमत न करें
हर एकके बसका नहीं यह फ़न्ने-शरीफ़[10]

---

[1]प्रकृति [2]अपने बसमें [3]विनाशका देवता [4]दयालु [5]आकाशकी छत [6]नक्षत्रों [7]रूपकी मस्ती [8]पवित्र, निर्मल [9]मैली [10]ऊँची कला

(१३)

वह फूट मज़ाहिबे-जहाँने डाली
अख़लाक़में[१] भी पड़ गई नफ़्सी नफ़्सी[२]
अख़लाक़ हयाते-इजतमाईकी[३] है देन
माहौलकी मीरास[४] नहीं बट सकती

(१४)

इस नज़्मके[५] बचनेका नहीं कोई उपाय
बैठे हैं मगर चारागर इक आस लगाय
जैसे मरते मरीज़के सम्बन्धी
सोचें कि अजब क्या ये कहीं बच ही जाय

(१५)

इक हल्क़ए-नूर था अबदका मन्ज़र[६]
आवेज़ाँ[७] बेशुमार ख़ुरशीद-ओ-क़मर
ताहद्दे-नज़र सिलसिलए-मौजूदात[८]
हर शैसे उभर रही थी तारीख़े-बशर[९]

(१६)

तू बज़्मे-सुख़नमें[१०] नग़मारुवाँ होता है
मुतरिब मुझे कुछ और गुमाँ होता है

---

[१]शिष्टाचार [२]त्राहि त्राहि [३]सामूहिक जीवन [४]विरासत [५]पूंजीवादी [६]दृश्य [७]असंख्य सूर्य चाँद लटके हैं [८]जहाँ तक दृष्टि जाती है वहाँ तक सृष्टिकी श्रृंखला [९]मानव इतिहास [१०]कवि-सम्मेलनमें कविता पाठ

नग़माते-ख़ुश-आहंगके[1] हर पर्देमें
इक साज़े-सकूते-बेकराँ होता है[2]

(१७)

शायरके तसव्वुरात हैं कितने हसीं
इक आलमे-रंग-ओ-नूर रक़्साँ है कहीं[3]
जैसे दमे-सुब्ह लहलहाती किरनें
जब चूम रही हों वो हिमालयकी जबीं

(१८)

हंगामए-रोज़गार[4] दम लेते हैं
संसारका हम भेद भरम लेते हैं
ये लमहे वो हैं जब दिले-शायरमें 'फ़िराक़'
कुछ रम्ज़-ओ-कनायात[5] जनम लेते हैं

(१९)

खोई हुई हस्तीका वहम हो जाना
आज़ादे-फ़रेबे-कैफ़-ओ-कम[6] हो जाना
तू राज़े-हयात पूछता है मुझसे
वह राज़ है शाइस्तए-ग़म हो जाना[7]

(२०)

यह तेरी ख़ुशी भी है फ़क़त ख़ुश-फ़हमी[8]
क्यों चाश्निये-ग़मकी हो हस्तीमें कमी

---

[1]सुन्दर राग [2]अनन्त मौनका साज़ [3]रंगों और प्रकाशकी दुनिया नृत्य कर रही है [4]जीवनकी हल चल, समयकी हलचल [5]संकेत और इशारे [6]थोड़े बहुत, कैसे और कितनेकी चिन्ता [7]दुख सहनेके योग्य [8]किसीके प्रति अच्छे विचारोंको ख़ुशफ़हमी कहते हैं

संसारमें जिस चीज़को छू देता हूँ
मिल जाती है 'फ़िराक़' अश्कोंकी नमी

(२१)

हर साज़से होती नहीं ये धुन पैदा
होता है क़िस्मतोंसे ये गुन पैदा
गहवारए-तहज़ीबमें सदियों पलकर
होता है हयातमें तवाज़ुन[१] पैदा

(२२)

सहरामें ज़माँ-मकाँके[२] खो जाती हैं
सदियों बेदार रहके सो जाती हैं
अक्सर सोचा किया हूँ ख़ल्वत[३]में 'फ़िराक़'
तहज़ीबें क्यों ग़ुरूब[४] हो जाती हैं

(२३)

खुलता नहीं यह भेद है क्या, बात है क्या
इलहाम कहें इसको कि समझें इल्क़ा[५]
तख़लीक़े-सुख़नके[६] वक़्त कानोंमें 'फ़िराक़'
अक्सर परे-जिब्रीलकी आई है सदा[७]

---

[१]सन्तुलन　[२]देशकालके वनमें　[३]एकान्त　[४]अस्त
[५]ईश्वरीय ज्ञान या दैवी संकेत मुहम्मद साहबके पास ईश्वरीय सन्देश लानेवाले फ़रिश्तेका नाम जिबरील था　[६]कविताकी रचनाके समय　[७]आवाज़

(२४)

एक दिन शायर हरीमे-क़ुदरतमें[1] गया
सरबस्ता मशीयतोंको[2] जाँचा परखा
और उनमें आख़िरी मशीयत यह थी
इन्साँका मशीयतों पै क़ाबू पाना

(२५)

क़ब्ल इसके कि हो फ़ैसलए-ख़ैर-ओ-शर[3]
जीनेका सबूत दे जमानेको बशर
बेहिस किरदारे-नेकसे[4] मौत भली
नामर्द अख़लाक़से जरायम[5] बेहतर

(२६)

गो बज़्मे-सुख़नमें आप लाये तशरीफ़
ख़ुश होंगे सुनके क़ाफ़िया और रदीफ़
इसका क्या कीजिएगा ए हाकि-मेवक़्त
एहसासे-लतीफ़से[6] जो होगी तकलीफ़

(२७)

अल्फ़ाजके पर्दोंमें करो इसका यक़ीं
लेती है साँस नज़्मे-शायरकी जमीं
आहिस्ता गुनगुनाओ मेरे अशआर
डर है न मेरे ख़्वाब कुचल जायें कहीं

---

[1]विधाताके दरबार [2]छिपी हुई ईश्वरेच्छाओं
[3]भलाई बुराई, नेकी बदी [4]चेतनाहीन, अनुभूतिहीन अच्छे चरित्र
[5]अपराध [6]नर्म नाज़ुक, पवित्र भावना

(२८)

औरत रूह-ओ-रवाने-तहज़ीबे-बशर[१]
है परतवे रुख़ जलवादहे क़ल्ब-ओ-जिगर[२]
औरतकी वह ज़ात है अज़लसे जो 'फ़िराक़'
हस्तीको लिये जाती है आगे ऊपर

(२९)

इक राज़से कर रहा हूँ तुझको आगाह
ममनूओ-हराम[३] कुछ नहीं है वल्लाह
जिस काममें महवीयते-कामिल[४] न रहे
ए दोस्त समझ ले कि है वह काम गुनाह

(३०)

पाते जाना है और न खोते जाना
हँसते जाना है और न रोते जाना
अव्वल और आख़िरी पयामे-तहज़ीब
इन्सानको इन्सान है होते जाना

(३१)

वायज़[५] तेरी जन्नत है फ़क़त वह्म ओ-गुमाँ
है रश्के-फ़िरदौसे-बरीं-बाग़े-जहाँ[६]
तू इसको फ़रेब-रंग-ओ-बू कहता है
तिनका भी है इस बाग़का रश्के-रगे-जाँ[७]

---

[१]मानव सभ्यताकी जान [२]चेहरेकी किरन और दिल व जिगरका दर्शन करानेवाली [३]निषिद्ध [४]पूरी लगन, तल्लीनता [५]उपदेशक, मुल्ला [६]दुनिया स्वर्गके बराबर है [७]जिसपर प्राणीमात्रकी नाड़ीको ईर्ष्या हो

(३२)

ए शेख़ मआले-ज़ोहद ओ तक़बा मालूम[१]
दुनिया ही न हाथ आई तो उक़्बा[२] मालूम
इन्कार है मासवाए अल्लाह तुझे[३]
ख़ामोश कि मासवाए दुनिया मालूम

(३३)

इन नज़्मोंमें तासीरे-शफ़ा है जो बहम
राज़ उसका तुम्हें आज बताते हैं हम
दिलके सोज़े-निहाँमें होकर तहलील[४]
कुछ नश्तरे-तेज़ बन गये हैं मरहम

(३४)

शाख़ोंपै कँवल गुलके जला देती हैं
सोये हुए फ़ितनोंको जगा देती हैं
यह आलमे-सोज़-ओ-साज़े गुलज़ारे-जहाँ[५]
शबनमकी लवें आग लगा देती हैं

(३५)

बोला शोला चमनका बेबाक हैं हम
और ख़ंजरे-रंग-ओ-बू कि सफ़्फ़ाक[६] हैं हम
शबनममें धुले हुए शगुफ़ोंने[७] कहा
हम दीदए-गुलज़ार हैं, नमनाक हैं हम

---

[१]पूजापाट और त्यागका परिणाम [२]परलोक [३]ईश्वरके सिवा [४]दिलकी जलनमें घुलकर [५]संसार वाटिकाकी गर्मी नर्मी [६]रंग और सुगन्धकी तेज़ तलवार जैसी लहर [७]कलियों

(३६)

दुनिया है फ़साना बहदीसे-दिगराँ[१]
कहते जिसे आ रहे हैं उनवाँ उनवाँ[२]
दुनिया किसकी ग़लतबयानी है 'फ़िराक़'
हर झूठमें जिसके सद हक़ायक़ पिनहाँ[३]

(३७)

कुछ रिन्दोंको सुनगुनसी मिली है साक़ी
नौयुगके जनमकी ये घड़ी है साक़ी
तख़लीक़के[४] लमहे थरथराये सरे-जाम
यह शाम इक गोद भर रही है साक़ी

(३८)

ह क्या नये इन्साँके जनमके आहंग[५]
यज़दाँ भी दमबख़ुद[६] फ़रिश्ते भी दंग
माँ बननेका सकून कर्बे-तख़लीक़[७]
रूए-गेतीके[८] ये बदलते हुए रंग

(३९)

पीछे बीते जुगोंके उड़ते हैं ग़ुबार
आगे मुस्तक़बिलोंके दश्ते-पुरख़ार[९]

---

[१]दूसरोंके मुँहसे कही गई कहानी [२]अनेक शीर्षक देकर [३]सौ सत्य छिपे हुए [४]मदिराके भरे प्यालेके ऊपर सृष्टिकरणके क्षण थरथराये [५]आवाज़, राग [६]दमसाधे [७]प्रसव पीड़ा [८]धरतीके चेहरे [९]काँटोंसे भरा जंगल

ऐ क़ाफ़िलए-हयात बचते रहना
सहरा है ज़माँ मकाँका[1] दुश्वार गुज़ार

(४०)

यह क़ौले 'फ़िराक़' सुनके तू हैराँ है
राज़-उल-राज़ इसमें ज़ीस्तका पिनहाँ है[2]
हावी है मशीयते-इलाही[3] सबपर
उसपर हावी मशीयते इन्साँ है[4]

(४१)

इंसान ख़ुद अपनी मंज़िल अपना रहबर
कौन इससे कहे राहे-सफ़र खोटीकर
तारीख़ोंके दौर उड़ गये मिस्ले-ग़ुबार
जारी है कारवाने-इंसाँका सफ़र

(४२)

सब लोग करेंगे नज़्र तुझको क्या क्या
दुनियामें है इक उम्रका लेना देना
औरोंसे मिल रहेंगे ग़म और नशात
संजीदगिये-शऊर[5] मुझसे ले जा

(४३)

कल रात परी थी एक रक़्साँ सरे-जाम[6]
उड़ते हुए कह गई यह राज़े-अय्याम

---

[1]देश कालका वीरान बन बड़ा दुर्गम है [2]जीवनका रहस्य छिपा है [3]ईश्वरेच्छा [4]मानव इच्छा [5]चेतनाका गाम्भीर्य
[6]शराबके भरे प्यालेपर परी नाच रही थी

हर सुब्ह तबस्सुमे-लबे-लालीं है[1]
हर शाम उस आहुए ख़ुतनका[2] है पयाम

(४४)

ज़ुलमतकी तहमें मौज आबे-ज़रकी
आकाशपर इक झलकसी रूए-तरकी
आखें मलती उठी वह दोशीज़ये-सुब्ह[3]
तारों भरी रातकी वो चादर सरकी

(४५)

पलकें-सी फ़ज़ाए-शामने झपकाईं
हर सिम्त धुवाँ-धुवाँ घटाएँ छाईं
उस गेसुए-अम्बरींकी[4] गिरहें जो खुलीं
ख़ुशबूसे लदी हुई हवाएँ आईं

(४६)

वह हुस्ने-ख़राम है कि कौसर[5] प्यासे
छिड़ जाते हैं राग जुम्बिशे-आज़ासे[6]
चिड़ियोंके परोंमें जैसे लिपटे हुए गीत
यूँ नग़मे फूटते हैं दस्त-ओ-पासे[7]

(४७)

रंगीन नज़ारोंका तमाशा कर ले
दामाने-निगाह इन गुलोंसे भर ले

---

[1] लाल होंठोंकी मुस्कान [2] ख़ुतन नगरके हिरन, वहाँके हिरनकी कस्तूरी प्रसिद्ध है [3] प्रभात-कुमारी [4] काली सुगंधित काकुलों [5] स्वर्गकी मीठे पानीकी नहर [6] अंगोंकी गति [7] हाथ पाँवसे

ऐ दिल यह सैरे-सरसरी मौत सही
मरने ही पर आया है तो अच्छा मर ले

(४८)

गोया जन्नतका जाम छलकाया है
जिस गुलकी नज़र पड़ी वो शरमाया है
किसके लिए पिछली रात रोये हो 'फ़िराक़'
चेहरा जो दमे-सुब्ह निखर आया है

(४९)

लफ़्ज़ोंकी दुकाँको अब बढ़ाना होगा
कुछ करके मुअल्लिमको[१] दिखाना होगा
तालीमको ख़ल्लाक़े-अमल[२] होना है
पंजोंमें दिमाग़ अब बसाना होगा

(५०)

कहते हैं 'जिगर' हुस्न है मौज़ूए-सुख़न[३]
लेकिन ख़ुद हुस्न क्या है ए मुशफ़िक़े-मन[४]
जज़्बे-पैग़म्बरी सुख़नको जो करे[५]
वह हुस्ने-अमल है कि है रअनाइये-तन[६]

(५१)

किन किन धोकोंमें मुब्तला है इन्साँ
क्या ऐश-ओ-नशात कैसे रंज-ओ-हिरमाँ[७]

---

[१]अध्यापक [२]क्रियाका निर्माता [३]उर्दूके मशहूर शायर जिगर मुरादाबादीका कथन है कि कविताका विषय सौन्दर्यसे बढ़कर दूसरा नहीं है [४]मेरे मित्र [५]जो पैग़म्बरीका एक अंश कविताको बनाये [६]वह क्रिया, कार्यका सौन्दर्य है या शरीरका [७]रंज, ग़म, दुख

हस्तीमें कहींसे देख ख़ामी[1] न रहे
बस राज़े-हयात पुख़्तगी[2] है नादाँ

(५२)

पल मारते इस जहाँका नक़्शा बदला
अपनेको भी पहचानना दुश्वार हुआ
दुनिया फिर एक बार पलटा लेगी
ए दीदए-हैराँ अभी देखा ही क्या

(५३)

बज़्मे-पैग़म्बराने-आलममें[3] कभी
पहुँचा तो अम्बिया सफ़ आरा थे सभी
पूछा है मुन्किरोंमें[4] मुमकिन एख़लाक़
सब दाढ़ी खुजाने लगे अपनी-अपनी

---

[1]अपरिपक्वता [2]परिपक्वता [3]अवतारों, पैग़म्बरोंकी सभा
[4]नास्तिकोंमें शिष्टता सम्भव है

नई चेतना

(रुबाइयाँ)

इन रुबाइयोंमें हमारे वर्त्तमान सामाजिक जीवनके कई पहलुओंपर प्रकाश डाला गया है। देशकी आत्मा बहुत तेज़ीसे बदल रही है। इन रुबाइयोंमें जिस नई भारतीय चेतनाकी अनेक झलकियाँ दिखाई गई हैं वह भारतके इतिहास और भारतीय जीवनकी आत्मकथाके एक बिलकुल नए मोड़की ओर संकेत कर रही है। यह परिवर्त्तन या क्रान्ति न गांधीवादकी देन है न गांधीयुगकी। भारतमें अब गांधी-युगके बादका युग उदय हो चुका है।

इक हलक़ए-ज़ंजीर[1] तो ज़ंजीर नहीं
इक नुक़्तए-तस्वीर[2] तो तस्वीर नहीं
तक़दीर तो क़ौमोंकी हुआ करती है
इक फ़र्दकी[3] क़िस्मत कोई तक़दीर नहीं

यह नालए-गर्म ये उभरते हुए दाग़
अंगारोंकी बरखामें यह खिलते हुए बाग़
यह नार-ए-इन्क़लाब, यह शोल-ए-तेज़
तूफ़ानके सीनेमें जलाते हैं चराग़

आपसमें नये क़ौल-ओ-क़सम लेते हैं
संसारको पलटा ही के दम लेते हैं
होता है जब इन्क़लाब इन्सानोंमें
बाहम नये सम्बन्ध जनम लेते हैं

---

[1]ज़ंजीरकी कड़ी [2]चित्रका एक बिन्दु [3]व्यक्ति

ऐ शायरे ख़ुशनवा है तेरी वह ज़ात
जो सोती हुई जोत जगाये दिन रात
अपनी ही लज़्ज़ते-बयाँमें[1] न हो गुम
दम भर न छुटे मन्सबे-नक़्क़ादे-हयात[2]

अल्लाह न अह्रमन[3] न देव[4] और जिन्नात
अरवाहे-ख़बीसः[5] न शयातीनकी ज़ात
देवी, देवता न कोई भूत और चुड़ैल
इन्सानका इन्सान है दुश्मन हैहात[6]

एक लमहा बक़ासे भी यहाँ लम्बा है
कौनेनकी[7] ज़िन्दगी भी एक लमहा है
कल मैंने फ़िराक़ वक़्तके चेहरेको
आईन-ए-हुस्ने-दोस्तमें देखा है

कल रात गये फ़िक्रे-सुख़नके[8] हंगाम
विजदाने-जमालके छलकते हुए जाम
वह कश्फ़-ओ-करामातका आलम कि 'फ़िराक़'
हर पलपर पढ़ रहे थे सदअक्से दवाम[9]

साक़ीके हाथसे शगूफ़ा छूटा
सर चश्मए-आफ़ताब ख़ुमसे[10] फूटा
मैख़ानए-ज़िन्दगीमें दौरे-नौ के[11]
साग़र खनके ख़ुमारे-माज़ी टूटा[12]

---

[1]अपनी ही बातके मज़ेमें, स्वादमें [2]जीवनका आलोचक
[3]शैतान [4]राक्षस [5]बुरी आत्माएँ [6]हाय हाय [7]सृष्टि
[8]काव्यरचनाके समय [9]अनन्त कालके सौ प्रतिबिम्ब
[10]शराबकी सुराही, बड़ा बरतन [11]नव-युग [12]अतीतका ख़ुमार

मैख़ाना ! नमाज़े-शाम होती है शुरुअ
शीशोंके सरे जाम सूजूद[1] और रुकूअ[2]
मेह्रे-आफ़ाक़ सोज़[3] होता है ग़रूब
रिन्दाने-सियाहकार होते हैं तुलूअ[4]

उलझी हुई गुत्थियोंको बल देते हैं
कब वह कोई पैग़ामे-अमल देते हैं
यह फ़लसफ़ी शरहे-ज़िन्दगी[5] करते हैं
हम ज़िन्दगी यकलख़्त[6] बदल देते हैं

हाबीलके[7] दाग़े-ख़ूँ तो धो लेने दो
मीरासे-बहीमियत[8] तो खो लेने दो
फ़ौक़ुल-इनसाँकी[9] मुन्तज़र[10] है दुनिया
इन्सानको इन्सान तो हो लेने दो

ग़ैरतको सुस्त असास[11] कर देता है
एहसान भी बदहवास कर देता है
इनसानका जज़्बए-तशक्कुर[12] हमदम
अक्सर मुझको उदास कर देता है

---

[1],[2]नमाज़में खड़े होकर आधे झुकनेको रुकूअ और बैठकर सिर झुकानेको सजदा करना कहते हैं, सूजूद=सजदाका बहुबचन [3]दुनियाको झुलसानेवाला सूर्य अस्त होता है [4]उदय [5]जीवनकी व्याख्या [6]एकदम [7]आदमका लड़का [8]बर्बरताकी विरासत [9]फ़ौक़ुलइनसाँ=Superman महान आत्मा [10]प्रतीक्षा कर रही है—आदम पहले मनुष्य माने जाते हैं। क़ुरानमें आया है कि उनके हाबील और क़ाबील नामके दो पुत्र थे। क़ाबीलने हाबीलको मार डाला था, वह पहली घटना थी जो मनुष्यने मनुष्यकी हत्या की—यहाँ उसी घटनाकी ओर संकेत है [11]स्वाभिमानको दुर्बल बना देता है [12]कृतज्ञताका भाव

वह रह्म-ओ-करमका शाख़साना[१] न रहा
ख़ैरातका ख़ुल्क़को[२] बहाना न रहा
यह दौरे-मसावात[३] है पैसेवालो
अब ख़िदमत-ओ-एहसाँका ज़माना न रहा

बेहिस हैं रगे-हमीयत[४] इनकी उकसाओ
हथफेर दया धरमके इनको समझाओ
अय्याशिये-ख़ैरात[५] मिटा देती है
अफ़लास ज़दोंको[६] दानवीरोंसे बचाओ

काँग्रेस-मुस्लिमलीग और जनता

कुछ लिखे पढ़े हो पैसेवाले हो ज़रूर
हर बात बजा तमाम दावे मंज़ूर
हाथोंमें अवामके हैं तक़दीरे-अवाम
तुम कबसे बन गये अमीने-जम्हूर[७]
बाँटा औरोंने कब हमारे ग़मको
गाँधीजी और क़ायदे-आज़मको
हम अच्छी तरह जानते हैं यह तो बताओ
यह कौन तुम्हें सौंपनेवाले हमको
हम लोगोंने दुनियामें किये थे क्या पाप
कब तक झेलें यह दुख सहें यह सन्ताप

---

[१]झगड़ा [२]दान करके धर्म और सदाचारके प्रदर्शनका बहाना नहीं रहा [३]साम्यवादी युग [४]चेतनाहीन लोगोंके स्वाभिमानको जगाओ [५]दान देनेकी ऐय्याशी, दान देनेको भी एक फ़ैशन मानना, दान देने, दान लेनेका भोग-विलास या आनन्द [६]निर्धनों [७]जनताके हितरक्षक

इस उल्फ़ते-मादरी-वो-पिदरीसे पनाह
क्यों सेठजी बन गये हमारे माँ बाप
दुनिया बदली, पुराने सम्बन्धके तौर--
बदले, यह इन्क़लाब है क़ाबिले-ग़ौर
अब रहा तलब न कोई औरत है न मर्द
यह दौरे ज़माना है मसावातका दौर
यह लीग और कांग्रेसकी माया समझो
जनताकी पलट चुकी है काया, समझो
गांधीका देस हो कि जिन्नाका मुल्क
दोनों ही में इन्क़लाब आया समझो

ग़ज़ल

मेरी कविताओंके इस संकलनमें नज़्में (प्रबंध काव्य) और रुबाइयाँ अधिक हैं। ग़ज़लें बहुत कम शामिल हो सकी हैं। मेरी आधीसे अधिक रचनाएँ ग़ज़ल ही हैं जिन्हें किसी और संकलनमें अलगसे दूँगा। ग़ज़ल कहना जितना सहज है उतना ही कठिन भी है। सतही तौररपर रस्मी बातें ग़ज़लमें लिखना सहज है लेकिन दो मिसरोंमें या एक शेरमें एक व्यापक सत्यको कलात्मक ढंगसे बानी दे सकना बहुत नाज़ुक काम है। इस दायित्वसे उऋण होना कलाकारका सौभाग्य है। ग़ज़लके हर शेरमें मज़मून या विचार नया होता है लेकिन उसका सम्बन्ध प्रेम, सौंदर्य, मानवता, नीति या सृष्टिके केन्द्रिक या व्यापी सत्योंसे होता है। कर्कश ध्वनि, जटिल शब्दावली, मोटी भौतिकता, वाह्य बातें, ज़ोर-शोर और डपट, नीरसता, कोरी दार्शनिकता ग़ज़लमें वर्जित हैं। लोच, नर्मी, सरसता और संगीत, सूक्ष्म संकेत, करुणा रस ग़ज़लकी विशेषताएँ हैं। मेरी ये दो ग़ज़लें जो इस संकलनमें शामिल हैं उस परिवर्त्तनकी मिसालें हैं जो उर्दू ग़ज़लमें आ रहा है। नई नैतिक और सामाजिक विचारधारा, नए सिद्धान्त और जीवनके नए मान वर्त्तमान उर्दू ग़ज़लमें व्यक्त किये जाने लगे हैं।

थीं जाने मुहब्बत जिसकी ज़िदें उस दिलने मचलना छोड़ दिया
जिस शमअसे रोशन थीं बज़्में उस शमअने जलना छोड़ दिया
पत्ता-पत्ता, बूटा-बूटा, गुलज़ारमें ख़ाक उड़ाता है
चश्मोंने उबलना छोड़ दिया फ़व्वारोंने चलना छोड़ दिया
वह सोज़-ओ-साज़े महफ़िल न रहा वह कैफ़में[1] डूबे दिल न रहे
जिस बादासे[2] रोशन थे साग़र उस बादाने ढलना छोड़ दिया

---

[1]नशा [2]शराब

क्या सोचते हो जीनेवाले जीते हैं कैसी मुसीबतसे
क़िस्मतने चमकना छोड़ दिया हालतने सँभलना छोड़ दिया
ख़तरेसे नहीं ख़ाली हमदम यों ख़ूगरे-जौर-ओ सितम[१] होना
जो बात दिलोंको खलती थी उस बातने खलना छोड़ दिया
क़ातिल भी हैं कुछ हैराँ हैराँ मक़तल[२] भी हैं कुछ वीराँ वीराँ
कुश्तोंका[३] लहू पी पी के ज़मींने लाल उगलना छोड़ दिया
क्या कह गई अहले चमनसे सबा[४] क्या फूँक दिया कानोंमें फ़सूँ[५]
कलियोंने चटकना छोड़ दिया अशजारने[६] फलना छोड़ दिया
अय्यामे-मुहब्बत[७]में वो दिन काश आ जाये जब कह सकते
बातें भी अपनी जगहपर हैं वादोंने भी टलना छोड़ दिया
तक़दीरें बदली जा सकती थीं हू के[८] नारोंसे हमदम
मुद्दतसे जनूँकी रगमें लहूने हैफ़[९] उछलना छोड़ दिया
गर्दूंका[१०] आजके इन्साँसे गर्मीये-अमलका तक़ाज़ा है
अब सोज़े-नवाए-शबे-ग़मसे[११] तारोंने पिघलना छोड़ दिया
जग बीती तल्ख़ हक़ीक़त है सुन लेनेकी लेकिन चीज़ भी है
हक़ तो वो है बातिल क़िस्सोंसे दिलने भी बहलना छोड़ दिया
लाये हो 'फ़िराक़' ईमान उसपर मैं कहता हूँ उस काफ़िरने
या बात बनाना छोड़ दिया या रंग बदलना छोड़ दिया
छिछले आँसू छिछली लाग, कच्चा पानी कच्ची आग
रख संसारसे सच्ची लाग, झूठा त्याग और बैराग

---

[१]अत्याचार सहनेका आदी होना [२]जहाँ क़त्ल हो [३]मारे जानेवालों [४]पवन [५]जादू [६]पेड़ों [७]प्रेमके दिनों [८]'हू'का नारा लगानेका मतलब है कि 'सिवाय ईश्वरके और कोई नहीं' [९]अफ़सोस [१०]आकाश [११]दुखकी रातके सोज़ भरे, दर्द भरे रुदन

रूखे सूखे रूपसे भाग, इन फूलोंमें रस न पराग
आग भभूका गोरा मुखड़ा, जुल्फ़ें, काले-काले नाग
हुस्न है दरिया इश्क़ है शोला, पानीमें लग जाय न आग
खोल रे दुनिया आँखें खोल, जाग, ओ नींदकी माती जाग
कोमल मृदुल गात यूँ जैसे, सहज सुभाव प्रेम बेलाग
रूपपै यूँ लहलोट है दुनिया, जैसे गतपर नाचे नाग
जादू-जादू मदभरी आँखें, शोला-शोला मदभरे राग
दरिया-दरिया गिरियए इश्क़ सेहरा-सेहरा इश्क़की आग
करके दिखा कुछ लेके न बैठ, जीवनके दुखका खटराग
बोलता साज है जिस्म किसीका, छिड़ा हुआ है प्रेम-बिहाग
वो आकाशकी देवी उतरी, चन्द्र किरनपर गाती राग
कोमल पाँव पड़े हैं लेकिन, जैसे धरती जाये जाग
तान-तानपर पौ फटती है, लौ देता है प्रेमका राग
हुस्नने जब-जब इश्क़को छेड़ा, लाया इश्क़ हज़ारों राग
फूलें फलें संसारमें प्रेमी, बना रहे दुनियाका सोहाग
उसकी निगाहोंके पड़ते ही, मनकी जोत गई है जाग
खेल रहे हैं प्रेम और रूप, कैसा लगाव कहाँकी लाग
आज मना ले दुनिया होली, अपने लहूसे खेल ले फाग
काली रातमें पड़ी दरार, खुलते हैं दुनियाके भाग
तोसने-वक़्तके[1] असवारोंके, हाथसे छूट गई है बाग
आँखके अन्धे गाँठके पूरे, क्या कहना ऐसोंके भाग
सोनेको तो उम्र पड़ी है, एक दुनियामें आज है जाग
और ही धुन है अब जीवनको, कैसा रंग कहाँका राग
दुनियाकी मंज़िल बदले, मेह्‌-ओ-माहकी मोड़ दे बाग

---

[1]समयके अश्वपर सवारी करने वालों, समयको वशमें करनेवालों

लेंगे क़दम सूरज और चाँद, जिसने साधा है बैराग
शामके सायेमें दुनियाको, साज़े-जनूँ देता है राग
अँगड़ाई लेती है जवानी, या है छलकती पिघली आग
खुला निगहसे दिलका हाल, ताँत बाजते बूझा राग
पूछ न क्या है वो रसकी पुतली, भीतर ठंडक बाहर आग
आते ही जल उठे चराग़, रूप है तेरा दीपक राग
लहराये आकाशमें तारे, जैसे रात पड़ी हो जाग
यूँ लहराती हैं वो जुल्फ़ें, जैसे गत चलता हो नाग
झिलमिल झिलमिल रूप है तेरा, जगमग जगमग तेरा सोहाग
हुस्नकी सेना इश्क़ अकेला, फट न पड़े ये लश्कर भाग
हुस्न शबनमी पैराहनमें, जैसे दबी-दबीसी आग
प्रेम रूपवालोंमें यूँ है, जैसे कोई पुराना दाग
चंचल चपल रूप यूँ जैसे, अधखिली कलियाँ अधसुने राग
हाथ न डाल मुहब्बतमें, आग है, आग है, आग है, आग
डस न ले कहीं तुझे ये 'फ़िराक़' भाग बलाए-इश्क़से भाग

शीर्षक ढूँढ़नेवाले कविसे

एक बार हिन्दीके कवि अपने मित्र श्री बच्चनजीसे मेरी बात हुई। मैंने कहा कि बच्चनजी ! आजकी दुनियामें किसी कविको शीर्षक या विषय-की कमी नहीं होनी चाहिए। आजकी दुनिया मानव इतिहासके सबसे महत्वपूर्ण नाटकका रंगमंच है। यथार्थसे भागकर ख़्याली दुनिया या सपनेकी दुनियामें जो कवि विषय या शीर्षक ढूँढेगा उसे तो सम्भवतः यह समस्या पेश आ सकती है कि पुराने कवियोंने सब विषय छान डाले और दूसरेके चबाये हुए निवाले मुँहमें किस तरह रखे जायं लेकिन जो कवि आँखें खोलकर अपने चारों तरफ़की दुनियाको देखता है उसके लिए विषय और शीर्षककी कमी होना तो दूर रहा इतना बाहुल्य मिलेगा कि अनगिनत विषयोंमेंसे विषय पाना नहीं विषय चुनना एक समस्या बन जायगी। इस कवितामें इस ओर भी संकेत है कि मुसीबतोंमें फँसी हुई जिन्दगी, जीवनके कुरूप दृश्य या संसार भरमें जो करोड़ों प्राणी जीवनको बदलने और उसको सुन्दर बनानेका संगठित प्रयत्न कर रहे हैं यह सब महान काव्य या सुन्दर कविताकी रचनाके लिए अत्यन्त उपयुक्त हैं। प्रकृतिकी छटा या रूपवती कन्याओं या रूपवान युवकों या पुरानी कथाओंके विषय ही कविताके विषय नहीं हैं। सौन्दर्य उपासनाके लिए सबसे सुन्दर, सत्य मनुष्य जातिका वह महान प्रयत्न है जिसके द्वारा वह किसी युगके इतिहासका निर्माण करता है। इस कविताकी भाषा भी अत्यन्त सहज है लेकिन इसकी शैली "धरतीकी करवट", "बंजारानामा", "डालरदेश" "रोटियाँ" इत्यादि शीर्षक कविताओंसे बिलकुल अलग है। जितनी रंगारंगी और शैलियोंके जितने प्रकार सरल भाषामें पैदा किये जा सकते हैं उतने संस्कृत गर्भित या संस्कृत ग्रसित हिन्दीमें पैदा नहीं किये जा सकते और न वर्णनके इतने स्तर।

[१]

कविताका शीर्षक ढूँढनेवाले, यह भी कोई बात हुई
सड़कोंपर चल, बाज़ारोंमें जा, गलियोंके चक्कर काट कभी
इस चलती फिरती दुनियामें, ताँगोंमें, बसोंमें, ट्रामोंमें
ठेलेवालों, रिक्शेवालों, इक्केवालोंके अड्डेपर
स्टेशनोंके हंगामोंमें, ट्रेनोंकी रेलों पेलोंमें
काँधोंसे जहाँ काँधे छिलते हैं ऐसे मेलों ठेलोंमें
रस्तोंपर खेलते बच्चोंमें, दफ़्तरको जाते बाबुओंमें
बीड़ीवालों, खोमचेवालों, तम्बोलियोंकी दूकानोंपर
टोलोंमें, मुहल्लोंमें, क़स्बोंमें, देहातोंमें, शहरोंमें
खेतोंमें झक मार रहे हैं उन कंगाल किसानोंमें
मिलों, कारख़ानों, फ़ैक्टरियोंके पेट कटे मजूरोंमें
नदियों नालोंके घाटोंपर नगरोंकी राहों बाटोंपर
वह चेहरे नज़र आ जायेंगे, वह बातें सुनाई देंगी तुझे
जो उत्तर रामचरितसे बढ़कर, महानाटकोंसे बढ़कर
दुख दर्दकी मारी इस दुनियाकी हैं मुँह बोलती तस्वीरें
जो पूँजीवादी विषम सभ्यताके अत्यन्त भयानकपनकी
पलकों-पलकों बातों-बातोंमें रामकहानी कहती हैं
जो धर्म संस्कृति झूठी आज़ादीका भेद भरम खो दें
वह आँखें उठेंगी तुझपर जिन आँखोंसे नरक झाँकता है
दुनियासे ज़रा आँखें तो मिला वह लोग नज़र आयेंगे तुझे
जिनकी हर साँस प्राण पीड़ा है जीवनकी चोटें खाये
जिनकी हर चाल मूर्च्छा है पग-पगपर तेवरा जाये
जो फिरते हैं अपने ही गलेसे अपनी लाशें लटकाये
ये अपने पाँव चलनेवाले जनाज़े तूने देखे हैं

इन चलते-फिरते मणिकरणिका घाटोंपरकी शोभा देखी
सोनोंकी चिताओंसे जैसे दिन रात धुआँसा उठता है
इस जीवन दुखसे लदे कारवाँमें तेरा दम घुटता है
इन प्यारी भयानक तस्वीरोंकी आँखोंमें आँखें डाल कभी
यह सब निष्फल सुन्दर सपनोंका मुँह भँभोड़कर रख देंगी
तेरी स्तब्ध निर्जीव कल्पनाको झंझोड़कर रख देंगी
यह जिन्दा मौत ऐ काश चूम ले तेरी अचेत कल्पनाको
इस चुम्बनके अमृतसे वह जुग-जुगको अमर हो जायगी
तू शीर्षकको ढूँढ रहा है शीर्षक तुझको ढूँढ रहे हैं
वह देख, अनेक विषय, लाखों शीर्षक हैं तुझको घेरे हुए
कविताके शीर्षक और विषय तो ठटके ठट हैं लगे हुए
इस दुनियासे आँखें तो मिला क्या शीर्षकका है काल यहाँ
दुनियाको लगा ले छातीसे फिर देख विषय और शीर्षक सब
फट पड़ेंगे तुझपर जैसे यौवन जीवनपर फट पड़ता है
जैसे एक दहके अग्निकुंडसे लाखों शोले भड़क उठते हैं
या जैसे पर्वत शिखरोंपर मतवाली घटायें उठती हैं
जैसे पर्दोंको छूते ही अनगिनत साज बज उठते हैं
जैसे मौसमके बदलते ही सोये बन-उपवन जाग उठें
या रन पड़ते ही उबल पड़ें लाखों म्यानोंसे तलवारें
जैसे जनतामें इन्क़लाब आते ही जान पड़ जाती है
या जैसे ज्वालामुखी नींव पूरी लेकर फट पड़ता है
विषय और शीर्षक तो निश दिन बरस रहे हैं
देख अनगिनत छातियोंसे वो धुआँ उठता है
इसी धुएँके बादलसे बिजली और पानी
बनकर शीर्षक टूट रहे हैं, बरस रहे हैं
आँखें चकाचौंध हो जाती हैं विचारकी

कवि; इस बरखासे विवेकका रोम-रोम भीग उठता है
हर्ष और विस्मयके छक्के छूट जाते हैं
स्तब्ध कल्पना देखके झंझावात थरथरा उठती है
पाँव उखड़ जाते हैं कवि इस जल प्लावनमें
इस जीवन बलिदान भूमिको छू ले
देख आँख भरकर धरतीको
लाखों शीर्षक ख़ाक और ख़ूनमें लोट रहे हैं
देख स्यापा छाया हुआ है, कितना भयानक सन्नाटा है
घुले-घुले तारे हैं, संध्या धुआँ-धुआँ है
धैर्य-धर्मके मुँहपै हावई छूट रही है
मृत्यु और जीवनकी उफ़ यह कानाफूसी
उफ़ संकेत असंख्य मूक कम्पित अधरोंके
जीवनकी अनगिनत पुकारें कंठरुद्ध हैं
लाखों शीर्षक तुझको आज क़सम देते हैं
लाखों शीर्षक तुझसे वाणी माँग रहे हैं
तुझसे अपनी रामकहानी माँग रहे हैं
इन्हीं शीर्षकोंसे दुनियाको अमर गान दे
इन्हें सजीव सुकविताका अमरत्व दान दे

[२]

पूरे महाभारतसे कई गुना बढ़कर था
कई गुना भीषण था, लाखों गुना महत्वपूर्ण था
वह घोर भयंकर महायुद्ध जो चार महाद्वीपोंमें
छ वर्षों तक अंगारे बरसाता हुआ समाप्त हुआ
देश-देशमें, द्वीप-द्वीपमें मौतकी देवी नाच रही थी
हिटलरने अनगिनत सैनिकोंको इस रणमें झोंक दिया था

रूसपर हल्ला बोल दिया था
सबसे प्रबल शक्ति
दुनियाकी सबसे ज़बरदस्त सेना
रूसपर टूट पड़ी थी
रूस अमर हो गया इस अग्निपरीक्षामें पड़कर
लाल सेनासे टकराकर
आग और लोहेकी बढ़ती हुई चटानें
टूक-टूक हो गईं
कितने भीष्म पितामह, कर्ण, भीम, अर्जुन, अभिमन्यु
कितने द्रोनाचार्य, युधिष्ठिर, अश्वस्थामा
कितने राम, लक्ष्मण, अंगद, हनुमान, दुर्योधन
कितने पृथ्वीराज, ग़ज़नवी, कितने बाबर, कितने साँगा
कितने रानाप्रताप कितने शिवाजी, कितने गोबिन्दसिंह
कितने टीपू कितने श्रृंगापटम
कितने महोबा कितने पानीपत कितने छत्तीसगढ़
कितनी हल्दीघाटियाँ, कितने चित्तौड़, कितने भरतपुर
कितने जिलियाँवाले,
धूलमें, धुएँमें, धाँय-धाँयमें, धमाकोंमें उड़ गये
युग-युगके लिये
कृत-कृत्य हो गए
अपना रक्तामृत पीकर
अमर हो गए
एक स्टालिनग्राड नगरके कुरु-क्षेत्रमें
काम आ गये
जीवनके इस यज्ञमें प्राणोंकी आहुति दे दी
हर रूसी महिला दुर्गा बन गई

रूसने रहती दुनियाको छत्तीस कोटि हाथोंसे
बचा लिया
कच लोहियाकी हर हंसिया
गांडीव धनुष बन गई
हथौड़े
बज्र बन गए
कारखानोंके पहिये
लाखों चक्र सुदर्शन बनकर टूट पड़े
मास्कोसे बर्लिन तक
नाज़ी सेनाको चीर गये
भगदड़ मच गई
रूसको खड़े-खड़े बेलाग चबा जानेवालोंके
दाँत खट्टे हो गये
लाल सेनाने
जंगका पासा पलट दिया
बर्लिनपर धावा बोल दिया
राइचस्टागपर हँसिया और हथौड़ा लहरा उठे
जीवनके अनमोल मान मिटनेसे
बाल-बाल बच गये
यह संग्राम
देवदनुज संग्राम
से कई गुणा बढ़कर था
रूसकी पुण्यभूमि
लहक उठी धहक उठी
लाखों कुरुक्षेत्रोंसे अधिक दमक उठी
दिव्य दृष्टि रखता हुआ कोई आँखवाला यदि

संजयके समान इस विराट महाभारतको
इस महाकाव्यको जो उसके देखते हुआ
अमरवाणी दे देता लोक लोकान्तरमें
झंकृत कर देता
अन्धे धृतराष्ट्रोंकी आँखें खोल देता
और तू अभी तक
शीर्षकको झींकता है
कितने वाल्मिकोंको, कितने वेदव्यासोंको
कितने होमरोंको, कितने पिंडारोंको, कितने पीट्रार्कोंको
कितने वर्जिलोंको, कितने पुश्किनोंको, कितने शेक्सपियरोंको
कितने कालिदासोंको, कितने भवभूतियोंको, कितने फ़िरदौसियोंको
कितने मिल्टनोंको, कितने अनीसोंको, कितने टाल्सटायोंको
असंख्य महाकाव्योंकी अनन्त रचनाओंकी अनगिनत कृतियोंकी
सामग्री यह घटना दे गई, ख़जाने लुटा गई
और सुन
अमेरिका इंग्लैंड तमाशा देख रहे थे दूर खड़े
रूसको जलते हुए ख़ुशीसे देख रहे थे
कभी-कभी दो हलके हाथ चला देते थे
पाँच सवारोंमें जिससे गिनती हो जाये
लहू लगाकर यह भी शहीदोंमें मिल जाएँ
दूसरा मोर्चा अब खुलता है तब खुलता है
सोचा यह था
रूस और जर्मन संग्राम
दो साँपोंकी लड़ाई है
दोनों मर जाएँ तो अच्छा
साँप मरे लाठी भी न टूटे

और
जली फुँकी दुःखकी मारी दुनियासे
साम्यवादका, उन्नतिका, मजदूर राज्यका
नाम मिट जाए
फिरसे अपना साम्राज्य क़ायम हो
और ग़ुलाम बना लें दुनियाको फिर
फिर तो चाँदी है
फिर तो पाँचों घीमें हैं
ऐसा हो जाए, फिर तो अपने पवबारे हैं
दुनियाकी क़िस्मतके वारे-न्यारे हैं
यह अन्तरराष्ट्रीय विश्वासघात
यह विश्व विद्रोह
यह चर्चिलकी राक्षस नीति
यह पैशाचिक कूट नीति
ठीक है
हिटलर, टोजो, मुसोलिनी, फ्रेंको, चर्चिल, च्यांग काई शेक
बड़े-बड़े पूँजीवादी देशोंका शासक वर्ग
और अन्य देशोंके भी छुटभइये शासक
सब आपसमें घने मित्र भी तो थे
ये सब एक ही थैलीके चट्टे-बट्टे थे
आपसमें गहरी छनती थी
कुछ तो वह करते अदा दोस्तीका हक़
लाल फ़ौज जब बर्लिनके समीप पहुँची है
ट्रूमैन चर्चिल रुद्ध कंठसे बोल उठे हैं
"रहा एक दिन अवधि अधारा।
सोचत मन दुख भयो अपारा॥" (तुलसीदास)

हिटलरसे थी अब यही प्रार्थना उनकी
"दयानिधि अवगुण चित न धरो" (सूरदास)
सब पूँजीवादी रोते थे यह कहकर
हम मिट गये मनकी द्विविधामें
हम लुट गये राम खुदैयामें
"मोरा हीरा हेराय गयो कचरामें" (कबीर)
"केकर मानों बात कोठरियामें दुइ जने बोलें"[1] (कबीर)
हिटलर कहता था
"मैंने देखी जगकी रीति मीत सब झूठे पड़ गये"
रूसकी शक्ति देखकर
मुँह बिसूर कर
बचे बचाये पूँजीवादी देश लगे सब कहने
"रमैया तोरी दुल्हन लूटे बजार" (कबीर)
रूससे कैसी सच्ची मैत्री की थी
"मन न रँगायो रँगायो जोगी कपड़ा" (कबीर)
अब अपना वह रूप देखकर शरमाते हैं
अब अपने आपसे आँखें चार नहीं होती हैं
"मुखड़ा क्या देखे दर्पनमें जब दया धरम नहीं तनमें" (कबीर)
अब फिर हिटलरकी याद बहुत है आती
अब मरे हुए हिटलरसे सब कहते हैं
"हम मूरख खल कामी तुम सबके स्वामी" (संगीत रत्न प्रकाश)
रूसकी शक्ति देखकर अब इन सबको
ख़ुदा याद आ जाता है, सब गा उठते हैं
"दुख हरो द्वारिकानाथ शरण मैं तेरी

---

[1]पूँजीवादी राष्ट्रोंके परस्पर हित संघर्षकी ओर संकेत है। अर्थात् रूसका अब दुनियामें बोलबाला है

बिन काज आज महराज लाज गई मेरी" (लोकगीत)
कवि यह सब हो गया तेरी आँखोंके आगे
अब तक तेरी कला कल्पना सोई हुई है
तेरा हृदय अभी तक सपने देख रहा है
और स्वप्नवत् अब तक शीर्षक ढूँढ रहा है
बात यह है कवि
कि तू खा गया अफ़ीम
पिनकमें तू करता है अकाशकी सैर
नक्की सुरमें न जाने तू क्या देखकर
बड़बड़ाता है तू गुनगुनाता है तू
स्वप्नमें यह समझता है तू काव्य संगीतकी निधि तुझे मिल गई है
ख़ज़ाना बड़ा कोई हाथ आ गया है
मगर जान ले तेरी सब माथा पच्ची
तेरी छायावाद और ध्वनियाँ निराली
तेरे ताल सम तेरे सरगम
तेरी गिटकरी और तेरे अलाप
तेरे गत तेरे स्वर
ये सब राग और रागिनी
यह सब ता ता थैया
पूँजीवादी प्रथाकी हैं खट्टी डकारें
तेरी छायावाद और सौंदर्य पूजा
क्षय रोग है जिससे बचना है मुश्किल
तेरे गीतोंकी विषम मधुरता
कलोरोफ़ार्मकी कुछ घोंकियाँ हैं, धुआँ हैं
काव्य संगीतके इन रुपहली ख़ज़ानोंको पाकर
तू सपनेमें अपनेको क्या जाने क्या जान बैठा, क्या मान बैठा

यह न समझा
कि सपनेमें धन पाके धनवान होता नहीं कोई[१] .
इसीसे तो कुछ चौंककर अब तुझे यह पता चल रहा है
कि दिवालियेका दिवालिया रह गया तू
इसीसे तो अब शीर्षक ढूँढ़ता है, विषय ढूँढ़ता है

(३)

बातसे बात निकलती है कवि
तू रूमानियासे परिचित है
तू हंगरीसे परिचित है
बल्गार देशका नाम सुना है
और चेकोस्लोवाक जातिकी तुझको खबर है
पोल जातिका हाल सुना है
अल्बानियाका नाम सुना है
इन देशोंने युग युगान्तरके सब पाप काट डाले हैं
नई सभ्यताकी खेती लहलहा रही है
इन देशोंमें जीवन सागर ठाठें मार रहा है
इन देशोंकी धरती सोना उगल रही है
रूस और इन देशोंके काँधेसे काँधे मिले हुए हैं
सब मिलकर आगे बढ़ते हैं
क़दम मारता आगे बढ़ता हुआ कारवाँ
कई घाटियोंके मोड़ोंसे गुजर रहा है
और मंज़िलें धूल समान उड़ी जाती हैं
इन देशोंमें
पूँजीवादी विषम प्रथाकी रात

---

[१]कबिरा गर्व न कीजिये सपनेमें धन पाय (कबीर)

कट चुकी
इन देशोंके
नवजीवनकी कम्पित क्षितिज देख कवि !
वह स्वर्णिम पौ फूट रही है
साम्यवादका सूर्य उदय होता है
जीवनका मुखड़ा दमक उठा है
कितने शीर्षक लेगा तू !

(४)

कभी कभार कदाचित् समाचार पत्रोंपर
कवि तेरी नजर पड़ जाती होगी
जीवनसे ऐसा असहयोग भी क्या कवि
कि जो कुछ धरतीपर होता है
जो कुछ मानवपर गुजर रही है
उससे नितान्त अनभिज्ञ रहे
खैर जाने दे
कवि तूने सुना नहीं
चीनके लोगोंने
जिनकी संख्या है आधा अरब,---
तू तो जैसे कुछ ऊब जाय, उकता उठे,
क्या संख्याओं अंकोंसे घबराता है तू
लेकिन देख इधर
एक सुसंस्कृत और सुशिक्षित प्राणीका यह लक्षण है
कि उसे आंकड़े करें प्रभावित
शून्य कल्पना ही वाले
संख्याओंसे घबरा जाते हैं

झूठा आदर्शवाद ही
संख्याओं अंकोंको कह देता है माया——,——
हाँ तो आधे अरब चीनवालोंने
(जिनकी संख्या है इतनी
कि संसार भरकी सब जातियोंमें
किसी जातिकी इतनी संख्या नहीं है)
अपनी दुनिया बदल दी, काया पलट दी
जनम-जनमका पाप काटकर
जनम-जनमके लिये रख दिया
उनके इस महाकार्यने
कई महाभारतकी
सामग्री कवियोंको दे दी
तू शीर्षक ढूंढे जा

(५)

बर्मामें, मलायामें, कोरियामें
हिन्द-चीनमें
तू इतने नामोंसे घबरा न उठा हो?
भूगोल और काव्यमें अति घनिष्ट नाता है
धरतीका संगीत अमर होता है
आकाशोंके गीत हवामें उड़ जाते हैं
शून्यमें लय हो जाते हैं
हाँ तो आज कई देशोंमें भू मंडलपर
पूँजीवाद और साम्यवादमें
मृत्यु और जीवनके बीच
मल्लयुद्ध हो रहा है
और तू सो रहा है

शीर्षकको रो रहा है
कल्पित मिथ्यामें
शून्यमें अपनेको खो रहा है
आज तेरी जीभपर
फ़ालिज गिर पड़ा है
कवि किस संकोचने
होंठ सी दिये हैं तेरे
तेरी कल्पनाका आज
मुँह बँध गया हो जैसे
यह तो वह युग है कवि
जिसके संकेतसे
"पंगु चढ़ैं, गिरवर गहन मूक होंहि बाचाल" (तुलसी)

(६)

दूर न जा कवि
फिर भारतपर एक नज़र कर
भारतमें जो सच्ची झूठी आज़ादी है
साफ़ रूसके बलिदानोंका फलस्वरूप है
कितनोंने इसको सोचा है
कि रूस यदि मिट जाता तो
रूस हार जाता तो
दुनियाका, भारतका
हाल क्या होता आज
रूस मर जाता तो
दुनियामें जीता कौन
भारतकी यह बुरी भली आज़ादी

नामकी आज़ादी है
कामकी नहीं
डालर साम्राज्य और स्टर्लिंग साम्राज्यकी
ठंडी सुहानी विषम छत्र छायामें
सेठोंका राज है
राज है चोर बाज़ारियोंका
रिश्वतका राज है
भूखका राज है
रोगका राज है
राज है बेकारीका
बेरोज़गारीका
दमनका राज है
मौतका राज है
कितनी उदासी है
वातावरणकी साँसें रुकी हुई हैं
धुआँ घुट रहा है
पूँजीवाद अब उल्टी साँसें लेता है
पूँजीवादी प्रथासे
पूँजीवादी शासनसे
रन पड़ चुका है
चुनौती पहुँच चुकी है
बेड़ियाँ, गोलियाँ, फाँसियाँ बिफरी हुई जनतापर
लाठियोंकी बौछारें
संगीनोंकी मारें हैं
युद्ध छिड़ चुका है
ऐसेमें कवि तूने

मुँहमें घुंघनियाँ डाल रखी हैं
ऐसेमें तुझको
चुप लग गई है
चुप रहते-रहते
छाले नहीं पड़ गये
तेरी ज़बानमें
आखें बन्द रखते-रखते
चिपक नहीं गई पलक-पलकसे
चेत कवि, मनकी ज्योति जगा ले
जनता अधीर हो उठी है बिफर उठी है
कोई इस शासनसे
खुश नहीं है
भरोसा उठ गया है
शासकों और नेताओंपरसे
चारों ओर
चिनगारियाँ देशमें उड़ रही हैं
लुटी, भूखी, नंगी, सताई हुई
जनताकी साँसोंसे
बारूदकी बू आ रही है
जीवन स्थिर नहीं है, शिथिल नहीं है
यही तो समय है ललकारनेका
एक रातकी सौ रातें हैं एक बातके सौ अफ़साने
क्यों तेरी छाती ज्वालामुखी बनके फट नहीं पड़ती
तेरा गला पड़ गया है
गांडीवकी टंकार नहीं है तेरे स्वरोंमें
तेरी क़लमकी शक्ति बाण बनकर क्यों नहीं चलती

समय बीत जाता है बात रह जाती है कवि
मुहर तोड़ अपने होठोंकी
ऐ सजीव ज्वालामुखी
फट जा
और जनता द्रोही, जनता घातक
शक्तियोंपर
अपनी वाणीकी पिघली आग बरसा दे
जीवन बरसा दे
आँसू बरसा दे
हलाहल बरसा दे
लावा बरसा दे
अमृत बरसा दे
युगके तेवर देख
भारतके ललाटपर
प्रलयके चिन्ह देख कवि !
छन्दके तांडवका कवि
यही समय है
देशको क्रान्तिकारी स्वरोंकी अग्नि वृष्टिमें
नहला दे
साम्यवादका सूर्य उदय हो
भारतकी काया पलट जाय
अब महाक्रान्तिसे

कवि क्या कर देता है

बात है सन् १९४२ की। उन दिनों हिन्दीके कुछ मशहूर कवियोंकी कविताओंपर मैंने तीव्र और कटु आलोचनाएँ लिखी थीं। उस ज़मानेमें बहुतसी हिन्दी कविताएँ पढ़नेसे जो मुझे असंतोष हुआ था और सुन्दर हिन्दी शैलीकी जो रूप रेखा मेरी चेतनामें प्रतिविम्बित हुई थी उसके फलस्वरूप इस कविताकी रचना हो गई। इस कवितामें मैंने यह प्रयास किया है कि अपूर्ण क्रियाएँ न आने पाएँ। वाक्योंकी बनावट या साँचा या ढचर और शब्द क्रम सब स्वाभाविक हों। पंक्तियोंमें झोल न आने पाये और ऐसे तत्सम शब्द न आने पाएँ जो हिन्दीमें खलें या अनुपयुक्त हों। कविताकी शैलीमें सुगमता और प्रवाह गद्यसे भी अधिक होना चाहिए ताकि सुनते ही या पढ़ते ही पंक्तियाँ दिलमें उतर जायें और ज़बानोंपर चढ़ जायें। सरलता, सुगमता और स्वाभाविकताके साथ इसका भी ध्यान रहना चाहिये कि पंक्तियाँ ठस्स और सिलपट न हों और वाक्योंमें भदेसपन न आने पाये। शैलीके इन्हीं आदर्शोंसे प्रेरित होकर मैंने इस कविताकी रचना की है। मेरी उपरोक्त समालोचनाओं और इस कविताके छपनेपर बड़ी ले दे मची थी।

बोलचालके सुन्दर शब्दोंमें हैं जादू भरे हुए
इनमें लिखना आ जाय तो यश वैभव हैं धरे हुए
पूरी शुद्ध क्रियायें लिखिये, शब्दोंका क्रम रखिये ठीक
सरल, सरस, स्वाभाविक शैली क्या है, उसे परखिये ठीक
तत्सम् और असाधारण शब्दोंको लायें कहीं कहीं
अधिक प्रयोग जटिल भाषाका सफल काव्यमें कहीं नहीं
आप संस्कृत नहीं जानते मुझको तो ऐसा ही दिखाय
सुना नहीं क्या आपने कविजी आधी गगरी छलकत जाय

सुन्दर तद्भव शब्दोंसे यदि आप सजाते अपना राग
निस्सन्देह आपके हाथों खुल जाते भारतके भाग
किन्तु आपकी शैली ऐसी जिसकी महिमा कही न जाय
इस शैलीके फूहड़पनपर हँसी आय या रोना आय
अमृतस्वर बरसा दे हिन्दी, छिड़े देसमें ऐसी तान
छोटे बड़े मातृभाषापर करने लगें उचित अभिमान

× × ×

जगमगायँ भाषाके हीरे यों खरादपर चढ़े हुए
जैसे थरथरायँ रह रहकर तरल नगीने जड़े हुए
हँसी और आँसूमें डूबे ऐसे मधुर बोल फूटें
रात गये आकाशसे जैसे रह रहकर तारे टूटें
रचे हुए छन्दोंकी छाती जगमग जगमग यों झलके
जैसे बिल्लौरी प्यालेसे पिघली हुई आग छलके
अंधकारके उरमें कविकी जलती साँसें दिये जलायें
कविकी हल्की नर्म फूंकसे रवि शशिके दीपक बुझ जायें
कविका उमड़ा हुआ हृदय है या हैं दलके दल बादल
इन्हीं घटाओंके परदेमें हैं अनगिनित सूर्य-मंडल
देख, थरथरीसी कुछ है तारोंमें कविकी बानीसे
दुनियाकी क़िस्मत पलटा लेती है नई कहानीसे
कविके कम्पित स्वरमें जीवनका चमकीला पहलू है
शब्दोंकी अनुपम गति है या कोई चलता जादू है
पंच-भूतसे बनी सृष्टिको कविकी बोली यों चमकाय
जिसके आगे देवलोकका भी प्रकाश फीका पड़ जाय
वात्सल्य, कविकी बानीमें दिव्य रूप धारण कर ले
अपने ही बिछुड़े बच्चेसे गोद जगत माता भर ले

कविता वह है जो यथार्थको नये ढंगसे विदित करे
जीवनके जाने पहचाने रूप दिखाकर चकित करे
सीधे सादे शब्दोंमें जीवनका भेद बताता है
बात सामनेकी कहकर कवि दूरकी कौड़ी लाता है
कवितामें यह जीवन नाटक ऐसा साफ़ दिखाई दे
शुद्ध ज्ञान आशीर्वाद दे अनुपम स्वत्र बधाई दे
ऊषा अँगड़ाई लेकर उठती है कविके गानोंमें
बिरहिनकी छातीसी पौ फटती है तरल तरानोंमें
लाल किरण फूटी आशाकी, चली समीर, छटी बदली
इधर पुकार लगाई कविने और उधर दुनिया बदली
अचल पहाड़ बहें तिनके बनकर कविताके धारेपर
उदधि किनारेसे हट जाये कविके एक इशारेपर
फूलोंको शूलोंसे भर दे काँटोंसे वह फूल खिलाय
भँवर डाल दे चढ़ी नदीमें तो उल्टी गंगा बह जाय
कवि वह जो मुँह बिना बिगाड़े जीवनके सब रस चख ले
स्वर्ग नरक संसार सभीको हँस-हँसके उरमें रख ले
कविके दुखते दिलमें करवट लेता है जीवन इतिहास
कविके ढलते अश्रु-बिन्दुसे बुझती है जीवनकी प्यास
कौन हँसे इस दिलसे जगमें, ऐसे दिलसे रोये कौन
जीवनको जीवनके रसमें कविके सिवा डबोये कौन
जगके हर्ष विषाद चमककर कविके हर्ष विषाद बने
अपनी बोली जिसको सुनना हो वह कविके बोल सुने
फूटा कंठ मूक मानवका, कविने प्रथम गान गाये
गूँगेका सपना था जीवन, समझ समझकर पछताये
मर्से भोगती हैं जीवनकी कविकी मादक बानीसे
शाम जवानीकी होने लगती है इसी कहानीसे

मौतसे बाज़ी बदकर सोये सपनोंमें दुख सुख खोये
अट्टहाससे गगन हिला दे या दरिया दरिया रोये
छन्द-श्वाससे दबी हुई चोटें भी उभर उभर आईं
कविका आर्तनाद सुनकर जीवनकी आँखें भर आईं
पौ फटनेसे पहले कविने जीवन गाथा दुहराई
धरतीने करवट बदली, नभ-मंडलने ली अँगड़ाई
देख धुँधलकेमें वह बिखरे तारोंकी जंजीर हिली
उधर क्षितिजके हाथोंको ऊषाकी झिलमिल कोर मिली
जीवन-उपवनमें है कविता शीत, समीर, तपन, ठंडक
षट्-ऋतु, धूप, छाँह, आँधी, घनघोर घटा, तम और चमक
कवि होके उकसानेसे जीवनकी नाड़ी चलती है
कविताके आँचल ही से दुनियाकी हवा बदलती है
चलती हैं उनचास बयारें कविके एक इशारेपर
क्या मजाल कविकी इच्छाके बिना हवा भी मारे पर
कवितामें रस हो, जस हो, सौंदर्य छटाकी छल बल हो
अमृत--हलाहल हो, तेवर हो आदि शक्तिका कसबल हो
पीड़ासे विक्षिप्त हृदयमें करता है जीवन विश्राम
दिव्य, अलौकिक, सुखद शान्तिमें पलता है जीवन-संग्राम
कोई कविसे यह पूछे क्या कविता करना फलता है
ख़ून थूकता है रह रहकर कवि या लाल उगलता है
कवितामें शिवके विष पीनेकी मिलती है दिव्य झलक
नर्म झुकाव अँखड़ियोंका, बलखाई भवोंकी नर्म लचक
शक्ति बान जीवनका खाकर वह कविका मूर्छित होना
कल्पवृक्ष जिनसे उगता है ख़ूनके वो आँसू बोना
कवितामें कितने प्रलयोंका दृश्य दिखाई देता है
छम छम छम छम छम छम शिवका नृत्य सुनाई देता है

ख़ून भरी तलवारोंमें कविने देखा है जीवन-वेष
मौतके मुँहसे भी दीवाना सुनता है जीवन-सन्देश
कवि था जिसने इस दुनियाकी तेज़ हवामें दिये जलाय
ऐसी तेज़ हवा जिसमें रवि-दीपककी भी लौ बुझ जाय
युग युगान्तर लय हो जायें अगर जागनेपर आये
आँख झपक जाये कविकी तो ब्रह्माका दिन ढल जाये
सूर्य चन्द्र तारे हैं या कविकी छातीके छाले हैं
अपने दग्ध हृदयसे कविने क्या क्या गेंद उछाले हैं
जीवनमें कविके स्वरसे उठती है यह कैसी झनकार
अमृतमें डूबी लय है या विषमें बुझी हुई तलवार
उफ़ कविका उर ! कितने युग प्रति क्षण आते हैं काम यहीं
होता है आरंभ कालसे देव-दनुज संग्राम यहीं
देवलोकका मृत्युलोकसे खेल यहीं पर होता है
निगुन सगुनकी सीमाओंका मेल यहीं पर होता है
बुद्धिवाद, अध्यात्मवाद, सब कर्म धर्म, दर्शन विज्ञान
कविकी आँखें पड़ते ही पा जाते हैं जीवन वरदान
कविसे जनता, जनतासे कवि विमुख अगर होने पाये
लोक-संगठन, ज्ञान, सभ्यता लोप सभीका हो जाये
कविकी कम्पित लयमें सोया नवजीवन करवट बदल
क्रान्ति और विश्रान्तिसे मिलकर जहाँ एक ही ध्वनि निकले
आदि पथिक मानवको दुर्लभ था जीवनमें मिलना ठाँव
कोस कड़े थे, मँडलाई सरपर कविताकी सुरभित छाँव
कविताकी ध्वनिमें जीवनकी चाप सुनाई देती है
हाथों हाथ थके मानवको यह बोली ले लेती है
मानव जीवनमें कवि जाने क्या जादू कर देता है
अनुपम सुख धर देता है या नई कसक भर देता है

देश कालके दर्पणमें दुख सुखकी ऐसी झलक दिखाये
भीगे फूल गिरें धरतीपर यदि कवि अंगरे-बरसाये
जीवन-दीप-शिखाओंको कविताएँ यों उकसाती हैं
नभमंडलकी अगिनित आँखें झपक झपकसी जाती हैं
सृष्टि सजीव अनन्त कल्पनासे बलपर बल खाती है
कविता होकी चन्द्र किरणसे यह नदी लहराती है
ठाठें मार रहा है जीवन-सागर चढ़ता पानी है
कविकी लय है या दुनियाकी उबली हुई जवानी है
किस बिरतेपर तत्ता पानी किस बलपर कोई इतराय
यदि दुनियाको कवि न हँसाये यदि दुनियाको कवि न रुलाय
मानवने मानवताका कुछ तत्त्व उसीसे जाना है
दुनियाने कविकी बानीमें अपनेको पहचाना है
जो थे शत्रु संगठित जीवनके उनका दल टूट गया
तमकी प्रबल शक्तियोंका दिल बैठ गया, जी छूट गया
आँखों आँखोंमें तोला है बन्दी जीवनका चिर भार
बातों बातोंमें खोला है कविने नये स्वर्गका द्वार
जिन आँखोंको कण कणमें संसार दिखाई देता है
जिन आँखोंको जल-कण अपरम्पार दिखा देता है
कविकी वह आँखें अनन्तको दृष्टिकोणमें रखती हैं
उड़ती हुई निगाहोंसे जीवनके तत्त्व परखती हैं
हदें सान्तकी तोड़ रही है, वह बहार हो या पतझड़
उर अनन्तका फोड़ रही है निर्बल तृणकी पतली जड़[1]
दृष्टि झुकी तो आँखोंके तिलमें जीवनके भेद मिले
दृष्टि उठी तो नीलाम्बरपर सूर्य चन्द्रके कलस हिले

---

[1] "Every grass-blade strikes its roots into Eternity"—*Sir W. Watson.*

धुआँ धुआँसी जीवन सन्ध्या वातावरण उदास उदास
ऐसेमें कविके आँसू हैं छटके तारोंका मृदु हास
बस इतनी थी देर प्रकृतिकी आँखसे कविकी आँख मिले
बादल गरजा, बिजली चमकी, कोयल बोली, फूल खिले
जो डरते हैं जीवनसे अवलंबन ढूँढें और कहीं
जीते मुर्देको काँधा देना कविताका काम नहीं
जीवनका निज रूप दिखायें, इसके कहाँ क़रीने हैं
औरोंके दिल और आँखें तो टट्टीके आइने हैं[१]
जिन्हें लालसा है जीवनकी साफ़ साफ़ दर्शन पा लें
वह कविके दिलमें दिल डालें, आँखोंमें आँखें डालें
परिचित जीवनका वैचित्र्य दिखाना सबका काम नहीं
सरल और अद्भुतकी हदें मिलाना सबका काम नहीं
कविके बाद सुनाई देगा जीवनका यह साज़ कहाँ
यही शोर होंगे लेकिन वह दर्द भरी आवाज़ कहाँ
कविका गान रुका, घायल मानवका धीरज छूट गया
ऐसी करवट ली रोगी ने टाँका टाँका टूट गया
मानवताके मुखपर अब तक गत पशुताकी झाँई है
बीते हुए युगोंकी अब तक जीवनपर परछाँई है
मानवताको पाक आँसुओंसे धोकर चमकाता है
दबी हुई आँखोंसे बर्बरताको दिव्य बनाता है
शब्दोंका यह खेल नहीं है, कुछ समझो कविता क्या है
साँस सकल विद्याओंकी विज्ञानके मुखकी आभा है[२]

---

[१]बहुत सस्ते और घटिया आईनेको जिसका शीशा काग़ज़ी होता है टट्टीका आईना कहते हैं [२]Poetry is the breath and finer spirit of all knowledge; it is the impassioned expression in the countenance of all science—*Wordsworth*

मायाकी तो हस्ती क्या थी खाकर चोट अधीर गई
कई बार तो आदि सत्यकी कविकी बानी चीर गई
हर एक युगके आदर्शोंके मापदंड हैं कविके बोल
ऐसी हवा सनकती है जीवन देता है परचम खोल
पृथ्वी टकराये नभसे कविता-धारा यदि अड़ जाये
साथ कल्पनाका दे तो बिजलीकी साँस उखड़ जाये
मानवताको क्या सूझी जो ऐसा तीर चला बैठी
कविसे जीवन-दान मिला तो मौतसे आँख लड़ा बैठी
गाये जा हे कवि कबतक दुनियाके भाग्य रहेंगे वक्र
जाग उठेगा इस बानीमें मानवका कुंडलिनी चक्र
हे कवि, दुनिया बदल रही है, जीवनगान सुनाये जा
नव विधानकी पौ फटती है, गाये जा, हाँ, गाये जा

तराना

यह तराना भाव और विचारके अतिरिक्त छन्दकी विलक्षणताके लिये ध्यान देने योग्य है। इसमें छन्द सम्बन्धी जो प्रयोग किया गया है उससे शब्दों और स्वरोंकी एक ख़ास लहर पैदा होती है और एक ऐसा संगीत उभरता है जिसे इन पंक्तियोंको गुनगुनाकर ही समझा जा सकता है। इस तरानेको ग़ज़लका एक रूपान्तर समझना चाहिये। हर लम्बी पंक्ति बीच बीचमें कई लहरें उठाती है, जो पंक्तिके अन्तमें समाप्त होकर अपनी अन्तिम लहरको एक छोटी पंक्तिके रूपमें दोहराकर समाप्त होती है।

आँखोंसे छलके शराब रे साक़ी, आँखोंसे छलके शराब,
आँखोंसे छलके शराब जादू कैफ़े शबाब
जादू कैफ़े शबाब रे साक़ी जादू कैफ़े शबाब

जलवये शीशा ओ जाम झमाझम, मौजे-मए-गुलफ़ाम[1] चमाचम
क़ामते-साक़ी बर्क़े दमादम[2] इनका कहाँ जवाब
इनका कहाँ जवाब रे साक़ी इनका कहाँ जवाब

मोजज़ा ज़ारे-रंग-ओ-निकहत[3] जलवादहे गुलज़ारे जन्नत,[4]
आइनादारे हुस्ने हक़ीक़त[5] तेरी जबींके[6] गुलाब
तेरी जबींके गुलाब रे साक़ी तेरी जबींके गुलाब

दुनिया दुनिया, आलम आलम, चश्मे ख़ुमारींका[7] कैफ़-ओ-कम,
चश्मे ख़ुमारोंका कैफ़ कम धोका अज़ाब-ओ-सवाब
धोका अज़ाब-ओ-सवाब रे साक़ी धोका अज़ाब-ओ-सवाब

---

[1]लाल शराब [2]साक़ीका बिजलीकासा चमकता शरीर
[3]रंग और सुगंधके चमत्कारोंका स्थान [4]स्वर्गकी झलक दिखानेवाला
[5]सत्यके सौन्दर्यका दर्पण [6]माथे [7]मस्त आँखों

आँच आँच है तेरी जवानी कंचन नीर अंगूरका पानी[1]
उफ़ ये तमौव्वुज[2] उफ़ ये रवानी पिघली आगशराब
पिघला बिलूरे शबाब[3] रे साक़ी पिघली आगशराब

साक़ी सीनोंमें आग लगी है कैसे बुझे यह आग रे साक़ी कैसे बुझे यह आग
बादा भी है कमयाब[4]
बादा भी है कमयाब रे साक़ी बादह भी है कमयाब

मिट मिटकर दिल सँवर गये हैं उजड़ उजड़कर नगर बसे हैं नाम हुए हैं
काम बने हैं कर दे जहाँको ख़राब
करदे जहाँको ख़राब रे साक़ी कर दे जहाँको ख़राब

हाय जवानी वाय जवानी किस बिरतेपर तत्ता पानी किस बिरतेपर तत्ता
पानी—सब अफ़साना-ओ-ख़्वाब
सब अफ़साना-ओ-ख़्वाब रे साक़ी सब अफ़साना ओ ख़्वाब

ले न उड़े मैख़ानेको मिलकर बूए-बादासे[5] पाके इशारा, बूए-बादासे
पाके इशारा-नग़मये-चंग-ओ-रबाब
नग़मये-चंग-ओ-रबाब रे साक़ी नग़मा-ओ-चंग-ओ-रबाब

दौरे-तमद्दुन लाखों बीते कब इन्सानोंको आयेगी रिन्दोंकी[6] तहज़ीब—
पीनेके आदाब[7]
पीनेके अदाब रे साक़ी पीनेके आदाब

तुझे यक़ीन आये कि न आये आँखोंमें तेरी आँखें डालके देखा जागता ख़्वाब
देखा जागता ख़्वाब रे साक़ी देखा जागता ख़्वाब

---

[1]शराब [2]हिलोरें लेना [3]बिल्लूरकी जवानी [4]दुर्लभ
[5]शराबकी गंध [6]पीनेवालों, शराबियों [7]ढंग, तरीक़े

फुटकर

पुराने हिन्दी काव्यमें कविताका केवल एक रूप और उसका केवल एक छन्द ऐसा था जिसमें दो पंक्तियाँ होती थीं और एक पूरी बात या विचारकी एक पूरी इकाई व्यक्त हो जाती थी। वह रूप और वह छन्द दोहेका था जिसमें अनेक व्रज भाषा या पुरानी हिन्दीके कवियोंने रंगारंग फूल खिलाये हैं और ऐसे सब कवियोंके आगे-आगे रहीम खानखाना, नज़र आते हैं। संस्कृतमें भी अलग-अलग श्लोकोंमें बड़ी-बड़ी बातें कह डाली गईं और यह परम्परा ऋगवेदके सूत्रोंसे चली आ रही है लेकिन खड़ी बोली हिन्दीके किसी कविने अब तक दो पंक्तियोंमें एक पूरी बात सरस, संगीत-पूर्ण, हृदयग्राही या कलात्मक रूपसे कह सकनेका सबूत नहीं दिया।

उर्दू अपने जन्म-दिन ही से एक ही छन्दमें नहीं अनेक छन्दोंमें और केवल दो पंक्तियोंमें अनेक प्रकारके सम्पूर्ण विचार व्यक्त करती आई है। उर्दू ग़ज़लका हर शेर जो दो पंक्तियोंका होता है एक सम्पूर्ण काव्य होता है जिसके द्वारा हम एक कणमें सहरा, एक बूँदमें दरिया और एक अंशमें सम्पूर्ण सत्य देख लिया करते हैं। उर्दू-प्रेमियोंको जितनी ग़ज़लें या कविताएँ याद हैं उससे कहीं अधिक लोगोंके फुटकर शेर याद हैं। हज़ारों आदमी ऐसे फुटकर शेरोंको सुनते-सुनाते और सर धुनते हैं। किसी अपरिचित कविका स्थान अगर पल भरमें निश्चित करना हो तो उससे कहिए कि वह अपने दो-चार फुटकर शेर सुनाए। फ़ौरन मालूम हो जायगा कि कवि कितने पानीमें है।

अभी बहुत ठोकरें हैं खाना, अभी बहुत चाल चूकना है
अभी बहुत गुल हैं खिलनेवाले अभी बहुत ख़ून थूकना है

आतिशे-इश्क़[1] भड़कती है हवासे पहले
होंट खुलते हैं महब्बतमें बुआसे पहले

ज़िन्दगीको कोई पैग़ामे-लबे-नाज़ तो दे
मौतकी आँख भी खुल जायगी आवाज़ तो दे

कोई कैफ़ियत ही नहीं कि अपनेको अपनी ज़िद[2] जो बनाया है
कि वह ग़म भी क्या जो हँसा न दे वह ख़ुशी भी क्या जो रुला न दे

यह नर्म नर्म हवा झिलमिला रहे हैं चराग़
तेरे ख़्यालकी ख़ुशबूसे बस रहे हैं दिमाग़

न हमसे पूछ हुस्न-ओ-इश्क़का राज़ेनिहाँ क्या है
बहुत नजदीकसे इस ज़िन्दगीको हमने देखा है

अब दौरे असमाँ है न दौरे हयात है
ऐ दर्दे-हिज्र[3] तू ही बता कितनी रात है

बीते हुए ज़माने यूँ याद आ रहे हैं
मुँह फेरकर वह जैसे कुछ मुस्करा रहे हैं

पड़ते ही आँख तुझपर जो यूँ तड़प उठा हूँ
देखा हो जैसे पहले पहचानसा गया हूँ

उदासी बेदिली आशुफ़्तहालीमें[4] कमी कब थी
हमारी ज़िन्दगी यारो हमारी ज़िन्दगी कब थी

अबद[5] भी अपनी परछाँईं अज़ल[6] भी रोशनी अपनी
मुहब्बतको कमी क्या मौत अपनी ज़िन्दगी अपनी

---

[1]इश्क़की आग [2]उलटा, विपरीत [3]विरहकी पीड़ा
[4]परेशानी [5]अनन्त [6]अनादि

हयात उनकी जो इस जिन्दगीमें मर निकले
करेगा क्या कोई आशिक़ जो काम कर निकले

किसीका यूँ तो हुआ कौन उम्रभर फिर भी
ये हुस्न-ओ-इश्क़ तो धोका है सब मगर फिर भी

दुबिधा पैदा कर दे दिलोंमें ईमानोंको दे टकराने
बात वह कर ऐ इश्क़ कि सुनकर सब क़ायल हों कोई न माने

क़फ़स¹से छुटके वतनका सुराग़ भी न मिला
वह रंगे-लाला-ओ-गुल था कि बाग़ भी न मिला

एक शबेग़म वह भी थी जिसमें नींद न आई रोये भी
एक शबे ग़म यह भी है जिसमें कुछ जागे कुछ सोये भी

थी मुन्तज़िरसी दुनिया ख़ामोश थीं फ़िज़ाएँ
आई जो याद तेरी चलने लगीं हवाएँ

हम भी कुछ हौसले निकालें
आओ तुम्हें सीनेसे लगा लें

मौत इक गीत रात गाती थी
ज़िन्दगी झूम-झूम जाती थी

छेड़ ऐ दिल यह किसी शोख़के रुख़सारोंसे
खेलना आह दहकते हुए अंगारोंसे

करनेको हैं दूर आज तो यह रोग ही जीसे
रक्खेंगे हम प्यार न तुमसे न किसीसे

---

¹पिंजड़े

अक्सर यूँ भी याद आये तुम
आँखोंमें आँसू लब पै तबस्सुम

न समझनेकी यह बातें हैं न समझानेकी
ज़िन्दगी उचटी हुई नींद है दीवानेकी

यूँ तो बाज़ी अज़लसे मार गई
ज़िन्दगी-ज़िन्दगीसे हार गई

आदमीके हाले-अबतरपर[1] फ़रिश्ते रो गये
हम ख़ुदा थे क़िस्मतोंसे टुकड़े-टुकड़े हो गये

यह दुःख यह रंज यह आज़ुर्दा हालियाँ तेरी
जो चूम-चूम न लूँ सब उदासियाँ तेरी

वह निगह राहपर नहीं आती
बात बनती नज़र नहीं आती

अब रूख क्या उगेगा जब जड़ ही कट गई
क्या आक़बत बनेगी जो दुनिया बिगड़ गई

वह आलम होता है मुझपर जब फ़िक्रे-सुख़न[2] मैं करता हूँ
ख़ुद अपने ख़यालोंको हमदम मैं हाथ लगाते डरता हूँ

पौ फटी ज्यों बिरहिनकी छाती
जागीं अब आँखें मदमाती

आ रहा है हुस्नपर तेरे शबाब
आफ़ताब आमद दलीले आफ़ताब[3]

---

[1]दुर्दशा [2]कविता करनेका विचार [3]सूर्यका उदय होना ही सूर्यके होनेकी दलील है

सोती है हकूमत तो रह जायगी वह सोती
अल्लाहकी लाठीमें आवाज नहीं होती

शाम भी थी धुआँ-धुआँ हुस्न भी था उदास-उदास
दिलको कई कहानियाँ यादसी आके रह गईं

ग़रज़ कि काट दिये ज़िन्दगीके दिन ए दोस्त
वह तेरी यादमें हों या तुझे भुलानेमें

हमसे क्या हो सका मुहब्बतमें
तुमने तो ख़ैर बेवफ़ाई की

जो ज़हरे-हलाहल है अमृत भी वही नादाँ
मालूम नहीं तुझको अन्दाज़ हैं पीनेके

इक फ़सूँ सामाँ[1] निगाहे आशनाकी[2] देर थी
इस भरी दुनियामें हम तनहा नज़र आने लगे

आलम-आलम इश्क़ भी तनहा
तनहा हुस्न भी आलम-आलम

कुछ आदमीको हैं मजबूरियाँ भी दुनियामें
अरे वो दर्दे मुहब्बत सही तो क्या मर जायें

ख़ुदाओं देवताओं और फ़रिश्तोंने तो झक मारा
मुहब्बतको मुहब्बत कर दिया मिट्टीके पुतलोंने

जहाँमें थी बस इक अफ़वाह मेरे जलवोंकी
चराग़े-दैर-ओ-हरम[3] झिलमिलाये हैं क्या-क्या

---

[1]जादू भरी [2]परिचित दृष्टि [3]मंदिर और मसजिदके दीप

हुस्नकी नर्मियोंने लौ दे दी
मुस्कराना तेरा है याद मुझे

कौन यह ले रहा है अँगड़ाई
आसमानोंको नींद आती है

आज आँखोंमें काट ले शबे-ग़म
ज़िन्दगानी पड़ी है सो लेना

सोनेवाले कमर तो सीधी हो
नींद आये न आये पाँव पसार

तेरा फ़िराक़ तो उस दिन तेरा फ़िराक़ हुआ
जब उनको प्यार किया मैंने जिनसे प्यार नहीं

ग़रज़ कि होशमें आना पड़ा मुहब्बतको
हमींको देख लो ऐ अहले-दर्द दूर न जाओ

मैं पूछता तो हूँ मगर जवाबके लिए नहीं
यह क्यों तेरी नजर फिरी यह क्यों बदल गई हवा

चाँद एक गीत रात गाता था
गुनगुनाता हो जैसे इक मुर्दा

शबे-फ़ुरक़तके[1] सन्नाटोंमें अक्सर
सदा आती है मैं तुझसे कहाँ दूर

यह ज़िन्दगीके कड़े कोस, याद आते हैं
तेरी निगाहे-करमका[2] घना घना साया

---

[1]वियोगकी रात [2]कृपा-दृष्टि

जो तेरे गेसुए-पुरख़मसे[1] खेल भी न सकीं
इन उंगलियोंसे सितारोंको छेड़ सकता हूँ

मिल आओ 'फ़िराक़'से किसी दिन
वह शख़्स अजीब आदमी है

कहाँका वस्ल तनहाईने शायद भेस बदला है
तेरे दमभरको आ जानेको हम भी क्या समझ बैठे

एक मुद्दतसे तेरी याद भी आई न हमें
और हम भूल गये हों तुझे ऐसा भी नहीं

तमाम शबनम-ओ-गुल है वह सरसे ताबक़दम[2]
रुके-रुकेसे कुछ आँसू रुकी-रुकीसी हँसी

छुटके घर आ गये तेरे क़ैदी
लेकिन अब इनको कौन पहचाने

कुछ नहीं कहतीं निगाहें मगर
बात पहुँची है कहाँसे कहाँ

मंज़िलें गर्दके मानिन्द उड़ी जाती हैं
वही अन्दाज़े-जहाने-गुज़राँ[3] है कि जो था

ज़िन्दगीको भी मुँह दिखाना है
रो चुके तेरे बेक़रार बहुत

चुप हो गये तेरे रोनेवाले
दुनियाका ख़याल आ गया है

---

[1]घुंघराले केश [2]सिरसे पाँव तक [3]गुज़रती हुई, चलती हुई दुनिया

कल फिर इश्क़ न रूठ सकेगा
आज मना ले आज मना ले

हासिले-हुस्न-ओ--इश्क़ बस इतना
आदमी-आदमीको पहचाने

क्या करें हम भी क्या करो तुम भी
आदमी आदमीका दुश्मन है

देख रफ़्तारे-इन्क़लाब 'फ़िराक़'
कितनी आहिस्ता और कितनी तेज़

अपना ग़म किस तरह बयान करूँ
आग लग जायगी ज़मानेमें

मौतका भी इलाज हो शायद
ज़िन्दगीका कोई इलाज नहीं

तुझे याद करता हूँ और सोचता हूँ
मुहब्बत है शायद तुझे भूल जाना

तू एक था मेरे अशआरमें हज़ार हुआ
इस इक चराग़से कितने चराग़ जल उट्ठे

काना फूसी है कुछ सितारोंमें
इश्क़की बात कितनी दूर गई

वो रंगे-रुख़ था उठाई है जब किसीने निगाह
शराब जैसे छलकते-छलकते रह जाये

यही तो बात नई तेरी बातचीतमें है
यही कि तेरी सदा है सुनी हुई आवाज़

मेरे नग़मोंका यह हासिल
दुनियाको सीनेसे लगा ले

मस्त-ओ-पुरकैफ़[1] बादलोंको न देख
बेख़बर तू कुचल न जाय कहीं

दिखाते हैं सितारे एक बेहतर ज़िन्दगीका ख़्वाब
न देख उनकी तरफ़ वह छीन लेंगे सब ख़ुशी तेरी

'फ़िराक़' तू ही मुसाफ़िर भी तू ही मंज़िल भी
किधर चला है मुहब्बतकी चोट खाये हुए

चार सू पुरकैफ़ उदासी आओ कुछ बातें करें
रात कितनी भी हो बाक़ी नींद पूरी हो चुकी

एक मुद्दतसे दिले-ग़मगीं पै था इक बोझसा
आज तेरी यादमें रोये तो हलके हो गये

जब जब इसे सोचा है दिल थाम लिया मैंने
इन्सानके हाथोंसे इंसानपै जो गुज़री

देख तारों भरी ये रात 'फ़िराक़'
आँसुओंका क़फ़स है दुनियापर

ज़िन्दगी क्या है इसको आज ऐ दोस्त
सोच लें और उदास हो जायँ

यह दुनिया मुझे यों नज़र आ रही है
कहीं जैसे कोई चला जा रहा हो

---

[1]मस्ती भरे

यह दुनिया वह हसीना है हसींतर हो जो हर लमहा
इसे जितना समझता हूँ मुहब्बत बढ़ती जाती है

इनको हिमाक़तोंका ठिकाना भी है कोई
दुनिया बिगाड़कर जो बनाते हैं आक़बत

टूटे न कहीं 'फ़िराक़' यह जब्त
फूटें न कहीं जबाँके छाले

कई रोज़ोंकी मुलाक़ातकी है आख़िरी शाम
वक़्त क्या चीज़ है मालूम हुआ आज हमें

तेरे लड़ने पै खुला मुझ पै तेरे इश्क़का हाल
तुझे इतनी थी मुहब्बत मुझे मालूम न था

सरे-सहराये-जहाँ रह-रहकर
कोई आवाज़सी जैसे आये

कौन खड़ा है मेरे सामने
और रोशनी और रोशनी

सूनी-सूनी विरहकी घड़ियाँ
लुट गये दिन और छिन गईं रातें

तेरा दीदार फ़िक्रे-शेरके वक़्त
आज बिगड़ी बनी बनाई बात

मैं हूँ, शाम है, तनहाई है
तुम भी जो होते अच्छा होता

उम्र 'फ़िराक़'ने यूँ ही बसर की
कुछ ग़मे दौराँ कुछ ग़मे जानाँ

ख़ुदाको अह्‌ले जहाँ जब बना चुके तो 'फ़िराक़'
पुकार उठे कि ख़ुदाने हमें बनाया है

कोई वक़्त हो कोई हंगाम हो
वह जब आयँगे रात हो जायगी

हैं लफ़्ज़-लफ़्ज़में आईना-बह्र-ओ-बर वो रमूज़[1]
ज़मींकी चोट उभरती है मेरे नग़्मोंमें

तारीकियाँ[2] चमक गईं आवाज़े दर्दसे
मेरी ग़ज़लसे रातकी ज़ुल्फ़ें सँवर गईं

ख़ुदाके सामने मेरे गुनाहगार हैं जो
उन्हींसे आँखें बराबर मेरी नहीं होतीं

आज यही दुनिया है जहन्नम
कल यही दुनिया जन्नत होगी

फिर हुए वीराने आबाद
इन्क़लाब ज़िन्दाबाद

---

[1]सागर और पृथ्वीके भेदोंका दर्पण [2]अंधकार

पुरानी उर्दू

खड़ी बोलीका सबसे प्रखर, उर्वर, ज़ोरदार और लचकदार हिस्सा उसकी क्रियाएँ हैं। हिन्दीके दूसरे रूपोंमें क्रियाओंका यह ठाठ बाट नहीं है। जहाँ तक मैं पता चला सका हूँ, हिन्दुस्तानकी शायद ही किसी भाषामें क्रियाओंका निखार, ज़ोर, लचक और क्रियाओंके इतने रूप नज़र आएँ। एक तरहसे खड़ी बोलीके विकासका इतिहास खड़ी बोलीकी क्रियाओंका इतिहास है। ये क्रियाएँ लगभग कई सौ बरसोंके अन्दर आजका रूप धार सकी हैं। दो चार मिसालें लीजिये—'हमने उनसे बातें कीं' को 'बातें करियाँ', 'वो लड़कियाँ यहाँ आईं' को 'आइयाँ' इसी तरह 'उठाईं'को 'उठाइयाँ' 'देखीं' को 'देखियाँ' 'देख लीं' को 'देख लियाँ' 'गईं' को 'जाइयाँ' करके बोलते थे। इन ग़ज़लोंमें कुछ शब्द अपने डेढ़ सौ बरस पहलेके रूपमें नज़र आएँगे। अबसे कुछ कम सौ बरस पहले 'आता है' को 'आए है' बोलते थे'

(१)

दिलकी जानिब देखकर कल देरतक ललचाइयाँ
मैंने जब देखा तो वह आँखें बहुत शरमाइयाँ
कह रहा था इश्क़की रूदादे-ग़म हँस-हँसके मैं
नाम जब आया तेरा आँखें मेरी भर आइयाँ
आप अपनेसे उलझकर रह गया मैं हमनफ़स[१]
गुत्थियाँ जज़्बे-निहाँकी[२] जब बहुत सुलझाइयाँ

---

[१]साथी [२]गुप्त भावों

लहलहा उट्ठे तुलूए-मेह्रसे जैसे फ़िज़ा
दिलमें तू आया कि गुलशनमें बहारें आइयाँ
चन्द कलियोंपर चमनमें आ चला था रंगसा
आज तेरी शोख़ियाँ अक्सर मुझे याद आइयाँ
कुछ न कुछ तो जीमें ठानी है मगर यह सोच है
वह निगाहें भी अगर सुनगुन कहीं कुछ पाइयाँ
पर्दे-पर्देमें हज़ारों वारदातें हो गईं
आह क्या क्या तीराबख़्तोंने[1] भी रातें पाइयाँ
बिजलियाँ कौंदीं, घटाएँ छा गईं, होश उड़ गये
वो शराबें नरगिसे-सरशारने छलकाइयाँ
दर्दने भी करवटें बदलीं दिलेनाकाममें
हिज्र में जब रातको ज़ुल्फ़ें ज़रा लहराइयाँ
नीम ख़्वाबी कुछ फ़िज़ाये ग़मकी गहरी हो गई
चर्ख़पर तारोंने जब पलकें ज़रा झपकाइयाँ
वजहे आग़ाज़े-मुहब्बत[2] जो हुई थीं एक दिन
आज तेरी वह अदाएँ देरतक याद आइयाँ
यूँ तो तक़दीरे मुहब्बतमें थी मर्गे-बेकसी[3]
आज सीनेमें वह आँखें देरतक पछताइयाँ
देखना है हमको इस तर्के-मुहब्बतका मआल[4]
आई हैं ख़बरें कि अहले ग़मने क़समें खाइयाँ
इस जहाने अजनबीका कुछ कुछ अन्दाज़ा मिला
दहशतें दिलकी जब इन आँखोंने कुछ दरशाइयाँ
इश्क़ सौ सौ तरह सौगन्दे-वफ़ा[5] खाता रहा
मुश्किलोंसे आज वह आँखें मगर पतियाइयाँ

---

[1]भाग्यहीनों [2]प्रेम आरम्भ होनेका कारण [3]विवशताकी मृत्यु
[4]प्रेम त्यागनेका परिणाम [5]वफ़ाकी क़सम

दास्ताने इश्क़ भी बेरब्तसी होने लगी
हुस्नको अँगड़ाइयोंपर आईं जब अँगड़ाइयाँ
हम समझते थे अब इसका याद आना है मुहाल
आज पलकोंको मगर नम और मुलायम पाइयाँ
ऐ नसीमे सुब्ह तू नमदीदा[1] गुज़री बाग़से
हाँ वह कलियाँ याद हैं जो बिन खिले मुरझाइयाँ
रोनेवालो अहतरामे-ग़म बहुत दुश्वार है
यूँ तो आँखें हैं ताज्जुब क्या अगर भर आइयाँ
लोग कहते हैं कि दुनियाका बदलना है मुहाल
इश्क़ कहता है कि इस जीनेसे तो मर जाइयाँ
देखियाँ गर कुछ यहाँ तो आँखवालोंने 'फ़िराक़'
पाइयाँ गर कुछ यहाँ तो अहले दिलने पाइयाँ

(२)

रात दिन पलकोंतले अश्कोंकी लड़ियाँ देखियाँ
जो दिखाया तेरी फ़ुरक़तने[2] वह घड़ियाँ देखियाँ
नै सबा नै साया संगीं मंज़िलें दूर आसमाँ
राहगुज़ारे-इश्क़में क्या-क्या न कड़ियाँ देखियाँ
दिल फुँके, लहराके सीनोंसे धुआँ उठने लगा
आग बरसाती हुई सावनकी झड़ियाँ देखियाँ
रस्म-ओ-रहकी बन्दिशें, तक़दीरकी पाबन्दियाँ
ज़ीस्तके[3] पाँवोंमें ज़ंजीरें जो पड़ियाँ देखियाँ
गर्द तक जिनकी न पातीं, हम नफ़स हूर-ओ-परी[4]
सूरतें क्या-क्या ज़मींमें हमने गड़ियाँ देखियाँ

---

[1]सजल नेत्रोंके साथ [2]विरह [3]जीवन [4]हूर, परी, अप्सराएँ

रश्के-जन्नत थे दिलोंके यह ख़राबे हाय-हाय
कैसी-कैसी बस्तियाँ बसकर उजड़ियाँ देखियाँ
नूरके पुतलोंकी भी धड़कोंमें होती है बसर
अंजुमनमें शमाकी साँसें उखड़ियाँ देखियाँ
चारागर भी क्या करें मजरूहे-ग़म[1] भी क्या करें
सीवनें ज़ख़्मे-नेहाँकी सब उधड़ियाँ देखियाँ
नज़रों-नज़रोंमें बदलियाँ यारकी नज़रें 'फ़िराक़'
बातों-बातोंमें बनी बातें बिगड़ियाँ देखियाँ

(३)

गेसुए नमनाक[2] फिर रातें तेरी याद आइयाँ
नर्गिसे-चालाक फिर बातें तेरी याद आइयाँ
जैसे कुछ भूले हुए से हों तेरे क़ौल-ओ-क़रार
आज दिलको बेकही बातें तेरी याद आइयाँ
मुझको तनहा जीते-जीते एक ज़माना हो गया
बाद मुद्दतके मुलाक़ातें तेरी याद आइयाँ
बह्र-ओ-बरपर रातकी परछाइयाँ पड़ने लगीं
वो खुले बाज़ों मुलाक़ातें तेरी याद आइयाँ
और सन्नाटा शबे-तारीके-ग़मका[3] बढ़ गया
जब सुकूते-हिज्रमें[4] बातें तेरी याद आइयाँ
आज कुछ खोया हुआसा था मैं ए चश्मे-सियाह
देरतक रातें तेरी बातें तेरी याद आइयाँ

---

[1]दुखके घायल [2]भीगे केश [3]दुखकी अँधेरी रात [4]विरहकी शान्ति, मौन,

कैफ़से ख़ाली घटाएँ देखकर परदेसमें
शह्रे-गोरखपूर बरसातें तेरी याद आइयाँ
क़ौले-मर्गे-नागहाँ[1] उसकी नज़रसे है 'फ़िराक़'
सब कहाँ गिनतीकी कुछ बातें तेरी याद आइयाँ

(४)

हर इशारेमें न जाने कितनी घातें पाइयाँ
नरगिसे ग़म्माज़[2] हमने तेरी बातें पाइयाँ
देखनेवालोंने तुझमें देखियाँ सद शाने-हुस्न
सोचनेवालोंने क्या-क्या तुझमें बातें पाइयाँ
बेख़बर हरगिज़ मिज़ाजोंसे नहीं दौरे-फ़लक
जो हमींसे कट सकें हमने वो रातें पाइयाँ
अब तो खुल जा हम जहाँदीदोंसे तू ए ज़िन्दगी
तेरी बातें पाइयाँ सब तेरी घातें पाइयाँ
क्या हैं बस हँसने हँसाने ही को ऐय्यामे निशात
रोने धोनेके लिये क्या ग़मकी रातें पाइयाँ
चार दिनकी ज़िन्दगीको जाविदानी[3] कर गये
मरनेवालोंने तेरे क्या-क्या हयातें पाइयाँ
ऐबकी आँखोंसे भी रहती हैं जो ओझल सदा
हुस्नकी दुज़दीदा नज़रोंने[4] वो घातें पाइयाँ
जो न थीं शाइस्तए-ग़म[5] अपनी नज़रोंमें 'फ़िराक़'
शादकामाने-ज़मानाने वो रातें पाइयाँ

---

[1]अचानक आनेवाली मौतका क़ौल [2]ग़मज़ों (कटाक्षों)से भरी आँख [3]अमर [4]चोर नज़रों [5]दुनियाके सफल और ख़ुश लोगोंने वो रातें पाईं जिन्हें ग़मने सँवारा या रचाया नहीं था

'अकबर' इलाहाबादी

सम्पादक :

डा० सैयद एजाज़ हुसेन एम० ए०, डी० लिट०

डी० सी० - १२ प्वा० - पृष्ठ लगभग २५० - आकर्षक कवर

हास्यरसावतार महाकवि अकबरने हास्य के माध्यम से और व्यंग्य की चोटोंसे देश और समाजको जगाने और सक्रिय बनानेका जो महान कार्य अपने ऊपर लिया था उनका साहित्य उनके इस ऐतिहासिक कार्य की सफलता का प्रमाण है। अकबर महान विचारक, सुधारक और भाषा के शिल्पी थे।

प्रस्तुत पुस्तकमे अकबर की जीवनी, समसामयिक परिस्थितियोंका अकबरके साहित्य पर प्रभाव, देशवासियोको अकबरकी चुनौती आदि पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही पूरे उर्दू साहित्यमे हास्य और व्यग्य की परंपरागत धारा का भी अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। अकबर के कलाम के काफ़ी नमूने पुस्तकमे उदाहरणस्वरूप संग्रहीत है।

आदि से अत तक पुस्तक पठनीय है।

केवल ढाई रुपया

महाकवि 'मीर'

सम्पादक :

डा० सैयद एजाज़ हुसेन एम० ए०, डी० लिट०

डी० सी० - १२ प्वा० - पृष्ठ लगभग २४० - आकर्षक कवर

महाकवि 'मीर' ग़ज़ल तथा अन्य काव्य रूपों के प्रणेताके रूप में प्रतिष्ठित हैं। ग़ज़लों के तो ये 'बादशाह' माने गये हैं और 'ज़ौक' और 'ग़ालिब' जैसे साहित्य धुरन्धरों ने भी इनका लोहा माना है। आजतक ग़ज़ल की शैली में जो कुछ भी कहा गया है उस पर मीर का प्रभाव स्पष्ठ है। ऊँचे से ऊँचे विचार और गंभीरतम तात्त्विक बातें सरलतम शब्दों और वाक्यों में कह डालना मीर की विशेषता थी।

मीर की आप बीती जगबीती बन गई क्योंकि उनकी करुणा में पूरे मानव समाज का सुख दुख समाया हुआ था। इसलिए उनके साहित्य में समसामयिक संघर्षों, विघटन और सामाजिक पराभव की पूर्ण अभिव्यक्ति हुई है।

प्रस्तुत पुस्तक में सामाजिक पृष्ठभूमि के अध्ययन के साथ मीर के काव्य का आलोचनात्मक अध्ययन और मूल्यांकन किया गया है।

पुस्तक निस्संदेह पठनीय और संग्रहणीय है।

लगभग ढाई रुपया

इलाहाबाद लॉ जर्नल इलाहाबाद